हिंदी

लेखिका :

आरती शर्मा

(एम०ए०, बी०एड०)

6

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

लेखिका :
आरती शर्मा (एम०ए०, बी०एड०)

हिंदी

मन की बात

हिंदी पुस्तक-शृंखला बाल मनोविज्ञान एवं क्रियाकलापों पर आधारित हिंदी भाषा को सीखने के क्रम में एक मौलिक एवं अनूठा प्रयास है। इस शृंखला का विकास विभिन्न आयु-वर्ग की विशिष्ट रुचियों और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया गया है। सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एवं समझना– इन मौलिक तथा शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति इस शृंखला में बहुत रोचक और प्रभावशाली ढंग से की गई है।

इस पुस्तक-माला का निर्माण आज की बदलती नई सोच के अनुरूप किया गया है। यह पुस्तक-माला, एन०सी०ई०आर०टी० **(NCERT)**, सी०आई०एस०सी०ई० **(CISCE)** एवं अन्य प्रांतीय शिक्षा परिषदों द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित एक शृंखला है, जो पूर्ण रूप से बच्चों की रुचि और मानसिक स्तर के अनुकूल है। इसका उद्देश्य बच्चों की कल्पनाशीलता, उनकी मौलिकता, सृजनशीलता और जिज्ञासा को बढ़ाना है।

एक ओर जहाँ मनमोहक रंग-बिरंगे चित्रों द्वारा पाठों की प्रस्तुति के साथ शब्द ज्ञान भंडार में सरलता से कठिनता की ओर क्रमिक वृद्धि की गई है, वहीं दूसरी ओर पठन कुशलताओं के विकास और सुदृढ़ीकरण के लिए सुनियोजित उद्देश्यपरक मौखिक और लिखित अभ्यास दिए गए हैं।

इस पुस्तक-माला में पाठयक्रम क्रमबद्ध तरीके से लिया गया है। रुचि वैविध्य के लिए पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं; जैसे- कविता, कहानी, पत्र, एकांकी, जीवनी, लेख, सूक्तियाँ, संवाद, चित्रकथा, निबंध-लेखन तथा संस्मरण आदि का समावेश यथास्थान किया गया है। पुस्तक माला में लिंग, वचन, कारक, समानार्थी शब्द, विपरीतार्थी शब्द, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, शब्द-युग्म आदि के साथ ही संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, आदि व्याकरणिक विषयों का ज्ञान कराया जा रहा है। परिणामस्वरूप जो कि बच्चों के शब्द-भंडार में वृद्धि करने के साथ ही भाषा की रोचकता और गहनता को समझाने में प्रभावी सिद्ध होंगे।

पुस्तक का प्रत्येक भाग विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि जाग्रत करे, इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है। साथ ही विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता विकसित करने के लिए अभ्यासों एवं क्रियात्मक कार्यों का यथोचित समावेश किया गया है।

हमें विश्वास है कि बच्चों के परिवेश से जुड़ी एवं बाल मनोविज्ञान पर आधारित ये पुस्तकें बच्चों की हिंदी भाषा दक्षता में वृद्धि के साथ उनके व्यक्तित्व के विकास में उपयोगी सिद्ध होंगी। मार्गदर्शन हेतु गणमान्य एवं प्रबुद्ध अभिभावकों व शिक्षकों की टिप्पणियों एवं सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे ताकि भावी संस्करणों में यथास्थान उचित संशोधन करके पुस्तक को और अधिक रोचक एवं उपयोगी बनाया जा सके।

—लेखक व प्रकाशक

पाठ्यक्रम

क्रम (S.No.)	पाठ का नाम/विधा (Lesson/Mode)	मौखिक ज्ञान (Oral Knowledge)	लिखित ज्ञान (Written Knowledge)	
1.	श्रेय	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
2.	बुद्धि बड़ी या पैसा	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
3.	पिता का पत्र	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
4.	कश्मीरी सेब	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• पाठयांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए • प्रश्नोत्तर	
5.	बूढ़े बच्चें	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
6.	गुफाओं की कला	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • सही व गलत • प्रश्नोत्तर • गद्यांश को पढ़कर उत्तर दीजिए	
7.	एक कहानी-कुछ अनजानी	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
8.	चेतक	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए • प्रश्नोत्तर	
9.	नीलू	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• पाठयांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए • प्रश्नोत्तर	
10.	भारत की गरिमा	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
11.	प्रभात	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
12.	चिट्ठी के अक्षर	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
13.	कोणार्क की आत्मकथा	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
14.	कहीं ऐसा न हो	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
15.	बंदिनी जननी	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • कवितांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए • अधिकतम शब्दों में	
16.	धरती का स्वर्ग	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • वाक्य पूरे कीजिए • प्रश्नोत्तर	
17.	दूधवालों का इंटरव्यू	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
18.	मेरे तो गिरधर गोपाल	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
19.	सोना	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • पाठांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए • अधिकतम शब्दों में	
20.	दो कलाकार	• प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए	• सही विकल्प • प्रश्नोत्तर	
	आदर्श प्रश्न-पत्र-1 (Model Test Paper)-1			
	आदर्श प्रश्न-पत्र-2 (Model Test Paper)-2			

	भाषा ज्ञान (Language Knowledge)	क्रियात्मक गतिविधियाँ (Creative Activites)	पृष्ठ सं॰ (P.No.)
	• संज्ञा के भेद • विलोम शब्द • रिक्त स्थान भरिए • शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्द • समान तुक वाले शब्द • पर्यायवाची शब्द लिखिए • शब्दों के अनेकार्थी शब्द	• पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'मनुष्यता' पढ़िए। • विचारगत प्रश्न	7
	• शब्दों के लिंग • 'बहुवचन' शब्द लिखिए • सही विकल्प • प्रत्यय युक्त शब्दों • प्रत्ययों के योग • वाक्यों को 'ने' का प्रयोग	• विचारगत प्रश्न	11
	• विलोम शब्द • वाक्य में प्रयोग • कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य • सर्वनाम शब्द	• उपभोक्ता अदालतों की कार्य प्रणाली पर एक प्रस्तुतीकरण तैयार कीजिए। • विचारगत प्रश्न	17
	• वर्ण-विच्छेद • पर्यायवाची शब्द • विलोम शब्द • पाठ में आए पाँच ऐसे शब्द लिखिए, जिनमें विदेशी ध्वनियों का प्रयोग किया गया हो	• विचारगत प्रश्न • बाल-श्रम कानूनों पर एक रिपोर्ताज तैयार कीजिए। • विचारगत प्रश्न	21
	• अशुद्ध शब्द • शब्दों से विशेषण • उपसर्ग, प्रत्यय और मूल शब्द	• शब्द समूह • रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद • वाक्य भेद • रिक्त स्थान	26
	• गलत पर्याय चुनकर (✗) का चिह्न लगाइए • विलोम शब्द	• विचारगत प्रश्न	31
	• उचित शब्द चुनिए • विलोम शब्द • शब्द के गलत पर्याय पर (✗) का चिह्न लगाइए	------	39
	• शब्दों के समानार्थक शब्द • मुहावरों का अर्थ • सुमेल कीजिए	• विचारगत प्रश्न • पशु-पक्षियों से संबंधित दस मुहावरे या कहावतें लिखिए।	44
	• सर्वनाम शब्द • विशेषण शब्दों के लिए उपयुक्त विशेष्य • पर्यायवाची शब्द • उपसर्ग और प्रत्यय	• पुस्तकालय से सरोजिनी नायडू द्वारा रचित किसी पुस्तक को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए • विचारगत प्रश्न	47
	• विलोम शब्दों • वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के काल लिखिए • रिक्त स्थान • मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए	• विचारगत प्रश्न • चाँद और सूरज के संवाद लिखकर उसका अपनी कक्षा में अभिनय कीजिए	54
	• रिक्त स्थानों • संज्ञा शब्द • क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए • विलोम शब्द • अनेक शब्दों के लिए उचित एक शब्द	• शिवानी की कहानी 'अपराजिता' पढ़िए। • विचारगत प्रश्न	60
	• क्रिया-विशेषण शब्द • पाँच विदेशी शब्द • कारकों के नाम • शब्द-कोश • वाक्यों में क्रियाएँ	• रिक्त स्थान • वाक्य में अनेक पद • पद-परिचय • रंगीन शब्दों का पद-परिचय • वर्ग-पहेली	64
	• गलत पर्याय पर (✗) का चिह्न लगाइए • शब्द किन दो शब्दों से जोड़कर बनाए • शब्दों से तीन-तीन शब्द बनाइए	• पृथ्वी के निरंतर बढ़ते तापमान पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए। • विचारगत प्रश्न	70
	• वर्णों-विच्छेद • संधि-विच्छेद • तत्सम, तद्भव, देशज अथवा विदेशी शब्द • पर्यायवाची शब्द • उपसर्गों शब्द • शब्द बनाइए	• पता करके लिखिए कि महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' क्यों कहा जाता है? • देशप्रेम से संबंधित कुछ प्रसिद्ध कविताओं का संकलन तैयार कीजिए।	77
	• पर्यायवाची शब्द • विलोम शब्द	• विचारगत प्रश्न	83
	• पद और पदबंध • पदबंध छाँटिए • संधि विच्छेद • वाक्य प्रयोग	• विचारगत प्रश्न • 'श्वेत क्रांति' पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए। • विचारगत प्रश्न	86
	• संधि-विच्छेद • वाक्यों में से विशेषण • प्रत्ययों से तीन-तीन शब्द • आठ आगत शब्द • क्रियाविशेषण शब्द • पूर्वकालिक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए	• मीरा का जीवन-परिचय लिखिए। • मीराबाई व सूरदास के कृष्ण भक्ति पर आधारित अन्य पदों का संकलन कीजिए। • विचारगत प्रश्न	92
	• उपसर्ग और मूल शब्द • भाववाचक संज्ञा शब्द • शब्दों से वाक्य बनाइए • अलंकार का भेद	• यदि आपने कोई पशु या पक्षी पाल रखा हो तो उससे संबंधित अनुभवों को या उसके व्यवहार को एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए। • विचारगत प्रश्न	99
	• विशेषण-विशेष्यों • वाक्यांश शब्द लिखिए • समझिए और लिखिए	• विचारगत प्रश्न	102
	• संयोजक द्वारा वाक्य बनाइए • सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ छाँटिए • शब्दों के लिंग बताइए • शब्दों को नए रूप	• विचारगत प्रश्न	109
			117
			119

विषय-सूची

1.	श्रेय	7
2.	बुद्धि बड़ी या पैसा	11
3.	पिता का पत्र	17
4.	कश्मीरी सेब	21
5.	बूढ़े बच्चें	26
6.	गुफाओं की कला	31
7.	एक कहानी-कुछ अनजानी	39
8.	चेतक	44
9.	नीलू	47
10.	भारत की गरिमा	54
11.	प्रभात	60
12.	चिट्ठी के अक्षर	64
13.	कोणार्क की आत्मकथा	70
14.	कहीं ऐसा न हो	77
15.	बंदिनी जननी	83
16.	धरती का स्वर्ग	86
17.	दूधवालों का इंटरव्यू	92
18.	मेरे तो गिरधर गोपाल	99
19.	सोना	102
20.	दो कलाकार	109
•	आदर्श प्रश्न पत्र-1 (Model Test Paper)-1	— 117
•	आदर्श प्रश्न पत्र-2 (Model Test Paper)-2	— 119

1 श्रेय

कहा किसी ने-पेड़, तुम इतने बड़े हो,
इतने कड़े हो,
न जाने कितने बरसों से,
आँधी-पानी में सीधे खड़े हो,
और हाँ, सिर ऊँचा किए,
अपनी जगह पर अड़े हो।

सूरज उदय होता है,
चाँद बढ़ता-घटता है,
ऋतुएँ बदलती हैं,
बिजली गिरती है,

और तुम सब सहते हुए,
विनम्रता की हरियाली को ओढ़े,
लौह-स्तंभ की तरह खड़े हो,
अपनी जगह पर अड़े हो।

पेड़ काँप उठा,
अनहोनी को भाँप उठा,
पत्तियाँ चुप न रह सकीं,
सर्र-सर्र का शब्द गूँजा,

नहीं-नहीं झूठा श्रेय,
मुझे मत दो, मुझे मत दो,
मै तो बार-बार झुका, गिरा,
डालियाँ टूटीं और मैं उखड़ा,
सूखा ठूँठ होकर कैसे उजड़ा।

श्रेय देना हो तो दो,
मेरे पैरों तले की मिट्टी को,
जिसने न जाने कैसे मेरी जड़ों को,
अपनी गोद में सँभलाकर रखा।।

कवि परिचय

अज्ञेय का जन्म 7 मार्च, 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के 'कुशीनगर' नामक स्थान पर हुआ था। अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। उन्हें अपने कविता संग्रह 'आँगन के पार द्वार' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार और 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। 'महावृक्ष के नीचे', 'हरी घास पर क्षण भर' आदि इनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह तथा 'जयदोल' इनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। 'अपने-अपने अजनबी', 'शेखरः एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। 4 अप्रैल, 1987 को इनका निधन हो गया।

शब्द-अर्थ

कड़े	—	कठोर	बरसों	—	सालों
अड़े	—	स्थित	लौह-स्तंभ	—	लोहे का खंभा
अनहोनी	—	जो नहीं होना चाहिए	भाँप उठा	—	आभास हो गया
उखड़ा	—	जमीन से अलग हो जाना	उजड़ा	—	नष्ट होना
तले	—	नीचे			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) किसी ने क्यों कहा कि पेड़ अपनी जगह पर अड़ा हुआ है?

(ख) पेड़ किसकी तरह खड़ा है?

(ग) पेड़ ने क्या भाँप लिया?

लिखित

1. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) पेड़ कैसी स्थिति में सीधा खड़ा है?

☐ धूप-ताप में ☐ आँधी-पानी में ☐ प्रेम-प्यार में

(ख) पेड़ कैसी हरियाली ओढ़े खड़ा है?

☐ श्रेष्ठता की ☐ अच्छाई की ☐ विनम्रता की

(ग) पेड़ क्या नहीं लेना चाहता?

☐ झूठा श्रेय ☐ धन-संपदा ☐ खाद-पानी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कविता में पेड़ को 'लौह-स्तंभ' क्यों कहा गया है?

(ख) पेड़ क्यों काँप उठा?

(ग) 'पत्तियाँ चुप न रह सकीं'— पत्तियों ने चुप न रहकर क्या किया?

(घ) किसी ने पेड़ से क्या कहा? संक्षेप में बताइए।

(ङ) पेड़ ने किसे श्रेय दिया और क्यों?

(च) कैसे पता चलता है कि पेड़ अपनी जगह पर अड़ा हुआ है?

(छ) 'विनम्रता की हरियाली को ओढ़े'– से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ज) 'अनहोनी को भाँप उठा'— यहाँ कवि किस अनहोनी की बात कर रहा है?

(झ) पेड़ ने कौन-सा झूठा श्रेय नहीं लिया?

(ञ) यदि पेड़ दिया गया श्रेय स्वयं ले लेता, तो आप पेड़ के बारे में क्या सोचते?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों को संज्ञा के भेदों के अनुसार छाँटकर लिखिए–

पत्तिया, मित्रता, विनम्रता, ऋतुएँ, पेड़, गंगा, हरियाली, आम, करुणा, सूरज, चाँद, माली

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____
_____	_____	_____

2. विलोम शब्द लिखिए–

झूठा × _____ उदय × _____

सूखा × _____ घटता × _____

विनम्रता × _____ ऊँचा × _____

3. दिए गए शब्दों के लिंग पहचान कर रिक्त स्थान में 'पुल्लिग' या 'स्त्रीलिंग' लिखिए–

(क) सूरज _____ (ङ) चाँद _____

(ख) धरती _____ (च) पेड़ _____

(ग) डालियाँ _____ (छ) मिट्टी _____

(घ) स्तंभ _____ (ज) पत्तियाँ _____

(झ) बिजली _____ (ञ) आँधी _____

4. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों को छाँटकर तालिका के अनुसार लिखिए–

टेकड़ी, टोपी, अग्नि, मुश्किल, नींद, निशान, उपजाऊ, मुकाम, हास्य, गरमी, मूर्खता, सौदागर, अभिलाषा, क्षेत्र, फैंसी, थियेटर, दुभाषिये, हिमाकत, सूर्य, धौंकनी

(i) तत्सम शब्द – _____

(ii) तद्भव शब्द – _____

(iii) देशज शब्द – _____

(iv) विदेशी शब्द – _____

5. समान तुक वाले शब्द लिखिए-

(i) बड़े हो _____ (ii) काँप उठा _____

(iii) उखड़ा _____ (iv) बदलती है _____

(v) गिरा _____ (vi) उड़ती है _____

6. रिक्त स्थानों में पर्यायवाची शब्द लिखिए-

घर – _____ _____

अँधेरा – _____ _____

अतिथि – _____ _____

इच्छा – _____ _____

जंगल – _____ _____

नदी – _____ _____

7. अनेकार्थक शब्द – जिन शब्दों के प्रसंग के अनुसार भिन्न-भिन्न वाक्यों में, भिन्न अर्थ होता हैं, उन्हें अनकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे- घन - बादल, हथौड़ा।

निम्नलिखित शब्दों के अनेकार्थी शब्द लिखिए-

(क) कर – _____ _____ (ख) अंबर – _____ _____

(ग) धन – _____ _____ (घ) पत्र – _____ _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'मनुष्यता' पढ़िए।**
- **पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की अन्य तीन कविताएँ संकलित कीजिए। उन कविताओं को अपनी परियोजना कॉपी में लगाइए।**

बुद्धि बड़ी या पैसा 2

किसी देश में एक राजा राज करता था। वह बहुत संपन्न और अहंकारी था। वह सोचता था कि पैसे के बल पर दुनिया के सब काम-काज चलते हैं। वह सबसे यही कहता था कि इस संसार में धर्म-कर्म, स्त्री-पुत्र, मित्र-सखा सब पैसा ही है।

राजा सिर से पैर तक पैसे के मद में डूबा था, परंतु उसकी रानी बड़ी बुद्धिमती थी। वह पैसे को तुच्छ और बुद्धि को श्रेष्ठ समझती थी। उसका कहना था कि दुनिया पैसे के बूते उतनी नहीं चलती, जितनी बुद्धि के बूते पर।

एक दिन राजा ने पूछा, "रानी, सच कहो, दुनिया में बुद्धि बड़ी है या पैसा?"

वह बोली, "महाराज, यदि आप सच पूछते हैं, तो मैं बुद्धि को बड़ा समझती हूँ। बुद्धि से ही पैसा आता है। बुद्धि न हो, तो सब खजाने यों ही लुट जाते हैं। राजपाट चौपट हो जाते हैं।"

पैसे की इस प्रकार निंदा सुनकर राजा को बहुत गुस्सा आया। वह बोला, "रानी! तुम्हें अपनी बुद्धि का बड़ा घमंड है। मैं देखना चाहता हूँ कि तुम बिना पैसे के बुद्धि के सहारे कैसे काम चलाती हो।"

ऐसा कहकर उसने रानी को नगर के बाहर एक मकान में रख दिया। सेवा के लिए दो-चार नौकर भेज दिए। खर्च के लिए न तो एक पैसा दिया और न किसी तरह का कोई सामान। रानी के शरीर पर जो जेवर थे, वे भी उतरवा लिए। रानी मन-ही-मन कहने लगी, "मैं एक दिन राजा को दिखा दूँगी कि संसार मे बुद्धि भी कोई चीज है, पैसा ही सब कुछ नहीं हैं।"

नए मकान में पहुँचकर रानी ने नौकर द्वारा दो ईंटे मँगवाई और उन्हें सफेद कपड़े में लपेटकर ऊपर से अपने नाम की मुहर लगा दी। फिर नौकर को बुलाकर कहा, "तुम मेरी इस धरोहर को धन्नू सेठ के घर ले जाओ। कहना कि रानी ने धरोहर भेजी है और दस हजार रुपये मँगाए हैं। कुछ दिनों में तुम्हारे रुपये सूद के साथ लौटा दिए जाएँगे और धरोहर वापस ले ली जाएगी।"

नौकर सेठ के यहाँ पहुँचा। धरोहर पर रानी के नाम ही मुहर देखकर सेठ समझा कि इसमें कोई कीमती जेवर होंगे। उसने दस हजार रुपये चुपचाप दे दिए। रुपये लेकर नौकर रानी के पास आया। रानी ने इन रुपयों से व्यापार शुरू किया। रानी स्वयं

व्यापार की देख-रेख करने लगी। थोड़े ही दिनों में उसने इतना धन कमा लिया कि सेठ के रुपये चुक गए और काफी रुपये बच गए। इन रुपये से उसने गरीब दवाखाना, पाठशाला तथा अनाथालय खुलवा दिए। चारों ओर रानी की जय-जयकार होने लगी। शहर के बाहर रानी के मकान के आसपास बहुत-से मकान बन गए और वहाँ अच्छी रौनक रहने लगी।

इधर रानी के चले जाने पर राजा अकेला रह गया। रानी राजकाज में उचित सलाह देती थी। धूर्तों की दाल उसके सामने नहीं गल पाती थी। अब उसके चले जाने पर धूर्तों की बन आई। धूर्त लोग आ-आकर राजा को लूटने लगे। राजा अपना मन बहलाने के लिए राजकाज मंत्रियों को सौंपकर देशाटन के लिए निकल पड़ा।

जाते समय नगर के बाहर ही उसे कुछ ठग मिले। उनमें से एक काना आदमी राजा के पास आकर बोला, ''महाराज, मैंने अपनी एक आँख आपके यहाँ दो हजार में गिरवी रखी थी। वादे के अनुसार अब आप अपने रुपये लेकर मेरी आँख मुझे वापस कीजिए।''

राजा बोला, ''भाई, मेरे पास किसी की आँख-वाँख नहीं है। तुम मंत्री के पास जाकर पूछो।''

ठग बोला, ''महाराज, मैं मंत्री को क्या जानूँ? मैंने तो आपके पास आँख गिरवी रखी थी, आप ही मेरी आँख दें। यदि आप मेरी आँख न देंगे, तो आपकी बड़ी बदनामी होगी।''

राजा बड़ा परेशान हुआ। बदनामी से बचने के लिए उसने जैसे-तैसे चार हजार रुपये देकर उसे विदा किया। कुछ दूर आगे चला था कि एक बूढ़ा आदमी उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

पहले ठग के समान वह भी कहने लगा, ''महाराज, मैंने अपना एक कान आपके पास गिरवी रखा था रुपये लेकर मेरा कान मुझे वापस कीजिए।'' राजा ने उसे भी रुपये देकर विदा किया। इस प्रकार रास्ते में कई ठग आए और राजा से रुपये ऐंठकर चले गए। राजा जो कुछ रुपया-पैसा साथ लाए थे, वह ठगों ने लूट लिया। वे खाली हाथ राजकुमारी चौबोला के देश में पहुँचे।

राजकुमारी चौबोला सिंह देश की राजकन्या थी। उसका प्रण था कि जो आदमी उसे शतरंज में हरा देगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी। राजकुमारी बहुत सुंदर थी। सैंकड़ों राजकुमार जेल में पड़े थे।

मुसीबत के मारे राजा साहब भी उसी देश में आ पहुँचे। जब चौबोला की सुंदरता की खबर उनके कानों में पड़ी, तो उनकी भी इच्छा उसके साथ विवाह करने की हुई। राजकुमारी ने महल से कुछ दूरी पर एक बंगला बनवा दिया था। विवाह की इच्छा से आने वाले लोग इसी बंगले में ठहरते थे। राजा भी उस बंगले में जा पहुँचा। पहरेदार ने तुरंत राजकुमारी को खबर दी। थोड़ी देर बाद एक तोता उड़कर आया और राजा की बाँह पर बैठ गया। उसके गले मे एक चिट्ठी बँधी थी, जिसमें विवाह की शर्तें लिखी थीं। अंत में यह भी लिखा था कि यदि तुम शतरंज में हार गए, तो तुम्हें जेल की हवा खानी पड़ेगी।

थोड़ी देर बाद राजा को राजकुमारी के महल में बुलाया गया। खेल शुरू हुआ और राजा हार गया। शर्त के अनुसार वह जेल भेज दिया गया।

राज्य की हालत बिगड़ने और राजा के नगर छोड़कर चले जाने का समाचार जब रानी को मालूम हुआ, तो उसे बहुत दुख हुआ। वह राजा का पता लगाने निकली। कुछ ही दूर चली थी कि वही पुराने ठग फिर आ गए। सबसे पहले वही काना आया और कहने लगा, ''रानी साहिबा, आपके पास मेरी आँख दो हजार में गिरवी रखी थी। आप अपने रुपए लेकर मेरी आँख वापस दीजिए।''

रानी बोली, ''बहुत ठीक, मेरे पास बहुत-से लोगों की आँखे गिरवी रखी हैं, उन्हीं में तुम्हारी भी होगी। एक काम करो, तुम अपनी दूसरी आँख निकालकर मुझे दो। उसके तौल की जो आँख होगी, वह तुम्हें दे दी जाएगी।''

रानी का जवाब सुनकर ठग बहुत घबराया। वह हाथ-पैर जोड़कर माफी माँगने लगा।

अंत में ठग ने विनती करके चार हजार रुपए देकर अपनी जान बचाई। यही हाल कान वाले ठग का हुआ। जब उसने देखा कि रानी का नौकर दूसरा कान काटने ही वाला है, तो उसने भी चार हजार रुपए देकर रानी से अपना पिंड छुड़ाया।

ठगों से निपटकर रानी आगे बढ़ी और पता लगाते-लगाते राजकुमारी चौबोला के देश में जा पहुँची। राजा के जेल जाने का समाचार सुनकर उसे दुःख हुआ। अब वह राजा को जेल से छुड़ाने का उपाय सोचने लगी। उसने पता लगाया कि राजकुमारी चौबोला किस प्रकार शतरंज खेलती है। सारा भेद समझकर उसने पुरुष का भेष बनाया।

रानी पुरुष-वेश में राजकुमारी चौबोला के महल में पहुँची और शतरंज के खेल में राजकुमारी चौबाला रानी से हार गईं। राजकुमारी के विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। रानी बोली, "विवाह तो शर्त पूरी होते ही हो गया, रहा भाँवरे पड़ने का दस्तूर, तो वह घर चलकर कर लिया जाएगा। वहीं पर धूम-धाम के साथ शादी की जाएगी।"

राजकुमारी का विवाह निश्चित होते ही सारे कैदी छोड़ दिए गए। दूसरे दिन सवेरे रानी राजकुमारी चौबोला को विदा कराकर हाथी-घोड़े, दास-दासी और बहुत सारे धन के साथ अपने नगर को चली। कुछ दिन में वह अपने नगर में आ पहुँची और नगर के बाहर अपने मकान में ठहर गई।

राजा जब लौटकर अपने नगर में आए, तो देखते क्या हैं कि रानी के मकान के पास औषधालय, पाठशाला, अनाथालय आदि कई इमारतें बनी हैं। देखकर राजा अचंभे में आ गया। सोचने लगा, रानी को मैंने एक पैसा तो दिया नहीं था, उसने ये लाखों की इमारत कैसे बनवा लीं? राजा को रानी की बुद्धिमता पर विश्वास हो गया।

राजा ने लज्जित होकर सिर नीचा कर लिया। फिर कुछ देर सोचकर रानी से कहने लगा, "रानी, अभी तक मैं बड़ी भूल में था। तुमने मेरी आँखें खोल दीं। अभी तक मैं पैसे को ही सब कुछ समझता था, पर आज मेरी समझ में आया कि बुद्धि के आगे पैसा कोई चीज नहीं है।"

शुभ मुहूर्त में राजकुमारी चौबोला का विवाह राजा के साथ धूमधाम से हो गया। दोनों रानियाँ हिल-मिलकर आनंदपूर्वक रहने लगीं।

(बुंदेलखंड की लोक कथा)

शब्द-अर्थ

संपन्न	—	धनवान	अहंकारी	—	घमंडी
मद	—	नशा	बूते	—	बल पर
चौपट होना	—	बरबाद होना	निंदा सुनकर	—	बुराई सुनकर
जेवर	—	गहने	धरोहर	—	अमानत
दवाखाना	—	औषधालय	धूर्त	—	कपटी, चालाक
गिरवी रखना	—	अपनी कोई मूल्यवान वस्तु रखकर रुपए उधार लेना	पिंड छुड़ाया	—	पीछा छुड़ाया
दस्तूर	—	रिवाज	लज्जित होना	—	शर्मिंदा होना

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) पैसों के बारे में राजा क्या सोचता था?

(ख) रानी के सामने धूर्तों की दाल क्यों नहीं गल पाती थी?

(ग) राजकुमारी चौबोला का क्या प्रण था?

(घ) रानी ने राजकुमारी चौबोला को किस खेल में हरा दिया?

(ङ) राजा को क्या देखकर अचंभा हुआ?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) राजा का स्वभाव कैसा था?

☐ धूर्त ☐ लालची ☐ अंहकारी

(ख) राजा को छुड़ाने के लिए रानी ने किसका भेष बनाया?

☐ जादूगर का ☐ पुरुष का ☐ साधु का

(ग) रानी ने नौकर के हाथ सेठ के पास क्या भेजा?

☐ सफेद कपड़े में लपेटकर दो ईंटें ☐ अपना प्रिय घोड़ा ☐ अपने मूल्यवान आभूषण

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) राजा अहंकार में सबसे क्या कहता था?

(ख) रानी किसे तुच्छ और किसे श्रेष्ठ समझती थी?

(ग) एक दिन राजा ने रानी से क्या पूछा?

(घ) व्यापार से प्राप्त रुपयों का रानी ने कैसे उपयोग किया?

(ङ) राजा को रानी की बुद्धिमानी पर विश्वास कैसे हुआ?

(च) रानी की किस बात पर राजा को बहुत गुस्सा आ गया और फिर उसने क्या किया?

(छ) रानी के पास व्यापार शुरू करने के लिए रुपए कहाँ से आए?

(ज) देशाटन के लिए जाते समय दोनों ठगों ने राजा से रुपए कैसे ठग लिए?

(झ) राजकुमारी द्वारा राजा को भेजी गई चिट्ठी में क्या लिखा था?

(ञ) रानी ने दोनों ठगों को कैसे सबक सिखाया?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर पुनः लिखिए–

(क) राजकुमारी को महल में बुलाया गया। _____

(ख) सेठ ने नौकर को बुलाया। _____

(ग) घोड़ा तेज दौड़ता है। _____

(घ) जंगल में शेर अपने बच्चों के साथ बैठा था। _____

2. निम्नलिखित शब्दों के लिए 'बहुवचन' शब्द लिखिए–

		बहुवचन			बहुवचन
(क)	पैसा	_____	(ख)	पंखा	_____
(ग)	डिबिया	_____	(घ)	घोड़ा	_____
(ङ)	आशा	_____	(च)	कमरा	_____
(छ)	सखी	_____	(ज)	रानी	_____

3. उपसर्ग– जो शब्दांश किसी सार्थक शब्द के आगे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

जैसे– सम्मान, निराशा

सम् + मान, निर् + आशा

ऊपर लिखे गए 'सम्मान' और 'निराशा' शब्दों में 'मान' और 'आशा' क्रमश मूल शब्द हैं, जिनके साथ 'सम्' एवं 'निर्' उपसर्गों का प्रयोग किया गया है।

- **उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

(क) 'अपमान' में कौन-सा उपसर्ग है?

☐ अ ☐ अप ☐ अति ☐ मान

(ख) 'बदनामी' में कौन-सा उपसर्ग है?

☐ ब ☐ ई ☐ बद ☐ नाम

(ग) 'अवशेष' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

☐ आ ☐ अव ☐ आव ☐ काश

(घ) 'अपव्यय' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है?

☐ व्य ☐ अपव्य ☐ अ ☐ अप

4. किसी शब्द के बाद लगने वाले शब्दांश 'प्रत्यय' कहलाते हैं। जैसे- रानी बड़ी बुद्धिमानी थी। इस वाक्य में 'बुद्धि' शब्द के साथ 'मती' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।

नीचे लिखे प्रत्यय युक्त शब्दों को ध्यान से पढ़िए-

अहंकार + ई = अहंकारी, बदनाम + ई = बदनामी, पहरेदार + ई = पहरेदारी, लज्जा + इत = लज्जित, गुण + वान = गुणवान, चित्र + कार = चित्रकार

निम्नलिखित प्रत्ययों के योग से दो-दो शब्द बनाइए-

प्रत्यय	शब्द	शब्द
(क) वाल	_____	_____
(ख) दार	_____	_____
(ग) ईय	भारतीय	_____
(घ) कार	_____	_____
(ङ) ईन	रंगीन	_____
(च) वना	_____	सुहावना

5. 'ने' का प्रयोग - सामान्यत: 'ने' का प्रयोग कर्ता के साथ भूतकाल के वाक्यों में किया जाता है।

(i) संज्ञा के साथ 'ने' का प्रयोग अलग से किया जाता है, जैसे-

राजा ने रानी को नगर के बाहर एक मकान में रख दिया।

(ii) सर्वनाम के साथ 'ने' का प्रयोग जोड़कर किया जाता है; जैसे- उसने, तुमने आदि।

नीचे लिखे वाक्यों को 'ने' का प्रयोग करते हुए लिखिए-

(क) रानी कुम्हार से दो ईंटें मँगवाती है।

_____

(ख) रानी गरीबों के लिए पाठशाला, दवाखाना और अनाथालय खुलवाती है।

_____

(ग) राजा लज्जित होकर बोले- "रानी! तुम धन्य हो।"

_____

क्रियात्मक गतिविधि

- **पुस्तकालय तथा कंप्यूटर की सहायता से भारत के विभिन्न प्रांतों की लोक कथाएँ पढ़िए। उन कथाओं में निहित नैतिक उपदेशों को चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाइए।**
- **'बुद्धि बड़ी है या पैसा' विषय पर कक्षा में वाद-विवाद आयोजित कीजिए।**

पिता का पत्र

3

विक्टोरिया जेल

25 मार्च, 1909

प्रिय पुत्र,

प्रतिमास एक पत्र लिखने और एक पत्र प्राप्त करने का अधिकार मुझे मिला है। अब मैं लिखूँ किसे? मिस्टर रीच, मिस्टर पोलक और तुम्हारा खयाल मुझे बारी-बारी से आया। लेकिन मैंने तुम्हें ही पत्र लिखना पसंद किया।

मेरे बारे में तुम ज़रा भी चिंता मत करना, विशेष कुछ कहने का अधिकार मुझे नहीं हैं। मैं पूर्ण रूप से शांति में हूँ।

आशा है कि 'बा' अच्छी हो गई होंगी। मुझे मालूम है कि तुम्हारे कुछ पत्र यहाँ आए हैं, लेकिन मुझे दिए नहीं गए। फिर भी डिप्टी गवर्नर की उदारता से मुझे मालूम हुआ कि 'बा' का स्वास्थ्य सुधर रहा है। क्या वह फिर से चलने-फिरने लगीं?

अब कुछ तुम्हारे विषय में कहना चाहूँगा। तुम कैसे हो? तुम पर जो जवाबदारी मैंने डाली है, तुम उसके सर्वथा योग्य हो और आनंद से उसे निभा रहे होगे, ऐसी मुझे आशा है। मैं जानता हूँ कि तुम्हें अपनी शिक्षा के प्रति असंतोष है। जेल में मैंने यहाँ खूब पढ़ा है, इससे मैं यही समझता हूँ कि केवल अक्षर ज्ञान ही शिक्षा नहीं है, सच्ची शिक्षा तो चरित्र-निर्माण और कर्तव्य का बोध है। यदि यह दृष्टिकोण सही है और मेरे विचार से तो यह बिलकुल ठीक है, तो तुम सच्ची शिक्षा प्राप्त कर रहे हो, इससे अच्छा और क्या हो सकता है, रामदास और देवदास को भी तुम सँभाल रहे हो। यदि यह काम तुम अच्छी तरह और आनंद से करते हो तो तुम्हारी आधी शिक्षा तो इसी के द्वारा पूरी हो जाती है।

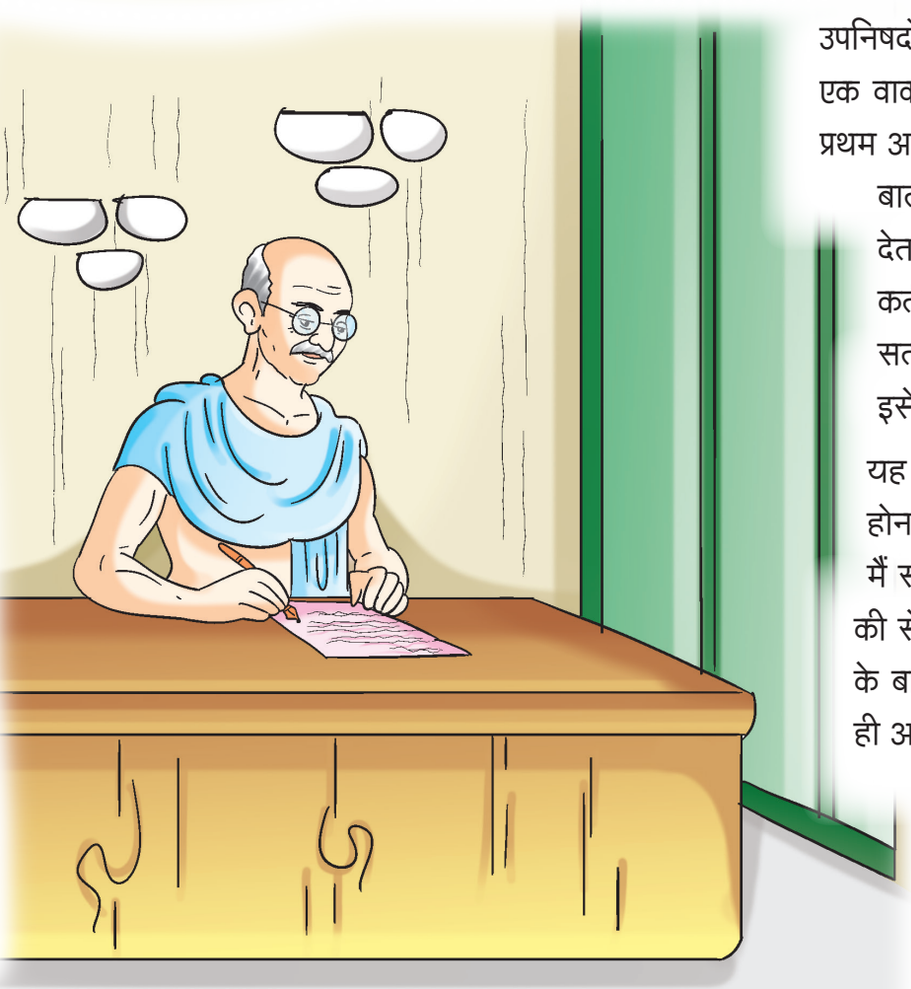

उपनिषदों की समालोचना में नत्थूराम जी ने जो लिखा है, उसमें एक वाक्य का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने कहा है कि प्रथम अर्थात ब्रह्मचर्य आश्रम, संन्यास आश्रम के समान है। यह बात सही है। आमोद-प्रमोद एक निश्चित आयु तक ही शोभा देता है। बारह वर्ष की उम्र के बाद बच्चों को जवाबदारी और कर्तव्य का ज्ञान होना चाहिए। उन्हें अपने आचार-विचार में सत्य और अहिंसा के प्रयोग की चेष्टा करनी चाहिए और वे इसे भार नहीं, बल्कि आनंद का अनुभव करते हुए करें।

यह आनंद कृत्रिम भी नहीं होना चाहिए। यह सरल स्वाभाविक होना चाहिए। मुझे राजकोट के कई ऐसे लड़के याद आते हैं। मैं स्वयं भी जब तुमसे काफ़ी छोटा था तो मुझे अपने पिताजी की सेवा करने में बहुत आनंद मिलता था। बारह वर्ष की आयु के बाद आमोद-प्रमोद का बहुत ही कम बल्कि नहीं के समान ही अवसर मुझे मिला है।

संसार में तीन बातें महत्त्वपूर्ण हैं, इनको प्राप्त कर तुम संसार के किसी भी कोने में जाओगे तो अपना निर्वाह कर सकोगे। ये तीन बातें हैं-अपनी आत्मा का, अपने आप का और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना। इसका मतलब यह नहीं कि तुम्हें अक्षर-ज्ञान नहीं मिलेगा। वह तो मिलेगा ही लेकिन तुम उसकी चिंता करो, यह मैं नहीं चाहता। इसके लिए तुम्हारे पास अभी बहुत समय है। अक्षर-ज्ञान तो इसलिए होता है कि तुम्हें जो कुछ मिला, उसे तुम दूसरों को दे सको।

इतना और याद रखना कि अब से हमे गरीबी में रहना है। जितना अधिक मैं विचार करता हूँ, उतना ही अधिक मुझे लगता है कि गरीबी में ही सुख है। अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुखद है। खेत में घास खोदने और गड्ढे भरने में पूरा समय देना। भविष्य में तुम्हें अपना जीवन-निर्वाह इसी से करना है। मेरी इच्छा है कि अपने परिवार में तुम एक योग्य किसान बनो। सभी औज़ारों को सदा साफ़ और सुव्यवस्थित रखना।

अक्षर-ज्ञान में गणित और संस्कृत पर पूरा ध्यान देना। भविष्य में संस्कृत तुम्हारे लिए उपयोगी सिद्ध होगी। ये दोनों विषय बड़ी उम्र में सीखना कठिन है। संगीत में भी बराबर रुचि रखनी चाहिए। वर्ष के अंत में तुम्हें अपना यह संग्रह बहुत मूल्यवान प्रतीत होगा और पहले क्या करूँ? शांतचित्त से विचारपूर्वक तुमने यदि सभी सद्गुणों को प्राप्त करने की चेष्टा की तो तुम्हारे लिए ये बहुत उपयोगी और मूल्यवान प्रमाणित होंगे। तुमसे मुझे यह भी आशा है कि घर-खर्च के लिए जो भी तुम खर्च करते हो, उसका पैसे-पैसे का हिसाब रखते हो।

मुझे यह भी आशा है कि तुम रोज़ शाम को नियमपूर्वक प्रार्थना करते होगे और रविवार को 'वेस्ट' के यहाँ भी प्रार्थना में जाते होगे। सूर्योदय से पहले उठकर प्रार्थना करना बहुत ही अच्छा है। प्रार्थना प्रयत्नपूर्वक एक निश्चित समय में ही करनी चाहिए। यह नियमितता तुम्हारे अपने जीवन में आगे चलकर बड़ी सहायक सिद्ध होगी।

इस पत्र को पढ़कर, अच्छी तरह समझ लेने के बाद जवाब लिखना। जवाब जितना लंबा हो, उतना लिख सकते हो। प्रेम सहित यह पत्र मैं समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा पिता

मोहनदास

शब्द-अर्थ

प्रतिमास	—	हर महीने	**विशेष**	—	खास
जवाबदारी	—	जिम्मेदारी	**सर्वथा**	—	पूर्ण रूप से
चरित्र-निर्माण	—	चरित्र को बनाना	**दृष्टिकोण**	—	नज़रिया
नियमितता	—	समय-नियोजन, नियम पालन	**सद्गुण**	—	अच्छे गुण
समालोचना	—	गुण-दोषों की विवेचना	**ब्रह्मचर्य**	—	इंद्रियों पर संयम की अवस्था
प्रमाणित	—	साबित	**मूल्यवान**	—	कीमती
आमोद-प्रमोद	—	मौज-मस्ती	**कृत्रिम**	—	नकली
महत्त्वपूर्ण	—	ज़रूरी	**जीवन-निर्वाह**	—	जीवन गुजारना
सुव्यवस्थित	—	तरीके से	**संग्रह**	—	किसी वस्तु को एकत्र करना

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) गांधी जी 'बा' किसको कहते थे?

(ख) कौन-सा आश्रम संन्यास आश्रम के समान है?

(ग) गांधी जी के अनुसार अमीरी या गरीबी में से किसमें अधिक सुख है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) गांधी जी को प्रतिमास कितने पत्र प्राप्त करने का अधिकार था?

☐ चार ☐ एक ☐ दो ☐ तीन

(ख) ब्रह्मचर्य आश्रम को संन्यास आश्रम के समान किसने बताया है?

☐ मिस्टर रीच ने ☐ गांधी जी ने ☐ मिस्टर पोलक ने ☐ नत्थूलाल जी ने

(ग) गांधी जी अपने पुत्र को क्या बनाना चाहते थे?

☐ किसान ☐ डॉक्टर ☐ शिक्षक ☐ व्यापारी

(घ) प्रार्थना के लिए सबसे अच्छा समय कौन-सा होता है?

☐ सूर्योदय ☐ सूर्यास्त ☐ सायंकाल ☐ दोपहर

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) पत्र में गांधी जी ने 'बा' के विषय में क्या लिखा?

(ख) बारह वर्ष की उम्र के बाद बच्चों में क्या परिवर्तन होना चाहिए?

(ग) गणित, संस्कृत और संगीत विषय में गांधी जी ने अपने पुत्र को क्या हिदायत दी?

(घ) 'प्रार्थना' करने के लिए गांधी जी ने अपने पुत्र को क्या समझाया?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) कृतज्ञ × _____ (ख) इच्छित × _____

(ग) अपेक्षित × _____ (घ) गमन × _____

(ङ) सूक्ष्म × _____ (च) अनुकूल × _____

2. लिंग स्पष्ट करने हेतु शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(क) बस – _____

(ख) तूफ़ान – _____

(ग) पंखा – _____

(घ) खिड़की – _____

(ङ) घड़ी – _____

(च) घास – _____

3. वाक्यों को कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में बदलिए।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
(क) पारस ने चित्र बनाया।	_____
(ख) मानस फूल तोड़ रहा है।	_____
(ग) गिलहरी अखरोट कुतर रही है।	_____
(घ) दिव्या ने साड़ी खरीदी।	_____

4. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

दी गई पंक्तियों में सर्वनाम शब्द छाँटकर उन्हें रेखांकित कीजिए।

मुझे मालूम है कि तुमहारे कुछ पत्र यहाँ आए हैं। मैं जानता हूँ कि तुम्हें अपनी शिक्षा के प्रति असंतोष है। सच्ची शिक्षा चरित्र और कर्तव्य का बोध है। यदि यह दृष्टिकोण सही है तो मेरे विचार से तुम सच्ची शिक्षा प्राप्त कर रहे हो।

क्रियात्मक गतिविधि

(क) सुबह विद्यालय में होने वाली प्रार्थना का भाव समझकर कक्षा में चर्चा कीजिए।

(ख) गांधी जी अपने पुत्र को किसान बनाना चाहते थे। आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं और क्यों? कक्षा में चर्चा कीजिए।

(ग) जेल में रहने वाले कैदियों की दशा व दिनचर्या की कल्पना करते हुए 150 शब्दों का एक अनुच्छेद लिखिए।

(घ) कल्पना कीजिए कि गांधी जी को कुछ आधुनिक तथा बिगड़ैल छात्र-छात्राओं को सुधारने की ज़िम्मेदारी दी जाती तो गांधी जी को अपनी इस ज़िम्मेदारी को निभाते हुए किन-किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता? कल्पना करके लिखिए।

(ङ) पता कीजिए कि गांधी जी को राष्ट्रपिता का दर्ज़ा क्यों दिया गया?

(च) गांधी जी ने अपने जीवन को बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से व्यतीत किया। गांधी जी द्वारा लिखित पुस्तकों से उनकी जीवन-शैली की जानकारी प्राप्त कीजिए।

कश्मीरी सेब 4

कल शाम को चौक में दो-चार जरूरी चीजें खरीदने लगा था। पंजाबी मेवाफरोशों की दुकानें रास्ते में ही पड़ती हैं। एक दुकान पर बहुत अच्छे, रंगदार, गुलाबी सेब सजे हुए नजर आए। जी ललचा उठा। आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों पर विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है। टमाटर को पहले कोई मुफ्त में भी न पूछता था। अब टमाटर भोजन का आवश्यक अंग बन गया है। गाजर भी पहले गरीबों के पेट भरने की चीज थी। अमीर लोग तो उसका हलवा ही खाते थे; मगर अब पता चला है कि गाजर में भी बहुत विटामिन हैं; इसलिए गाजर को भी मेजों पर स्थान मिलने लगा है और सेब के विषय में तो यह कहा जाने लगा है कि एक सेब रोज खाइए जो आपको डॉक्टर की जरूरत न रहेगी। डॉक्टर से बचने के लिए हम निबौरी तक खाने को तैयार हो सकते हैं। सेब तो रस और स्वाद में अगर आम से बढ़कर नहीं है, तो घटकर भी नहीं। हाँ, बनारस के लँगड़े और लखनऊ के दशहरी और बंबई के अल्फाँसों की बात दूसरी है। उनकी टक्कर का फल तो संसार में दूसरा नहीं है; मगर उनमें विटामिन और प्रोटीन हैं या नहीं? है, तो काफी हैं या नहीं है, इन विषयों पर अभी किसी पश्चिमी डॉक्टर की रिसर्च देखने में नहीं आई। सेब को यह विशेषता मिल चुकी है कि अब वह केवल स्वाद की चीज नहीं है, उसमें गुण भी हैं। हमने दुकानदार से मोल-भाव किया और आधा सेर सेब माँगे।

दुकानदार ने कहा– "बाबूजी! बड़े मजेदार सेब आए हैं, खास कश्मीर के। आप ले जाएँ, खाकर तबीयत खुश हो जाएगी।"

मैंने रुमाल निकालकर उसे देते हुए कहा– "चुन-चुनकर रखना।"

दुकानदार ने तराजू उठाई और अपने नौकर से बोला– "आधा सेर कश्मीरी सेब निकाल ला। चुनकर लाना।"

नौकर चार सेब लाया। दुकानदार ने तौला, एक लिफाफे में उन्हें रखा और रुमाल में बाँधकर मुझे दे दिया। मैंने चार आने उसके हाथ में रखे। घर आकर लिफाफा ज्यों-का-त्यों रख दिया। रात को सेब या कोई दूसरा फल खाने का कायदा नहीं है। फल खाने का समय तो प्रातःकाल है। आज सुबह मुँह-हाथ धोकर जो नाश्ता करने के लिए एक

सेब निकाला, तो वह सड़ा हुआ था। एक रुपये के आकार का छिलका गल गया था। समझा, रात को दुकानदार ने देखा न होगा। दूसरा निकाला। मगर वह आधा सड़ा हुआ था। अब संदेह हुआ, दुकानदार ने मुझे धोखा तो नहीं दिया है। तीसरा सेब निकाला। वह सड़ा तो न था; मगर एक तरफ दबकर बिल्कुल पिचक गया था। चौथा देखा। वह यों तो बेदाग था; मगर उसमें एक काला सुराख था, जैसा अक्सर बेरों में होता है। काटा तो भीतर वैसे की धब्बे दिखाई दिए जैसे कि सड़े बेर में होते है। एक सेब भी खाने लायक नहीं। चार आने पैसों का इतना गम न हुआ, जितना समाज के इस चारित्रिक पतन का। दुकानदार ने जान-बूझकर मेरे साथ धोखेबाजी का व्यवहार किया। एक सेब सड़ा हुआ होता, तो मैं उसको क्षमा के योग्य समझता। सोचता, उसकी निगाह न पड़ी होगी। मगर चारों-के-चारों खराब निकल जाएँ, यह तो साफ धोखा है। मगर इस धोखे से मेरा भी सहयोग था। मेरा उसके हाथ में रुमाल रख देना मानो उसे धोखा देने की प्रेरणा थी। उसने भाँप लिया कि यह महाशय अपनी आँखों से काम लेने वाले जीव नहीं हैं और न इतने चौकस हैं कि घर से लौटाने आएँ। आदमी बेईमानी तभी करता है, जब उसे अवसर मिलता है। बेईमानी का अवसर देना, चाहे वह अपने ढीलेपन से हो या सहज विश्वास से, बेईमानी में सहयोग देना है। पढ़े-लिखे बाबुओं और कर्मचारियों पर तो अब कोई विश्वास नहीं करता। किसी थाने, कचहरी या म्यूनिसिपलिटी में चले जाइए, आपकी ऐसी दुर्गति होगी कि आप बड़ी-से-बड़ी हानि उठाकर भी उधर न जाएँगे। व्यापारियों की साख अभी तक बनी हुई थी। यों तौल में चाहे छटाँक-आध छटाँक कम कर लें; लेकिन आप उन्हें पाँच की जगह भूल से दस का नोट दे आते थे, तो आपको घबराने की कोई जरूरत न थी। आपके रुपये सुरक्षित थे।

मुझे याद है, एक बार मैंने मुहर्रम के मेले में एक खोमचेवाले से एक पैसे की रेवड़ियाँ ली थीं और पैसे की जगह अठन्नी दे आया था। घर आकर जब अपनी भूल मालूम हुई, तो खोमचेवाले के पास दौड़ा गया। आशा नहीं थी कि वह अठन्नी लौटाएगा, लेकिन उसने प्रसन्नचित्त भाव से अठन्नी लौटा दी और उलटे मुझसे क्षमा माँगी। यहाँ कश्मीरी सेब के नाम से सड़े हुए सेब बेचे जाते हैं! मुझे आशा है, पाठक बाजार में जाकर मेरी तरह आँखें बंद न कर लिया करेंगे, नहीं तो उन्हें भी कश्मीरी सेब ही मिलेंगे।

लेखक परिचय

'कलम के सिपाही' प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस के निकट लमही गाँव में हुआ था। इनका मूल नाम धनपतराय था। बचपन में इन्हें नवाबराय भी कहा जाता था। इन्होंने 300 से अधिक कहानियाँ लिखीं। इनके प्रमुख उपन्यास- 'गबन', 'गोदान', 'निर्मला', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'सेवासदन' आदि हैं। इनकी प्रमुख कहानियाँ- 'ईदगाह', 'नमक का दरोगा', 'पंच परमेश्वर', 'कफन', 'बड़े घर की बेटी' आदि हैं। प्रेमचंद की मृत्यु 8 अक्टूबर, 1936 को हुई थी।

शब्द-अर्थ

चौक	—	चौराहा	**मेवाफरोश**	—	फल, मेवा आदि बेचने वाले दुकानदार
शिक्षित समाज	—	पढ़े-लिखे लोग	**लँगड़ा, दशहरी, अल्फाँसो**	—	आम के प्रकार (प्रजातियाँ)
कायदा	—	नियम	**चारित्रिक पतन**	—	चरित्र का पतन होना
धोखेबाजी	—	धोखा देना	**क्षमा**	—	माफी
योग्य	—	लायक	**चौकस**	—	जागरुक
कचहरी	—	अदालत	**म्यूनिसिपलिटी**	—	नगरपालिका/नगर निगम
दुर्गति	—	बुरा हाल	**हानि**	—	नुकसान
साख	—	इज़्ज़त	**प्रसन्नचित्त**	—	प्रसन्न मन से

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) क्या देखकर लेखक का जी ललचा गया?

(ख) आज शिक्षित समाज में किस चीज़ पर विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है?

(ग) लेखक के अनुसार किस फल की टक्कर का दूसरा फल संसार में नहीं है?

(घ) चुने हुए कश्मीरी सेब के नाम पर दुकानदार ने कैसे सेब दिए?

लिखित

1. पाठ्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

आदमी बेईमानी तभी करता है, जब उसे अवसर मिलता है। बेईमानी का अवसर देना, चाहे वह अपने ढीलेपन से हो या सहज विश्वास से, बेईमानी में सहयोग देना है। पढ़े-लिखे बाबुओं और कर्मचारियों पर तो अब कोई विश्वास नहीं करता। किसी थाने या कचहरी या म्यूनिसिपलिटी में चले जाइए, आपकी ऐसी दुर्गति होगी कि आप बड़ी-से-बड़ी हानि उठाकर भी उधर न जाएँगे। व्यापारियों की साख अभी तक बनी हुई थी। यों तौल में चाहे छटाँक-आध छटाँक कम कर लें; लेकिन आप उन्हें पाँच की जगह भूल से दस का नोट दे आते थे तो आपको घबराने की कोई जरूरत न थी।

(क) आदमी बेईमानी कब करता है?

_____

_____

(ख) लोग किसी थाने, कचहरी या म्यूनिसिपलिटी में जाने से क्यों कतराते हैं?

_____

_____

(ग) व्यापारियों की साख अभी तक क्यों बनी हुई थी?

_____

_____

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) गाजर को मेजों पर स्थान क्यों मिलने लगा है?

(ख) हमें डॉक्टर के पास जाने से बचने के लिए क्या करना चाहिए?

(ग) पाठ में आम की कौन-कौन सी किस्में बताई गई हैं?

(घ) दुकानदार ने लेखक से क्या कहा?

(ङ) लेखक सेब खाने के लिए प्रात:काल ही क्यों निकाले?

(च) लेखक को पाठकों से क्या आशा है?

(छ) ''आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों में विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है।''– तात्पर्य समझाइए।

(ज) प्रात:काल लेखक ने जब खाने के लिए सेब निकाले, तो उसने क्या देखा?

(झ) 'समाज का चारित्रिक पतन' के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते हैं?

(ञ) दुकानदार ने लेखक के बारे में क्या भाँप लिया था?

(ट) ''आदमी बेईमानी तभी करता है, जब उसे अवसर मिलता है।''– इस बारे में अपने विचार लिखिए।

(ठ) मुहर्रम के मेले में लेखक के साथ कौन-सी घटना घटी?

भाषा-ज्ञान

1. दिए गए उचित वर्ण-विच्छेद पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) शिक्षित

☐ श् + इ + क् + ष् + इ + त् + अ

☐ श् + ई + क् + श् + इ + त् + अ

(ख) ज्ञान

☐ ज + ञ् + आ + न् + अ

☐ ग् + ञ् + अ + न् + अ

(ग) चारित्रिक

☐ च् + आ + इ + र् + त् + र् + ई + क

☐ च् + आ + र् + इ + त् + र् + क् + अ

(घ) श्रमिक

☐ श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ

☐ ष् + र् + अ + म् + ई + क् + अ

2. नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) आदमी – _____

(ख) प्रसन्न – _____

(ग) प्रात:काल – _____

(घ) निगाह – _____

3. विलोम शब्द लिखिए–

(क) शिक्षिका × _____

(ख) खुश × _____

(ग) प्रात:काल × _____

(घ) बेईमानी × _____

(ङ) सुरक्षित × _____

(च) सहयोग × _____

(छ) दुर्गति × _____

(ज) आवश्यक × _____

4. विदेशी ध्वनियाँ – हिंदी की शब्दावली में उर्दू यानी अरबी, फारसी और अंग्रेजी भाषा में अनेक शब्द हैं, जो मूल रूप में हिंदी में स्वीकृत किए जा चुके हैं। जैसे–

फ़ारसी – आराम, आमदनी, उम्मीद आदि।

अरबी – अमीर, अदा, असर, आदत आदि।

अंग्रेजी – टिकट, थियेटर, स्लेट, अपील, कंपनी आदि।

(क) उर्दू के कुछ शब्दों में 'ज' और 'फ' की ध्वनियों को नुक्ता लगाकर लिखा जाता है, जैसे–

ज़ – कागज़, ज़िला, आवाज़, बाज़ार आदि।

फ़ – लिफ़ाफ़ा, काफ़ी, सफ़ाई आदि।

(ख) अंग्रेजी की अर्धविवृत ध्वनि 'ओ' का प्रयोग जिन शब्दों में होता है, उनका लेखन अर्धचंद्राकार (ॉ) के रूप में किया जाता है। जैसे – डॉक्टर, बॉल, हॉल आदि।

पाठ में आए पाँच ऐसे शब्द लिखिए, जिनमें विदेशी ध्वनियों का प्रयोग किया गया हो–

_____ _____ _____

_____ _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **उपभोक्ता अदालतों की कार्य प्रणाली पर एक प्रस्तुतीकरण तैयार कीजिए।**
- **अपने रिहायशी क्षेत्र के उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करने हेतु एक शैली निकालिए। उन्हें बताइए कि वे अपनी किसी भी उपभोक्ता संबंधी समस्या के लिए हेल्पलाइन नंबर– 1800-11-4000 फोन करके बात कर सकते हैं। यह नि:शुल्क टेलीफोन लाइन है।**

बूढ़े बच्चे

5

गलियों से गले मिलती गलियाँ हैं।
गलियाँ ही गलियाँ हैं,
गलियों में महकती पूरी दुनिया है।
गलियों में बच्चे हैं,
बच्चे ही बच्चे हैं,
बच्चे दर बच्चे हैं,
बच्चों में बँटे हुए बच्चे हैं,
तथाकथित बच्चों से कटे हुए बच्चे हैं।
बच्चे क्यों कहें इनको,
बच्चे ये जवान हैं,
बच्चे ये बूढ़े हैं
ज़िंदगी की इत्र-सैंट,
खुशबू नहीं हैं ये,
ज़िंदगी के कूड़े हैं।
बच्चे ये जवान हैं।
बच्चे ये बूढ़े हैं।
जिल्दसाज़, करखंदार,
फेरीवाले, चूड़ीवाले,
फलवाले, ठेलेवाले,
शरबत, पतंगवाले,
पॉलिशवाले, मालिशवाले,
जरदोजी, कढ़ाईवाले,
भिश्ती हैं, दर्ज़ी हैं,
पंसारी हैं, नाई हैं,
खींच रहे गाड़ी हैं
या फिर कबाड़ी हैं।

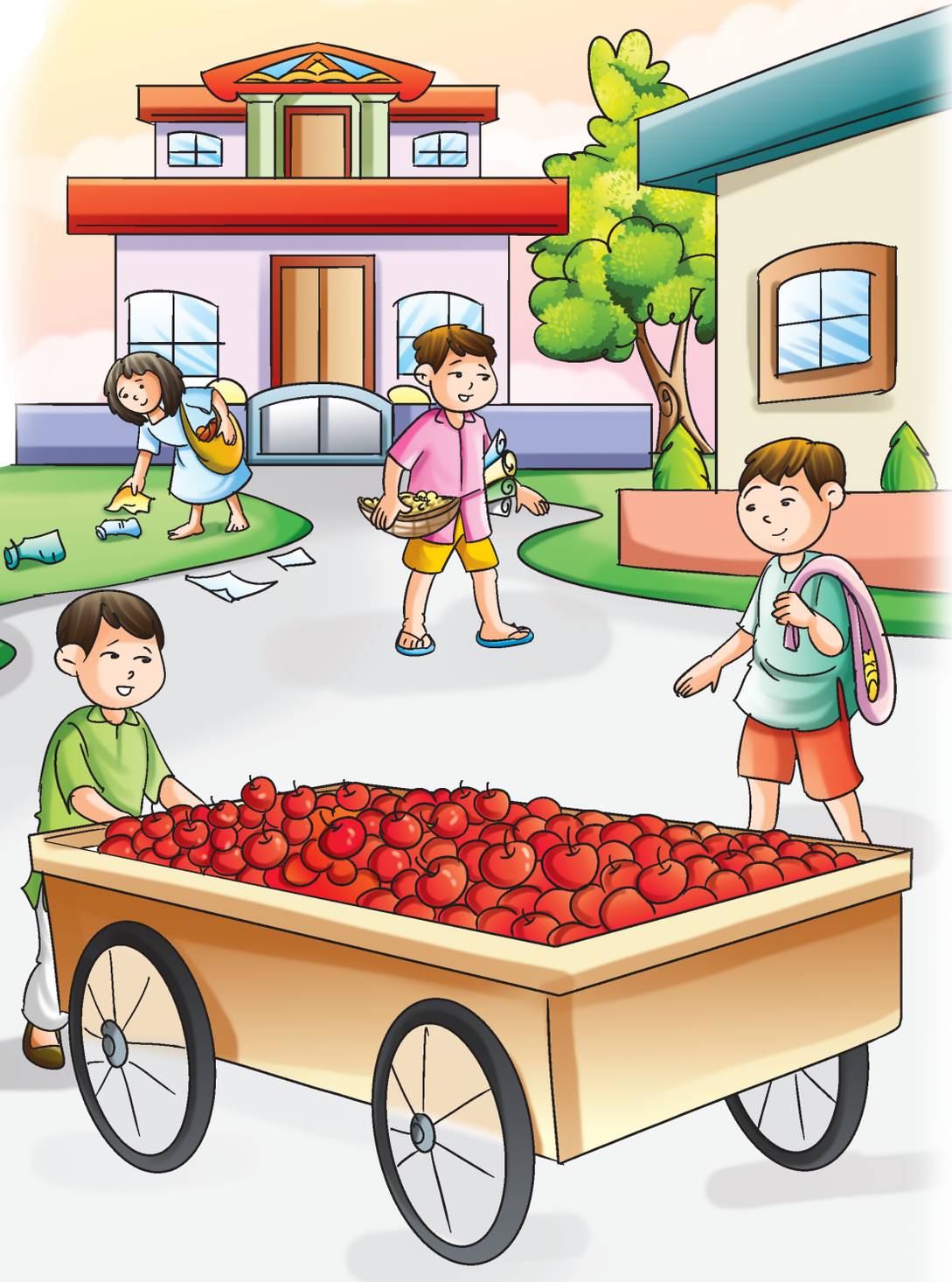

बरक कूटते हैं ये,
मिठाई भी बनाते हैं,
बावर्ची हैं, दिन भर
रोटियाँ पकाते हैं।
ये बच्चा इंक ब्वॉय,
ये रिक्शा खींचता है।
घर भर को सींचता है।
वह जो मोटे-मोटे ग्रंथों, कहानी पर,
इतिहास-भूगोल, गीता-कुरान पर,
अंकगणित, बीजगणित, ज्ञान-विज्ञान पर
गोंद-लेई गत्ते से,
जिल्दें चढ़ाता है।
दिन भर की मेहनत के बाद क्या पाता है?
सुबह से शाम तक कागज़ मोड़े,
यही उसकी ज़िंदगी का आखिरी मोड़ है।
यही उसके अतीत का घटाना है,
यही उसके भविष्य का जोड़ है।
और वह जो लीथे पर,
इनके या उनके भाषण की खबरवाला,
लाल-नीले रंगों में,
पोस्टर निकालता है।
वह खुद लाल-नीली स्याही से पुता,
पोस्टर बना खड़ा है,
क्या आपने कभी इस पोस्टर को पढ़ा है?
वह जो काटता है, वह जो सीता है,
वह जो कूटता है, वह जो पीसता है,
वह जो मढ़ता है, वह जो चढ़ाता है,
वह जो ढोता है।
वह जो इस सबके बावज़ूद
रोता नहीं लेकिन
काम करता है।

पूरी नींद सोता नहीं लेकिन,
वह कोमल फूल-सा नहीं है।
वह रंगीन सपना भी नहीं है, माफ़ करना,
उसको अपने आप पर भरोसा है,
उसका कोई अपना नहीं है, माफ़ करना।
खेल के मैदान करें नहीं हैं।
कारखाने और कोठियाँ हैं सिर्फ़,
खिलौने और टॉफ़ियाँ नहीं हैं।
मेहनत की रोटियाँ हैं सिर्फ़।
वह बाप के लिए
हकीम से दवाई लाता है।
दो दिन की कमाई से वह,
बहन के लिए दुपट्टा लाता है।
वह तीन पैसे में,
दादी के हाथों को जलता देख,
चिमटा खरीदकर लाता है,
खिलौनों के लिए नहीं ललचाता है।
नैतिक शिक्षको,
देश के रक्षको,
इस फ़सल को नष्ट होने से पहले बचाओ।
और,
समय से पहले हो गए
इन बूढ़ों को बच्चा बनाओ।

–अशोक चक्रधर

शब्द-अर्थ

तथाकथित — जैसा कहा या माना जाता है
जरदोज़ी — जरी से कढ़ाई की कला
पंसारी — मसाले आदि बेचने वाला
ललचाना — अधीर होना
जिल्दसाज़ — जिल्द बाँधनेवाला
भिश्ती — पानी भरकर लाने वाला
बरक — वर्क, सोने-चाँदी की पतली परत, जिसे मिठाई पर चिपकाया जाता है

दुपट्टा – चुन्नी

इंक ब्वॉय – छापेखाने में जो स्याही भरते हैं

लीथो – छपाई के पुराने तरीके का नाम

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) 'बूढ़े बच्चे' कविता के कवि कौन हैं?

(ख) प्रस्तुत कविता द्वारा कवि ने समाज की किस विसंगति को उजागर किया है?

(ग) ज़िल्दें चढ़ाने में किस-किस सामग्री का प्रयोग होता है?

(घ) श्रम करनेवाले बच्चों को कवि ने ज़िंदगी का कूड़ा क्यों कहा है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) गलियों से क्या गले मिलती हैं?

☐ गलियाँ ☐ चुनरियाँ

☐ चूड़ियाँ ☐ फलियाँ

(ख) गलियों में क्या महकती है?

☐ रोटियाँ ☐ पूरियाँ

☐ दुनिया ☐ फूल

(ग) रोटियाँ कैसी हैं?

☐ बासी ☐ छोटी

☐ मेहनत की ☐ बड़ी

(घ) बच्चा दादी के जलते हाथों को देखकर क्या खरीदकर लाता है?

☐ रूमाल ☐ चिमटा

☐ दवाई ☐ तवा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) प्रस्तुत कविता में किन-किन कार्यों के बारे में बताया गया है, जो बच्चे करते हैं?

(ख) कवि ने इन बच्चों के लिए 'तथाकथित' शब्द का प्रयोग क्यों किया है?

(ग) कवि ने कविता का शीर्षक 'बूढ़े बच्चे' क्यों रखा है? क्या आप कविता का कोई अन्य शीर्षक बता सकते है?

(घ) इन बच्चों का जीवन अमीर बच्चों से किस प्रकार भिन्न है?

(ङ) इन बाल श्रमिकों के लिए हम क्या कर सकते हैं?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों की वर्तनी सुधारकर लिखिए–

(क) परिक्षा – _____ (ख) आमनत्रित – _____

(ग) कार्यकर्म – _____ (घ) परिनाम – _____

(ङ) शताब्दि – _____ (च) छमा – _____

(छ) पित्रहीन – _____ (ज) मेढक – _____

(झ) नस्ट – _____ (ञ) विग्यान – _____

2. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए–

संज्ञा		विशेषण	संज्ञा		विशेषण
(क) गरीबी	–	_____	(ख) भीख	–	_____
(ग) विष	–	_____	(घ) धर्म	–	_____
(ङ) बुढ़ापा	–	_____	(च) ईर्ष्या	–	_____
(छ) भारत	–	_____	(ज) सम्मान	–	_____
(झ) शिक्षा	–	_____	(ञ) नीति	–	_____

3. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग, प्रत्यय और मूल शब्द छाँटिए।

	उपसर्ग	प्रत्यय	मूल शब्द
(क) स्वतंत्रता –	_____	_____	_____
(ख) अपमानित –	_____	_____	_____
(ग) सुगंधित –	_____	_____	_____
(घ) अनुपयोगी –	_____	_____	_____
(ङ) खुशनसीबी –	_____	_____	_____
(च) अनुपजाऊ –	_____	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) बच्चों के लिए चलाए जा रहे कुछ स्वयंसेवी संगठनों (NGO) का पता लगाइए तथा उनकी कार्यप्रणाली के बारे में पता करके लिखिए।

(ख) 'बाल श्रमिक' पर एक आलेख लिखिए। उसमें बाल-श्रम के कारण व निवारण पर भी अपना पक्ष रखिए। इसके लिए आप इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

(ग) बाल-श्रम कानूनों पर एक रिपोर्ताज तैयार कीजिए।

(घ) यदि आप अपने आस-पास किसी छोटे बच्चे का बचपन बरबाद होते देखें तो आप उसका बचपन बचाने के लिए क्या प्रयास करेंगे?

(ङ) अपने आस-पास के बाल श्रमिकों की सूची बनाइए। उनके कार्यों के प्रकार एवं वेतन भी लिखिए।

गुफाओं की कला

6

मानव न जाने कब और कैसे कलाकार बना होगा? शायद कभी उसने स्वयं की परछाईं देखकर चित्र उकेरना सीखा होगा या गीली मिट्टी अथवा बालू में पड़े हाथों–पैरों या जानवरों के पंजों के निशानों ने उसके भीतर के कलाकार को कुछ रचना करने के लिए प्रेरित किया होगा।

भोजन और आवास की मूलभूत आवश्यकता के सुलझ जाने के पश्चात्, जीवन के किसी ऐसे क्षण में, जब मनुष्य की उच्चस्तरीय आवश्यकताएँ जाग्रत हुई होंगी तो उसे स्वयं को अभिव्यक्त करने की आवश्यकता का अनुभव हुआ होगा...! वहीं किसी ऐसे ही उदात्त क्षण में उसकी कल्पना ने एक रचनाकार को जन्म दिया होगा और उसने आस–पास उपलब्ध सामग्री द्वारा ही एक चित्र उकेर लिया होगा। शायद यहीं से चित्र बनाने की परंपरा की शुरूआत हुई होगी। उसने कभी आत्मतुष्टि के लिए चित्र बनाए होंगे, कभी संप्रेषण के लिए तो कभी अपनी सौंदर्यपरक वृत्तियों के कारण।

शिकार की खोज में जंगल–जंगल भटकता मानव जब प्राकृतिक गुफाओं, शैलाश्रयों में रहने लगा होगा, तब उसे वह स्थान वर्षा, तूफान, गर्मी, सर्दी और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से बचाने वाला अधिक सुरक्षित व सुविधाजनक प्रतीत हुआ होगा। तब मानव के सौंदर्य बोध ने उसे एक नई दृष्टि दी होगी और उसने अपनी इन गुफाओं की शिलाओं को चित्रों से सजा दिया होगा। यहीं से शुरू हो गई गुफाओं की शिलाचित्र की परंपरा।

गुफाओं और चट्टानों में बनाए मनोहारी चित्रों के उदाहरण हमें मध्य प्रदेश के भीमबेटका और पंचमढ़ी में मिलते हैं। भीमबेटका के शिलाचित्र मुख्यतः लाल और सफेद रंगों के प्रयोग से बने हैं। उनमें कहीं–कहीं– हरे, पीले रंग का प्रयोग भी किया गया है। यह अनुमान है कि चमकदार हरे रंग के लिए ताँबे के यौगिक का प्रयोग किया गया होगा तथा लाल, पीले, नारंगी और भूरे रंगों के लिए लोहे के ऑक्साइड तथा सफेद रंग के लिए चूने के पत्थरों से रंग प्राप्त किया होगा। भीमबेटका के शिलाचित्रों में मुख्यतः मनुष्य की प्रतिदिन की दिनचर्या की झलक दिखाई पड़ती है–यथा आखेट, नृत्य, घुड़सवारी के दृश्य, जानवरों की लड़ाई, हाथियों की सवारी, शहद निकालने, सजने–सँवरने तथा घर–परिवार के विभिन्न संदर्भ आदि। जानवरों में मुख्यत : शेर, चीते, हाथी, जंगली भालू, छिपकली का चित्रांकन बहुतायत से किया गया है। ये सभी चित्र अलग–अलग काल के हैं। इसके अतिरिक्त उस काल में प्रचलित रहे विभिन्न प्रकार के शुभ चिह्नों को भी चट्टानों में उकेरा गया है। सबसे बड़ी हैरानी की बात है कि हजारों सालों के बाद भी ये शिलाचित्र धूमिल नहीं

हुए हैं। शायद इसलिए कि इनमें प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया गया था और वे आज भी अपनी भी गाथा सुना रहे हैं। ये समय के उस इतिहास का गौरव प्रदर्शित कर रहे हैं जब अभावों और संघर्षों के बीच कला प्रस्फुटित हुई और यही कारण है कि भीमबेटका के शिलाचित्रों को विश्व सांस्कृतिक धरोहर होने का गौरव प्राप्त है।

प्राकृतिक गुफाओं में रहने के पश्चात् मानव ने प्रगति की और कालांतर में खोदने और पत्थरों पर आघात कर सकने वाले हथियारों का निर्माण कर अपनी आवश्यकता के अनुसार बड़ी, आरामदायक और सुरक्षित गुफाओं का निर्माण किया। इन गुफाओं को काट-काटकर आकार देते-देते उसने अनेक प्रकार की मूर्तियों और नक्काशियों को भी इन चट्टानों में चित्रित कर दिया। पहाड़ों को काटकर जंगलों के बीच ऊँचे स्थानों में बनाई ये गुफाएँ एकांत स्थान होने के कारण चिंतन, मनन और योग के स्थल के रूप में प्रयुक्त की जाने लगीं और अनेक धार्मिक संप्रदायों ने इनका भरपूर उपयोग किया।

मध्य प्रदेश के विदिशा के समीप उदयगिरि की गुफाएँ निर्मित की गईं जिनमें गुप्तकालीन मूर्तिकला की भरपूर झलक दिखाईं पड़ती है। किंतु इसके साथ-साथ इन गुफाओं की विशेषता यह भी है कि मंदिर निर्माण की तकनीक का प्रारंभिक प्रयोग इन्हीं गुफाओं में किया गया। इन गुफाओं में धार्मिक समभाव का प्रत्यक्ष उदाहरण देखने को मिलता है जिनमें जैन और हिंदू (शैव, वैष्णव और शक्ति) सभी प्रकारों के मंदिरों का निर्माण हुआ है। इस प्रकार गुफाओं की कला परंपरा यह भी प्रदर्शित करती है कि किस प्रकार से धर्म और कला का चोलीदामन का साथ है। उदयगिरि की गुफाओं की सर्वाधिक प्रसिद्ध मूर्ति नृवराह अवतार की है। यह विश्वविख्यात प्रतिमा है जिसमें प्रतिमा का शरीर मानव का है किंतु उसका मुख वाराह का है जिसके नथुने में पृथ्वी स्थित दिखाई गई है। कहा जाता है कि जब हिरणयाक्ष दैत्य पृथ्वी को रसातल में ले गया था तब पृथ्वी का उद्धार नृवराह अवतार द्वारा हुआ था। इस प्रतिमा की पृष्ठभूमि में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गंगा, यमुना, ऋषि-मुनि, नवग्रह आदि अंकित हैं जो नृवराह के अलौकिक कृत्य पर अपना हर्ष व्यक्त करते हुए दैवीय आशीर्वाद दे रहे हैं। गुप्तकाल की कला का यह सर्वोत्तम नमूना उदयगिरि की आठवीं गुफा में स्थित है।

मध्य प्रदेश के अलावा उदयगिरि पर्वत उड़ीसा में भुवनेश्वर के निकट भी है। यहाँ भी उदयगिरि और खंडगिरि में कई गुफाएँ निर्मित की गई थीं। उदयगिरि अर्थात् सूर्योदय की पहाड़ी में भी जैन धर्म के प्रचारकों द्वारा अनेक गुफाओं का निर्माण किया गया था।

किंतु जैन धर्म के साथ-साथ इन गुफाओं में हिंदू देवताओं की प्रतिमाएँ भी हैं। उदाहरण के लिए यहाँ एक गणेश गुफा भी है जिसमें हाथी के सिर वाले गणेश की मूर्ति निर्मित की गई है। यहाँ की सभी गुफाओं में कला की सुंदर झलक दिखाई पड़ती है। कहीं सुंदर नक्काशियाँ हैं, तो कहीं हाथियों के विध्वंसकारी समूह और भयभीत बंदरों के दृश्य, तो कहीं पर युद्ध के दृश्य और सुंदर स्त्रियों के चित्र भी अंकित हैं। इन गुफाओं को विभिन्न नामों द्वारा जाना जाता है- यथा रानी गुफा, गणेश गुफा,

पावन गुफा, सर्प गुफा, हाथी गुफा, स्वर्गपुरी अनंत गुफा, तोता गुफा आदि। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, जहाँ हाथी गुफा में जंगल में वृक्षों के पीछे से आते हुए अनेक हाथियों के दृश्य चित्रित हैं वहीं तोता गुफा में अनेक प्रकार के पक्षियों को सुंदरता से चित्रित किया गया है। उदयगिरि की ही तरह खंडगिरि की गुफाओं का भी जैनमठ के रूप में उपयोग किया जाता रहा था।

बौद्ध धर्म के प्रचारकों द्वारा निर्मित कला का सर्वोत्कृष्ट रूप अजंता की गुफाओं में दिखाई पड़ता है। औरंगाबाद से लगभग 100 किलोमीटर दूर स्थित इन गुफाओं को देखकर सभी स्तंभित हो जाते हैं। पहाड़ियों को काटकर बनाई विशाल गुफाएँ जिनमें न केवल बुद्ध के जीवन से संबंधित जातक कथाएँ चित्रित हैं, बल्कि भगवान बुद्ध की विशालकाय मूर्तियाँ, उन मूर्तियों का सौष्ठव, सौंदर्य और भाव-भंगिमाएँ देखकर दर्शक अंचभित रह जाते हैं।

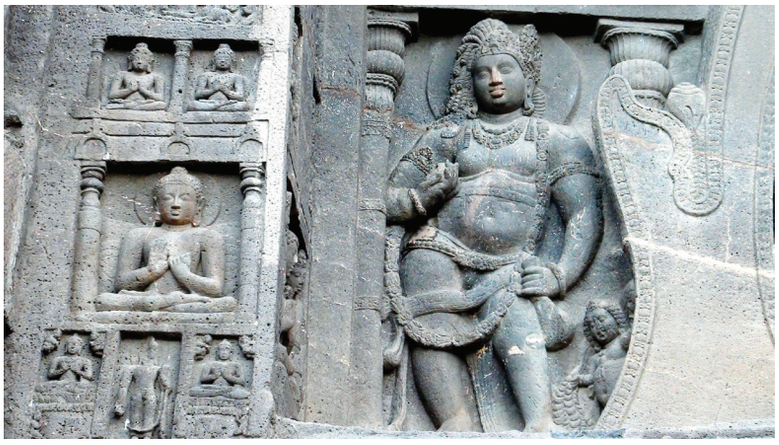

गुफाओं में सुंदर नक्काशी वाले स्तंभ, अभूतपूर्व चित्र, मूर्तियाँ और बुद्ध की अनेक प्रतिमाएँ हैं। अजंता की गुफाओं का निर्माण बौद्ध भिक्षुओं के निवास स्थान के रूप में जिन्हें 'विहार' कहा जाता था तथा उपासना गृह के रूप में जिन्हें 'चैत्य' कहते थे, हुआ था। बुद्ध की प्रतिमाओं के मध्य का पवित्र वातावरण उनके ध्यान के सर्वथा उपयुक्त था। अजंता की गुफाएँ इस प्रकार निर्मित की गई हैं कि यहाँ प्राकृतिक प्रकाश स्वतः ही पहुँचता है और विभिन्न मूर्तियों को अभूतपूर्व भाव प्रदान करता है। अजंता की गुफाओं के संबंध में काफी समय तक जानकारी नही थीं। इनकी जानकारी संयोगवश एक अंग्रेजी सैन्य टुकड़ी द्वारा हुई जो उस ओर गश्त लगा रही थी। उसके पश्चात् अनेक शोधकर्ताओं, इतिहासकारों ने भारत की इस प्राकृतिक चित्र गैलरी के रहस्य की खोज करने में यथेष्ट रुचि दिखाई। महायान पंथ के अनुयायी बौद्ध भिक्षुओं द्वारा जो भगवान बुद्ध के मूर्ति पूजन में विश्वास रखते थे, कला और सौंदर्य का यह विलक्षण उदाहरण, जहाँ एक ओर बुद्ध के शिष्यों की अनन्य भक्ति का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करता है, वहीं कला की प्रति उनकी ऊँची परख और सौदर्यपरक दृष्टि का प्रमाण भी देता है। औरंगाबाद से लगभग 30 किलोमीटर दूर एलोरा की गुफाएँ हैं। इन ऐतिहासिक गुफाओं को राष्ट्रीय स्मारक निधि की संज्ञा दी गई है और गुफाओं की कला के सर्वोत्तम उदाहरण और प्रतीक रूप में इनका उल्लेख किया जाता है। एलोरा की गुफाओं में चट्टानों को काटकर हिंदू मंदिर, बौद्ध विहार और जैन मठ निर्मित किए गए हैं, जो धार्मिक समन्वय का सर्वोत्तम उदाहरण है। पाँचवी और दसवीं शताब्दी के मध्य भारत, कला के उच्चतम शिखर पर तो था ही, सर्वधर्म समभाव का विलक्षण उदाहरण भी था। इन गुफाओं में बौद्ध गुफाएँ सबसे पुरानी हैं जिनमें मुख्यतः विहार थे।

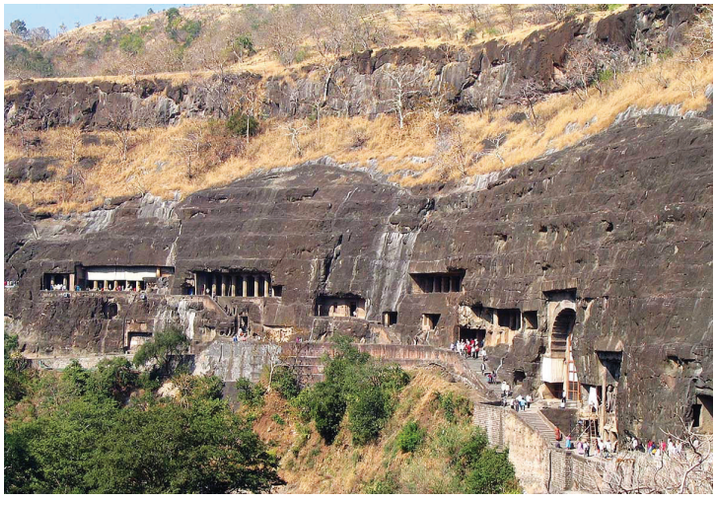

इनमें निवास के अतिरिक्त बुद्ध बोधिसत्व और बुद्ध के अन्य अवतारों की सुंदर प्रतिमाएँ बनी हैं। इन गुफाओं की नक्काशी और मूर्तियाँ इस प्रकार की हैं कि वे पत्थरों के स्थान पर लकड़ी की बनी प्रतीत होती हैं। हिंदू गुफाओं का निर्माण बौद्ध गुफाओं के पश्चात् के समय का है। एलोरा के स्मारकों में सबसे महत्त्वपूर्ण कैलाश मंदिर है जोकि चट्टान को तराशकर बनाया गया है। इनको देखकर कलाकारों की दक्षता और

रचनात्मकता का कायल हुए बिना नहीं रहा जा सकता। नृत्य करते नटराज की प्रतिमा, चट्टानों पर शिव विवाह का दृश्य, कैलाश पर्वत में बैठे शिव-पार्वती, नंदी बैल की प्रतिमा आदि कुछ ऐसे उदाहरण है जिनका विलक्षण सौंदर्य हमें बाँध लेता है। नक्काशीदार स्तंभ, दीवारों पर उकेरे दृश्य सभी अभिभूत करने वाले हैं।

जैन गुफाओं का निर्माण जैन धर्म की परंपरा और सोच के अनुरूप हुआ था। इन गुफाओं में पवित्र तपोमय अनुभूति होती है। साथ-साथ इनमें कला अपने उच्चतम उत्कर्ष पर दृष्टिगत होती है। कुछ उल्लेखनीय जैन गुफाएँ हैं- जगन्नाथ सभा, छोटा कैलाश, इंद्रसभा आदि। इंद्रसभा में गुफा के शीर्षस्थ में नक्काशी किए कमल के फूल का सौंदर्य हमें न केवल सम्मोहित करता है बल्कि उसके निर्माण संबंधी जोखिम से चमत्कृत भी कर देता है। अन्य गुफा में अंबिका यक्षी एक आम के वृक्ष के नीचे अपने सिंह में आसीन बनाई गई हैं। सभी जैन गुफाओं में चित्रों और निर्मित आकृतियों का विस्तार से चित्रण हुआ है। ये सभी गुफाएँ भारतीय शिल्प और कला की उच्चतम उपलब्धि का बेमिसाल उदाहरण हैं।

कला के गौरव के रूप में यूनेस्को द्वारा विश्वस्मारक निधि घोषित की गई ऐलीफेंटा की गुफाएँ भी बेजोड़ हैं। मुंबई के समीप, अरब सागर में स्थित ऐलीफेंटा टापू पर निर्मित इन गुफाओं में गुप्तकाल की कला स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है जहाँ शिव की विलक्षण प्रतिमाएँ हैं। ऐलीफेंटा की त्रिमूर्ति शिव की प्रतिमा, नटराज की प्रतिमा, सदाशिव तथा अर्धनारीश्वर की प्रतिमा कुछ ऐसे उल्लेखनीय उदाहरण हैं जहाँ हृदयों को चमत्कृत करने वाली विलक्षण प्रतिमाओं के साथ-साथ नक्काशीदार स्तंभ और दीवारें हैं। त्रिमूर्ति शिव की मूर्ति बीस फुट ऊँची है जो पंचमुखी शिव का रूप है। वस्तुतः ऐलीफेंटा की गुफाओं के मंदिर परिसर को शिव के निवास के रूप में ही पहचाना जाता है।

भारतीय कला की परंपरा में गुफाओं की कला परंपरा न केवल हमें चमत्कृत व अभिभूत करती है, बल्कि उन अज्ञात कलाकारों के सम्मुख हमें नतमस्तक होने को बाध्य भी करती है। हमारे सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक ये विलक्षण गुफाएँ, हर काल में बिना शब्दों के अपने चरमोत्मर्ष की गाथा का उल्लेख कर रही हैं और इन्होंनें विश्व में हमें गौरव से सिर ऊँचा उठाकर चलने योग्य भी बनाया है।

शब्द-अर्थ

संप्रेषण — एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना

विध्वंस — नाश, नष्ट

वृत्तियों — स्वभाव, प्रकृति, कार्य

प्राकृतिक आपदा — प्राकृतिक मुसीबत जैसे भूकंप, बाढ़, तूफान आदि

सौंदर्यपरक — सुंदरता से परिपूर्ण

समन्वय — मिलाप, मिलान

दक्षता — निपुणता

रचनात्मकता — किसी प्रकार की रचना

उकेरना — नक्काशी करना, किसी चीज पर खोदकर बेल-बूटे इत्यादि बनाना

प्रस्फुटित — विकसित, खिला हुआ।

नक्काशी — धातु, पत्थर या काठ पर खोदकर बेल-बूटे बनाने की कला

मनन — चिंतन, सोचना, अच्छी तरह समझकर किया जाने वाला अध्ययन या विचार

संप्रदाय — विशेष धार्मिक मत,परंपरा से चला आया हुआ सिद्धांत या मत

स्तभिंत — चकित, हैरान

भाव-भंगिमाएँ — भाव तथा मुद्राएँ

सौंदर्यबोध — सुंदरता का ज्ञान

मनोहारी — मनमोहक

शीर्षस्थ — मूर्धन्य

कायल — प्रशंसक

धूमिल — हल्की पड़ जाना, धुँधला, काला, धुएँ के रंग का

उदात्त — उदार, उच्च विचारों वाला,श्रेष्ठ, विशद

मूलभूत — असल, किसी वस्तु के मूल या तत्व से संबंध रखने वाला

आत्मतुष्टि — आत्म-संतोष, अपनी संतुष्टि, आत्म-तृप्ति

संदर्भ — प्रसंग, वह परिस्थिति जिसमें कोई घटना घटी हो।

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) मानव को कलाकार बनने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई होगी?

(ख) भीमबेटका कहाँ है?

(ग) गुफाओं का प्रयोग मनुष्य ने किस-किस काम के लिए किया?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए जंगल में भटकने वाले मानव ने कहाँ आश्रय लिया?

☐ गुफाओं को अपना आश्रय बनाया। ☐ पेड़ों के नीचे रहने लगा। ☐ पेड़ो के ऊपर रहने लगा।

(ख) भीमबेटका के शिलाचित्रों को किसका गौरव प्राप्त है?

☐ विश्व स्मारक निधि ☐ राष्ट्रीय स्मारक निधि ☐ विश्व सांस्कृतिक धरोहर

(ग) बौद्ध भिक्षुओं के उपासना गृह को क्या कहा जाता है?

☐ मठ ☐ विहार ☐ चैत्य

(घ) बुद्ध के जीवन की कथाएँ किस गुफा में चित्रित हैं?

☐ अजंता ☐ खंडगिरि ☐ ऐलीफेंटा

2. गलत विकल्प चुनकर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) पहाड़ों के बीच पहाड़ों को काटकर बनाई गई उन एकांत गुफाओं का उपयोग किसके लिए किया गया?

☐ मनन चिंतन के लिए ☐ जानवरों के आश्रय के लिए ☐ योग स्थल के रूप में

(ख) उदयगिरि की गुफाएँ कहाँ-कहाँ स्थित हैं?

☐ मध्य प्रदेश में विदिशा के समीप ☐ उड़ीसा में भुवनेश्वर के निकट

☐ महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट

(ग) उड़ीसा की उदयगिरि की गुफाओं में किस प्रकार का चित्रण है?

☐ जगंल में हाथियों का ☐ पक्षियों के सौंदर्य का ☐ भवनों के चित्र का

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) भीमबेटका के चित्रों में किन-किन जानवरों के चित्र देखने को मिलते हैं?

(ख) अजंता की गुफाओं की खोज किसने की?

(ग) गुप्तकालीन मूर्तिकला किन गुफा मंदिरों में देखने को मिलती है?

(घ) गुफाओं में शिला चित्रकला का आरंभ कैसे हुआ?

(ङ) अजंता की गुफाओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(च) एलोरा के गुफा मंदिर धार्मिक समभाव का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कैसे?

(छ) ऐलीफेंटा की गुफाओं को शिव के निवास रूप में क्यों माना जाता है? वहाँ शिव की कौन-कौन सी प्रतिमाएँ निर्मित की गई हैं?

4. गद्यांश को पढ़कर उत्तर दीजिए।

उदयगिरि की गुफाओं की सर्वाधिक प्रसिद्ध मूर्ति नृवराह अवतार की है। यह विश्वविख्यात प्रतिमा है जिसमें प्रतिमा का शरीर मानव का है किंतु उसका मुख वाराह का है जिसके नथुने में पृथ्वी स्थित दिखाई गई है। कहा जाता है कि जब हिरणयाक्ष दैत्य पृथ्वी को रसातल में ले गया था तब पृथ्वी का उद्धार नृवराह अवतार द्वारा हुआ था। इस प्रतिमा की पृष्ठभूमि में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गंगा, यमुना, ऋषि-मुनि, नवग्रह आदि अंकित हैं, जो नृवराह के अलौकिक कृत्य पर अपना हर्ष व्यक्त करते हुए दैवीय आशीर्वाद दे रहे हैं। गुप्तकाल की कला का यह सर्वोत्तम नमूना उदयगिरि की आठवीं गुफा में स्थित है।

(क) उदयगिरि की सबसे प्रसिद्ध मूर्ति किसकी है?

(ख) नृवराह की मूर्ति की क्या विशेषता है?

(ग) नृवराह का अवतार क्यों हुआ था?

(घ) नृवराह की मूर्ति उदयगिरि की किस गुफा में है।?

(ङ) नृवराह को कौन आशीर्वाद दे रहे है?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे लिखे शब्दों में से गलत पर्याय चुनकर (✗) का चिह्न लगाइए–

स्त्री	–	☐	महिला	☐	वनिता	☐	कामिनी	☐ दामिनी
आपदा	–	☐	मुसीबत	☐	आफत	☐	संकट	☐ पीड़ा
गणेश	–	☐	गण	☐	विनायक	☐	लंबोदर	☐ एकदंत
गुफा	–	☐	गुहा	☐	कंदरा	☐	गुफा	☐ खोह
सफेद	–	☐	श्वेत	☐	धवल	☐	शुभ्र	☐ चाँदनी
युद्ध	–	☐	संग्राम	☐	हथियार	☐	रण	☐ समर

2. नीचे दिए शब्दों के लिए विलोम शब्द चुनकर लिखिए–

ह्रास, साफ, निम्नतम परोक्ष, अप्राकृतिक, विनाश, अपवित्र, सूर्यास्त, अभूतपूर्व, अपकर्ष

पवित्र	–	_____	धूमिल	–	_____
प्रगति	–	_____	प्रत्यक्ष	–	_____
निर्माण	–	_____	उत्कर्ष	–	_____
सूर्योदय	–	_____	उच्चतम	–	_____
अभूतपूर्व	–	_____	प्राकृतिक	–	_____

3. नीचे दिए गए अनेक शब्दों के लिए एक सही शब्द चुनकर (✓) का चिह्न लगाइए–

इतिहास का ज्ञाता	–	☐	इतिहासज्ञ	☐	इतिहासकार	☐	ऐतिहासिक
साहित्य से संबंधित	–	☐	साहित्यिक	☐	साहित्यकार	☐	साहित्यवेत्ता
परंपरा से संबंधित	–	☐	परंपरावादी	☐	परंपरापूर्वक	☐	पारंपरिक
विज्ञान से संबंधित	–	☐	वैज्ञानिक	☐	विज्ञानिक	☐	विज्ञानी
भूगोल से संबंधित	–	☐	भूगोलविद्	☐	भौगोलिक	☐	भूगोलाचार्य
संस्कृति से संबंध रखने वाला	–	☐	सांस्कृतिक	☐	संस्कृतिकार	☐	संस्कृतिविद

क्रियात्मक गतिविधि

- **सार्थक शब्दों का ऐसा शब्द समूह जो हमारे विचारों तथा भावों को प्रकट करता है, वाक्य कहलाता है–**

उदाहरण – हमें अपने देश पर गर्व है।

पानी बरस रहा है।

- **रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते है–**

(क) सरल वाक्य- इसमें एक कर्ता, कर्म और क्रिया होते हैं।

(ख) संयुक्त वाक्य- इसमें दो सरल वाक्य 'लेकिन', 'परंतु', 'और,' 'अथवा', 'यदि' आदि समुच्चयबोधक (योजकों) द्वारा जुड़े होते हैं।

(ग) मिश्र वाक्य- इसमें एक वाक्य प्रधान होता है तथा अन्य वाक्य गौण या आश्रित वाक्य होते हैं।

- **रचना के आधार पर सही वाक्य भेद चुनकर (✓) का चिह्न लगाइए–**

(क) लड़के मैदान में फुटबॉल खेल रहे हैं।

☐ सरल वाक्य ☐ मिश्रित वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य

(ख) बच्चों ने शिक्षक दिवस पर कार्ड बनाए और अपने अध्यापकों को दिए।

☐ सरल वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य ☐ मिश्रित वाक्य

(ग) आकाश में पतंगें उड़ रही हैं।

☐ मिश्रित वाक्य ☐ संयुक्त वाक्य ☐ सरल वाक्य

(घ) मैं तुम्हारे साथ चलता पर कल मेरी परीक्षा है।

☐ संयुक्त वाक्य ☐ सरल वाक्य ☐ मिश्रित वाक्य

जो अव्यय शब्द शब्द या पद के बाद जुड़कर उसके अर्थ को विशेष शक्ति/बल प्रदान करते हैं, उन्हें निपात कहते हैं। उदाहरण– ही, भी, तो, तक, मात्र, नहीं, हाँ, जी आदि निपात हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति उचित निपात द्वारा कीजिए–**

(क) यह बात अपने _____ रखना। (तक, ही, भी)

(ख) तुम्हारे कहने _____ से काम हो जाएगा। (तक, मात्र, तो)

(ग) मुझे आज _____ चेन्नई जाना है। (मात्र, तक, ही)

(घ) मैं _____ तुम्हारी बात से सहमत हूँ। (हाँ, भी, नहीं)

(ङ) तुम चाहे कुछ _____ कहो, समीर बहुत मेहनती है। (हाँ, भी, ही)

एक कहानी–कुछ अनजानी

७

"मैं इक अजब अनोखी नार,
लाल पत्थरों से तैयार!
पाँच मंजिलों का ले भार,
सबसे ऊँची हूँ मीनार।"

बिल्कुल ठीक पहचाना-मैं ही हूँ कुतुब मीनार। लाल पत्थरों से बनी, बिना किसी और सहारे के खड़ी, दुनिया की सबसे ऊँची मीनार। आओ तुम्हें सुनाऊँ अपनी राम-कहानी, कुछ जानी कुछ अनजानी, कुछ नई और कुछ पुरानी।

मेरा जन्म स्थान है दिल्ली। यह तब की बात है जब दिल्ली, दिल्ली नहीं किलाराय पिठौड़ा कहलाती थी। मेरा जन्म आठ सौ साल से भी अधिक समय पहले (सन् 1193 में) किलाराय पिठौड़ा में हुआ था। कुछ बड़े होने पर मैंने जाना कि मेरे जन्म से पूर्व दिल्ली यानी किलाराय पिठौड़ा में राजपूतों का शासन था। उस समय भारत धन-धान्य से भरा पूरा था तथा सोने की चिड़िया कहलाता था। इसीलिए अनेक विदेशी शासकों की आँखें भारत पर गड़ी रहती थीं। तुर्क सम्राट महमूद गजनी के बाद से विदेशी शासकों का भारत आने का सिलसिला शुरू हुआ जो धन की प्राप्ति, साम्राज्य का विस्तार और धर्म का प्रचार करने के उद्देश्य से चलता रहा।

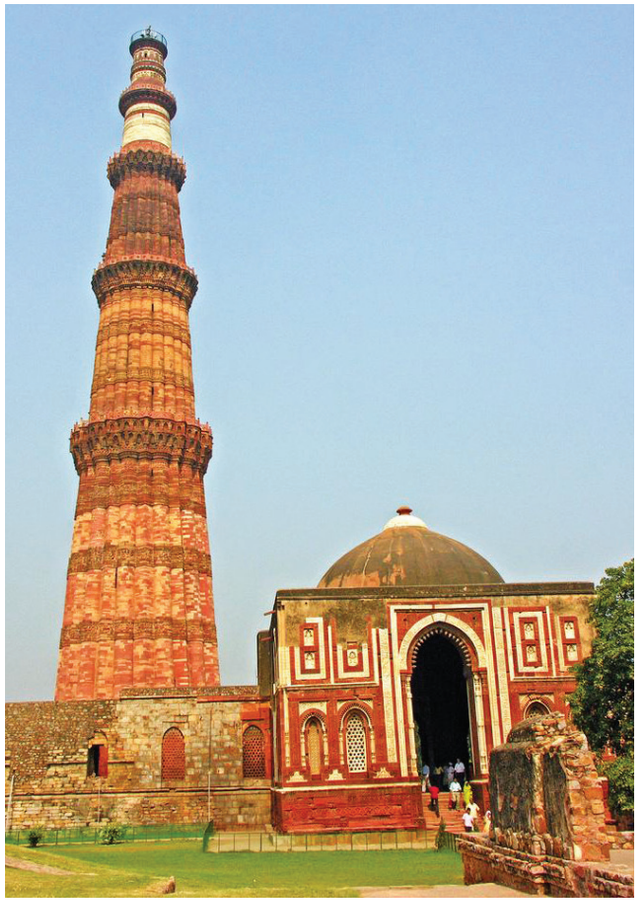

यह तब की बात है जब मध्य एशिया से आए मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान (द्वितीय) के साथ युद्ध कर दिल्ली और अजमेर को जीत लिया। तब उसने अपने गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक को इन राज्यों की देखभाल के लिए प्रशासक नियुक्त कर दिया। मुहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात् कुतुबुद्दीन ऐबक ने स्वयं को दिल्ली का सम्राट घोषित कर दिया। इस तरह दास वंश द्वारा दिल्ली सल्तनत की शुरूआत हो गई। मैं उसी दिल्ली सल्तनत के प्रारंभ की निशानी हूँ..... और यहीं से मेरी कहानी शुरू होती है।

कुतुबुद्दीन ऐबक का विचार था कि 'जो दिल्ली में राज करेगा, भारत का राजा बनेगा।' इसीलिए उसने दिल्ली (किलाराय पिठौड़ा) को अपनी राजधानी घोषित करते हुए सबसे पहले कुब्बतुल इस्लाम मस्जिद बनवाई और अपनी धाक जमाने और शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए मेरा निर्माण करने का निश्चय किया।

इस तरह सन् 1193 में भारत के पहले मुस्लिम दास राजा कुतुबुद्दीन ऐबक के आदेशों द्वारा मेरे निर्माण का काम शुरू हो गया। मुझे पूरा बनने में लगभग दो सदियाँ यानी लगभग दो सौ वर्षों का समय लग गया। इन दो सौ वर्षों में न जाने कितने राजा आए और चले गए किंतु मैं सिर उठाए खड़ी रही। धीरे-धीरे बढ़ती रही, पनपती रही, उठती रही और पीढ़ी-दर-पीढ़ी राजाओं को आते-जाते हुए देखती रही।

मेरा निर्माण प्रारंभ करवाने के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक के कार्यकाल में केवल मेरी पहली मंजिल बन पाई थी। उसके पश्चात् इल्तुतमिश के कार्यकाल में मेरी अगली तीन मंजिलें बनी। अंतिम यानी पाँचवीं मंजिल का निर्माण कार्य सन् 1386 में फिरोजशाह तुगलक के कार्यकाल में पूरा हुआ। मुझे बनाने के लिए लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग किया गया। मेरी सुंदरता को निखारने के लिए चारों ओर सुंदर नक्काशी की गई तथा कुरान की आयतें भी उकेरी गईं।

इस प्रकार मैं पत्थरों और ईंटों से बनी बिना किसी सहारे के खड़ी दुनिया की सबसे ऊँची मीनार बन गई जो कुतुब मीनार के नाम से जानी गई। यह नाम कुतुबुद्दीन ऐबक के नाम पर आधारित था। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि मेरा नाम . फारसी के शब्द 'कुतुब' पर आधारित है, जिसका अर्थ है प्रभुत्व और निष्ठा। इसलिए उनके अनुसार मेरा नाम 'कुतुब मीनार' भारत में अपना प्रभुत्व जताने और धर्म के प्रति अपने विश्वास को प्रदर्शित करने के लिए किया गया था। कारण कोई भी हो जब मेरा निर्माण पूरा हुआ तब मैं एक अद्भुत स्मरणीय इमारत के रूप में विकसित हो चुकी थी।

मेरी लंबाई जानकर तुम्हें हैरानी होगी। मैं 72.5 मीटर लंबी हूँ। मेरे ऊपर तक पहुँचने के लिए 379 सीढ़ियाँ बनी हैं, जो गोलाई से मेरी परिक्रमा करके चढ़ी जा सकती हैं। मेरे इस विशाल आकार को सीधा खड़ा रखने में मेरे सुदृढ़ आधार का बड़ा योगदान है। इसी चबूतरे के ऊपर, गोलाई में बनी मेरी पहली मंजिल खड़ी है। इस पहली मंजिल के आधार का व्यास 14.3 मीटर है। जैसे-जैसे मेरी ऊँचाई बढ़ती है मेरा व्यास कम होता जाता है। मेरी हर मंजिल के बीच में गोलाई से छज्जे बने हुए हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानों किसी अभूतपूर्व सुंदरी ने लाल पत्थरों की झालरदार पोशाक पहनी हो।

मेरे परिसर में दिल्ली की पहली मस्जिद कुब्बतुल इस्लाम मस्जिद हैं मेरे निर्माण में मध्य एशिया की भवन निर्माण तकनीक के साथ-साथ भारतीय भवन निर्माण तकनीक का भी प्रयोग हुआ है। इस तरह से दोनों प्रकार की निर्माण तकनीकों के उत्कृष्ट मेल के कारण, आज इतने वर्षों के बाद भी मैं अभिमान से अपना सिर उठाए खड़ी हूँ और विश्व-भर में अपनी धूम मचा रही हूँ।

मेरे ही समीप, मुझसे भी ऊँची एक और मीनार-अलाई मीनार बनाने की योजना भी थी। किंतु लगभग बारह मीटर की ऊँचाई तक पहुँचते-पहुँचते अचानक उसका निर्माण कार्य बंद कर दिया गया। कारण जो भी हो, मुझे तो बस इस बात की खुशी और संतोष है कि मेरी छोटी बहन मेरे साथ है।

इसके साथ-साथ मैं 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात् पूरा विश्व एक परिवार है के विचार का भी विस्तार कर रही हूँ।

आज जब सभी देशों, धर्मों, वर्गों और समुदायों के लोग प्रतिदिन हजारों की संख्या में मेरे पास आते हैं, तो मेरा सीना गर्व से तन जाता है। मैं खुशी से झूम उठती हूँ जब दर्शकगण, मेरे परिसर में स्थित लौह स्तंभ को देखकर चकित रह जाते हैं कि

डेढ़ हजार वर्ष पुराने इस लौह स्तंभ में आज तक जंग नहीं लगा। तब भी मुझे खुशी मिलती है और इस बात का अभिमान होता है कि मैं भारत के गौरवशाली इतिहास का उल्लेख करने का माध्यम हूँ। बदले में मुझे भी गौरव मिला है। मुझे यूनेस्को द्वारा विश्वदाय स्मारक दी गई है। मैं अपने सभी दर्शकों और प्रशंसकों की आभारी हूँ।

मैं-कुतुब मीनार, समस्त भारतीय संस्कृतियों का अनोखा मेल हूँ। भारत के गौरव की पहचान हूँ और विश्वबंधुत्व की भावना की समर्थक हूँ। इसलिए मुझे शक्ति या प्रभुत्व की निशानी या विजय की कीर्तिस्तंभ न मानकर, मानवता का प्रतीक माना जाता चाहिए। यही है मेरी आत्मकथा यानी राम कहानी .... कुछ अनजानी, कुछ जानी-पहचानी।

शब्द - अर्थ

धन-धान्य	—	धन-दौलत एवं खाद्य पदार्थ	**प्रभुत्व**	—	प्रभुता
सिलसिला	—	क्रम	**छज्जा**	—	बालकनी, दीवार से निकला भाग
साम्राज्य	—	आधिपत्य, पूर्ण प्रभुता	**अभूतपूर्व**	—	जो पहले न हुआ हो, अनोखा
प्रचार	—	चलन, रिवाज, फैलाना	**झालरदार**	—	लहरदार किनारे वाला
उद्देश्य	—	अभिप्राय, प्रायोजन	**अवशेष**	—	शेष भाग
प्रशासक	—	शासन करने वाला	**उल्लेख**	—	वर्णन
सदी	—	सौ वर्षों का समूह	**आभारी**	—	कृतज्ञ
नक्काशी	—	धातु, लकड़ी आदि पर खोदकर बेलबूटे बनाने का काम	**प्रतीक**	—	निशान, चिह्न, लक्षण।

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कुतुब मीनार कहाँ है?

(ख) भारत को 'सोने की चिड़िया' क्यों कहा जाता था?

(ग) मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद कौन दिल्ली का राजा बना?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) किसकी मृत्यु के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने स्वयं को सम्राट घोषित कर दास वंश की शुरूआत की?

☐ पृथ्वीराज चौहान ☐ मुहम्मद गौरी ☐ महमूद गजनी

(ख) कुतुबुद्दीन ऐबक के आदेश से कुतुब मीनार का निर्माण क्यों किया गया?

☐ एक भव्य इमारत का निर्माण करने के लिए

☐ अपना प्रभुत्व जमाने के लिए ☐ लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए

(ग) कुतुबुद्दीन ऐबक के कार्यकाल में कुतुब मीनार की कितनी मंजिलें बन पाई थी?

☐ दो ☐ तीन ☐ एक

(घ) कुतुब मीनार में ऊपर तक पहुँचने के लिए कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं?

☐ 359 ☐ 369 ☐ 379

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कुतुब मीनार किस रंग के पत्थरों से बनी है?

(ख) फिरोजशाह तुगलक के कार्यकाल में कौन-सी मंजिल बनी थी?

(ग) वसुधैव कुटुंबकम् का क्या अर्थ है?

(घ) यूनेस्को द्वारा कुतुब मीनार को क्या मान्यता दी गई है?

(ङ) कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली को अपनी राजधानी क्यों बनाया?

(च) कुतुब मीनार की पाँच मंजिलें किस-किस के शासनकाल में बनीं?

(छ) कुतुब मीनार का सीना गर्व से क्यों तन जाता है?

(ज) लौह स्तंभ की क्या विशेषता है?

भाषा-ज्ञान

1. दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनिए–

पक्ष, दशक, सप्ताह, वर्ष, सहस्त्राब्दी, महीना, शताब्दी, छमाही

(क) सात दिनों का समूह _____

(ख) तीस दिनों का समूह _____

(ग) दस वर्षों का समूह _____

(घ) हजार वर्षों का समूह _____

(ङ) पंद्रह दिनों का समूह _____

(च) बारह महीनों का समूह _____

(छ) सौ वर्षों का समूह _____

(ज) छह महीनों में होने वाला _____

2. रंगीन शब्द के उचित विलोम शब्द द्वारा वाक्य को पूरा कीजिए–

(क) हमारे देश में प्राचीन इमारतों के साथ अनेक _____ इमारतें भी हैं। (नवीन, जीर्ण, नई)

(ख) कुतुब मीनार को देखने देशी ही नहीं _____ पर्यटक भी बहुत संख्या में आते हैं। (स्वदेशी, विदेशी, देशीय)

(ग) रूस एक विकसित देश है पर कुछ देश आज भी बहुत _____ हैं। (विकासमान, अविकसित, विकासशील)

(घ) किसी भी चीज का निर्माण होने में वर्षों लगते हैं पर _____ होने में कुछ पल ही लगते हैं। (विनाश, ध्वंस, नष्ट)

(ङ) कुतुब मीनार जैसी भारत में एक नहीं _____ इमारतें हैं। जो भारत के गौरव की पहचान हैं। (बहुत, असंख्य, अनेक)

3. दिए गए शब्द के गलत पर्याय पर (✗) का चिह्न लगाइए–

गर्व	–	☐	अभिमान	☐	सम्मान	☐	घमंड
विश्वास	–	☐	इरादा	☐	भरोसा	☐	यकीन
पत्थर	–	☐	प्रस्तर	☐	पाषाण	☐	पाखंड
विशेषता	–	☐	खूबी	☐	मशहूर	☐	खासियत
गौरव	–	☐	महिमा	☐	गरिमा	☐	ख्याति

क्रियात्मक गतिविधि

- **भारत की दो ऐसी इमारतों के नाम बताइए जो विश्वदाय स्मारक के अंतर्गत आती हैं? इनका चयन किस आधार पर होता है? (अपनी इतिहास की अध्यापिका से मदद ले सकते हैं।)**
- **अपने राज्य की दो ऐतिहासिक इमारतों का सचित्र वर्णन अपनी परियोजना फाइल में कीजिए।**
- **नीचे कुछ ऐतिहासिक स्थलों के नाम उल्टे-पुल्टे लिखे हैं। संकेतों के आधार पर उन्हें पहचानिए और बताइए।**

अकबर के पिता का मकबरा।

ये अपनी चित्रकला के लिए प्रसिद्ध हैं।

इनका संबंध बौद्ध धर्म से है।

समुद्र के तट पर स्थित है।

दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक।

राजधानी दिल्ली में स्थित है।

राजपूतों का किला जो गुलाबी नगरी के निकट स्थित है।

चेतक 8

रण बीच चौकड़ी भर-भरकर,
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।

गिरता न कभी चेतक तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
या आसमान पर घोड़ा था।

जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।

कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में।

यह यहीं रहा, अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, है वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं।

बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया, गया, फिर ठहर गया।
विकराल वज्रमय बादल-सा अरि की सेना पर घहर गया।
भाला गिर गया, गिरा निषंग, हय टापों से खन गया अंग।
बैरी समाज रह गया दंग, घोड़े का ऐसा देख रंग।

शब्द-अर्थ

रण	–	युद्ध	अरि	–	शत्रु
बाग	–	लगाम	पुतली	–	दृष्टि
निर्भीक	–	निडर	हय	–	घोड़ा
करवाल	–	तलवार	विकराल	–	भयंकर
निषंग	–	धनुष			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) महाराणा प्रताप के घोड़े का क्या नाम था?

(ख) घोड़े के शरीर पर आज तक राणा प्रताप का क्या नहीं लगा था?

(ग) चेतक की मृत्यु कैसे हुई?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) चेतक में निरालापन आया था–

☐ रण के बीच ☐ जन्म से ही

(ख) राणा प्रताप चेतक के प्रति–

☐ कठोर थे ☐ कोमल थे

(ग) तलवारों और ढालों के बीच चेतक–

☐ निर्भीक बना रहता था ☐ कंपित होता था

(घ) शत्रु पक्ष चेतक को देखकर–

☐ दंग रह जाते थे ☐ मौन हो जाते थे

2. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

जो तनिक हवा से _____

_____ उड़ जाता था।

राणा की पुतली _____

तब _____ मुड़ जाता था।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लगाम के हलके से हिलने पर ही चेतक क्या करता था?

(ख) 'हवा से पाला पड़ने' से चेतक का संबंध क्यों जोड़ा गया है?

(ग) चेतक क्या कौशल दिखलाता था?

(घ) बैरी समाज क्या देखकर हैरान रह गया?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए-

(क) घोड़ा – _____, _____

(ख) शत्रु – _____, _____

(ग) हैरान – _____, _____

(घ) तनिक – _____, _____

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) हवा से बातें करना अर्थ — _____

प्रयोग _____

_____

(ख) दाँतों तले अंगुली दबाना अर्थ — _____

प्रयोग _____

_____

(ग) छक्के छुड़ाना अर्थ — _____

प्रयोग _____

_____

(घ) लोहा लेना अर्थ — _____

प्रयोग _____

_____

3. सुमेल कीजिए–

(क) वीर	(i) शांति
(ख) युद्ध	(ii) मित्र
(ग) विरोधी	(iii) कायर
(घ) शक्ति	(iv) विरक्ति
(ङ) भक्ति	(v) निर्बलतविता को कंठस्थ करके कक्षा में सुनाइए।

नीलू 9

एक देश की महानता और नैतिक प्रगति को इस बात से आँका जा सकता है कि वहाँ जानवरों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। - महात्मा गांधी

नीलू की कथा उसकी माँ की कथा से इस प्रकार जुड़ी है कि एक के बिना दूसरी अपूर्ण रह जाती है।

उसकी अल्सेशियन माँ, लूसी के नाम से पुकारी जाती थी। हिरणी के समान वेगवती, साँचे में ढली हुई देह, जिस पर काला आभास देने वाले भूरे-पीले रोम, बुद्धिमानी का पता देने वाली काली पर छोटी आँखें, सजग खड़े कान और सघन, रोएँदार तथा पिछले पैरों के टखनों को छूने वाली पूँछ, सब कुछ उसे राजसी विशेषता देते थे। थी भी तो वह सामान्य कुत्तों से भिन्न।

उत्तरायण में जो पगडंडी दो पहाड़ियों के बीच से मोटर-मार्ग तक जाती थी, उसके अंत में मोटर-स्टॉप पर एक ही दुकान थी, जिससे आवश्यक खाद्य-सामग्री प्राप्त हो सकती थी। शीतकाल में यह रास्ता बर्फ से ढक जाता था। तब दुकान तक पहुँचने में असमर्थ उत्तरायण के निवासी, लूसी के गले में रुपए और सामग्री की सूची के साथ एक बड़ा थैला या चादर बाँधकर उसे सामान लाने भेज देते थे। बर्फ में मार्ग बना लेने की सहज चेतना के कारण वह सारी रुकावटों को पारकर दुकान तक पहुँच जाती। दुकानदार उसके गले से कपड़ा खोलकर रुपए, सूची आदि लेने के उपरांत सामान की गठरी उसके गले या पीठ से बाँध देता और लूसी सारे बोझ के साथ बर्फीली मार्ग पार करती हुई सकुशल लौट आती। किसी-किसी दिन तो उसे कई बार आना-जाना पड़ता था, पर लूसी को सामान मँगवाने वालों के भुलक्कड़पन से कभी कोई शिकायत नहीं रही।

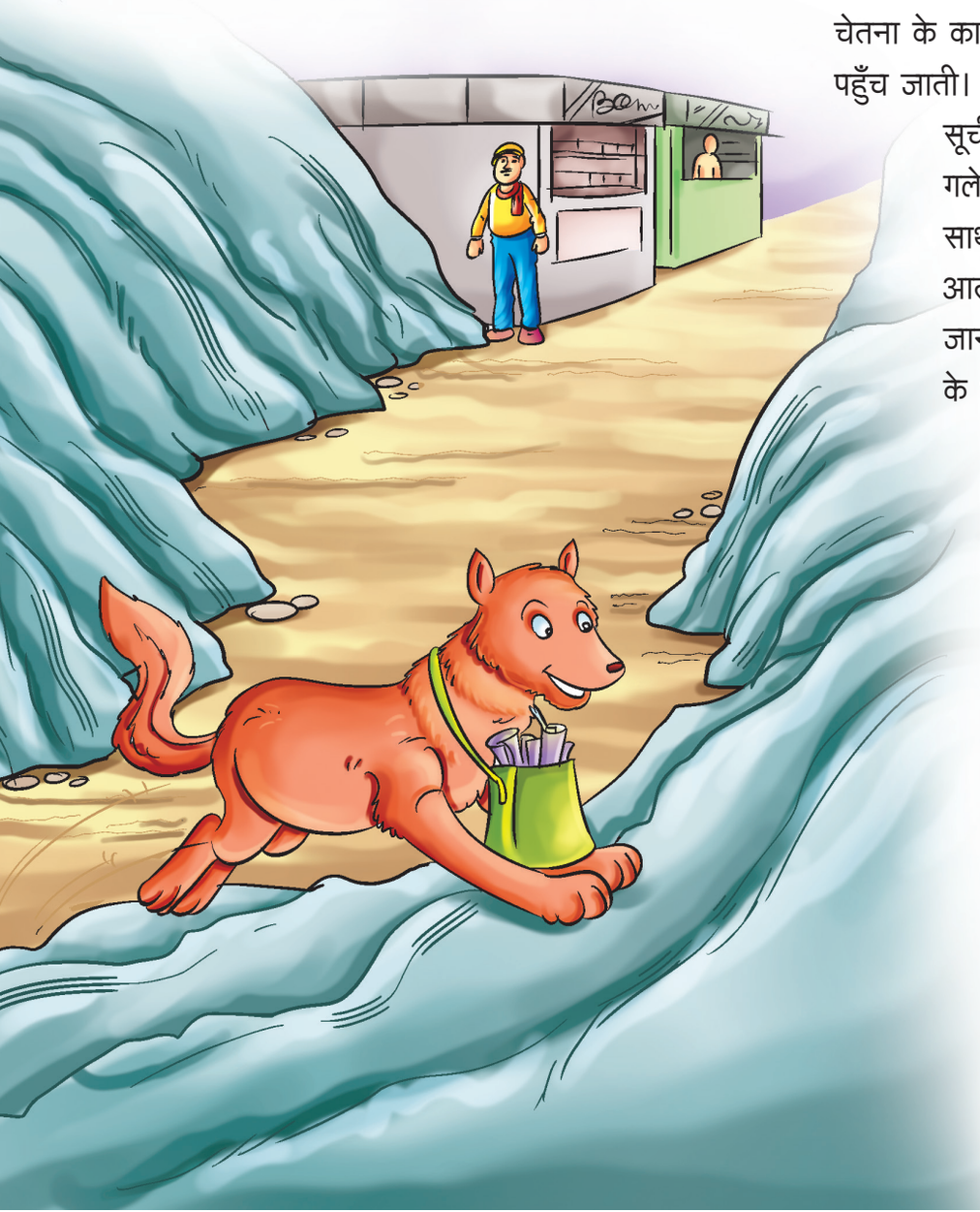

गले में कपड़ा बाँधते ही वह तीर की तरह दुकान की दिशा में चल देती। एक दिन अधिक ऊँचाई पर बसे किसी पर्वतीय गाँव से बर्फ में भटकता हुआ एक भूटिया कुत्ता दुकान पर आ गया और लूसी से उसकी मैत्री हो गई।

उन्हीं सर्दियों में लूसी ने दो बच्चों को जन्म दिया, किंतु उनमें से एक तो शीत के कारण मर गया और दूसरा उस ठिठुराने वाले परिवेश से जूझने लगा। चार-पाँच दिन के बच्चे को छोड़कर लूसी फिर दुकान तक आने-जाने लगी थी।

एक संध्या के झुटपुटे में लूसी ऐसी गई कि फिर लौट ही न सकी। शीतकाल में घ्राणशक्ति के कुछ कुंठित हो जाने के कारण कुत्ते लकड़बग्घे के आने की गंध पाने में असमर्थ रहते है। और उसके अनायास आहार बन जाते हैं। लूसी के साथ भी ऐसा ही ऐसा ही कुछ हुआ था।

लूसी के लिए सभी रोए, परंतु जिसे सबसे अधिक रोना चाहिए था, वह बच्चा तो कुछ जानता ही न था। एक दिन पहले ही उसकी आँखें खुली थीं, अतः माँ से अधिक वह दूध के अभाव में शोर मचाने लगा। दुग्ध-चूर्ण से दूध बनाकर उसे पिलाया जाता, पर रजाई में भी वह माँ के पेट की उष्णता खोजता और न पाने पर रोता-चिल्लाता रहता। अंत में हमने उसे कोमल ऊन और अधबुने स्वेटर की डलिया में रख दिया, जहाँ वह माँ के सामीप्य सुख के भ्रम में सो गया। डलिया में वह ऊन की गेंद जैसा ही लगता था। जब हम प्रयाग लौटे तो उसे भी साथ लाना पड़ा।

बड़े होने पर रोमों के भूरे, पीले और काले रंगों के मिलन से जो रंग बना था, वह एक विशेष प्रकार का धूप-छाँही हो गया था। धूप पड़ने पर एक रंग की झलक मिलती थी, छाँह में दूसरे रंग की और दीये के उजाले में तीसरे रंग की। कानों की चौड़ाई और नुकीलेपन में भी कुछ नवीनता थी। सिर ऊपर की ओर अन्य कुत्तों के सिर से बड़ा और चौड़ा था और लंबोतरा, पर सुडौल। पूँछ अल्सेशियन कुत्तों की पूँछ के समान सघन, रोमों से युक्त, पर ऊपर की ओर मुड़ी कुंडलीदार थी। पैर अल्सेशियन कुत्ते के पैरों के समान लंबे, पर पंजे भूटिये के समान मजबूत, चौड़े और मुड़े हुए नाखूनों से युक्त थे। उन गोल और काली कोर वाली आँखों का रंग शहद के रंग के समान था, जो धूप में तरल सुनहला हो जाता था और छाया में जमे हुए मधु-सा पारदर्शी लगता था।

आकृति की विशेषता के साथ उसके बल और स्वभाव में भी विशेषता थी। ऊँची दीवार भी, वह एक छलाँग में पार कर लेता था। रात्रि मे उसका एक बार भौंकना भी वातावरण की स्तब्धता को कंपित कर देता था।

मैंने अनेक कुत्ते देखे और पाले हैं, किंतु कुत्ते के दैन्य से रहित और उसके लिए अलभ्य दर्प से युक्त मैंने केवल नीलू को ही देखा है। उसके प्रिय-से-प्रिय खाद्य को भी यदि अवज्ञा के साथ फेंककर दिया जाता, तो वह उसकी ओर देखता तक भी नहीं था, खाना तो दूर की बात थी। यदि उसे किसी बात पर झिड़क भी दिया जाता, तो बिना मनाए वह मेरे सामने ही न आता था।

विगत बारह वर्षों से उसका बैठने का स्थान मेरे घर का बाहरी बरामदा ही रहा, जिसकी ऊपरी सीढ़ी पर बैठकर वह प्रत्येक आने-जाने वाले का निरीक्षण करता रहता था। मुझसे मिलने वालों में वह प्राय सबको पहचानता था। किसी विशेष परिचित को आया हुआ देखकर, वह धीरे-धीरे भीतर आकर मेरे कमरे के दरवाजे पर खड़ा हो जाता था। उसका इस प्रकार आना ही मेरे लिए किसी

मित्र की उपस्थिति की सूचना थी। मुझसे "आ रही हूँ" सुनने के उपरांत वह पुनः बाहर अपने निश्चित स्थान पर जा बैठता था।

कुत्ते भाषा नहीं जानते, केवल ध्वनि पहचानते हैं। नीलू का ध्वनि-ज्ञान इतना विस्तृत और गहरा था कि उससे कुछ कहना भाषा जानने वाले मनुष्य से बात करने के समान हो जाता था। बाहर या रास्ते में घूमते हुए यदि कोई उससे कह देता, "गुरु जी तुम्हें ढूँढ रही थीं, नीलू" तो वह विद्युत गति से चारदीवारी कूदकर मेरे कमरे के सामने आकर खड़ा हो जाता। फिर 'कोई काम नहीं है, जाओ' कहने से पहले वह मूर्तिवत एक स्थिति में ही खड़ा रहता। कभी-कभी मैं किसी कार्य में व्यस्त होने के कारण उसकी उपस्थिति जान ही नहीं पाती और उसे बहुत समय तक बिना हिले-डुले खड़ा रहना पड़ता था।

हिंसक और क्रोधी भूटिये बाप और आखेटप्रिय अल्सेशियन माँ से जन्म पाकर भी उसमें हिंसा प्रवृत्ति का कोई चिह्न नहीं था। तेरह वर्ष के जीवन में भी उसे किसी पशु-पक्षी पर झपटते या उसे मारते नहीं देखा गया। उसका यह स्वभाव मेरे लिए ही नहीं, सब देखने वालों के लिए भी आश्चर्य का विषय था।

मेरे बँगले के रोशनदानों में प्रायः गौरैया तिनकों से घोंसला बना लेती थीं। मुझे उनके प्रेमपूर्वक बनाए हुए घोंसले उजाड़ना अच्छा नहीं लगता अतः कालांतर से उनमें अंडों और पक्षी-शावकों की सृष्टि बस जाती थी।

कुछ-कुछ अंकुर जैसे पंख निकलते ही, वे पक्षी-शावक उड़ने के असफल प्रयास में रोशनदानों से नीचे गिरने लगते थे। इन दिनों नीलू उनके सतर्क पहरेदार का कर्तव्य सँभाल लेता था। उसके भय से कोई भी कुत्ता-बिल्ला उन नादान उड़ने-गिरने वालों को हानि पहुँचाने का साहस नहीं कर पाता था। कभी-कभी बहुत छोटे-छोटे पक्षी-शावकों को पुनः घोंसले में रखवाने के लिए वह उन्हें हौले से मुख में दबाकर मेरे पास ले आता था। जब तक रोशनदान में सीढ़ी लगवाकर मैं उस बच्चे को घोंसले में पहुँचाने की व्यवस्था न कर लेती, तब तक वह या तो बड़ी कोमलता से उसे मुँह में दबाए खड़ा रहता या मेरे हाथ में देकर प्रतीक्षा की मुद्रा में देखता रहता। सवेरे नियमानुसार जब मैं मोर, खरगोश आदि को दाना देने निकलती, तब वह चाहे जाड़ा हो, चाहे बरसात मुझे दरवाजे पर ही मिलता और मेरे साथ-साथ ही घूमता। पक्षियों के कक्ष में दो फुट ऊँची दीवार पर जाली लगी हुई थी। नीलू दीवार पर दोनों पंजे रखकर खड़ा हो जाता और अपनी गोल-गोल आँखें घुमाकर प्रत्येक कक्ष और उसमें रहने वालों का निरीक्षण करता रहता था।

सबके सो जाने पर, वह गर्मियों में बाहर लॉन में और सर्दियों में बरामदे में तख्त पर बैठकर पहरेदारी का कार्य करता। रात में कई-कई बार वह पूरे कंपाउंड का और पशु-पक्षियों के घर का चक्कर लगाता रहता।

खरगोश धरती के भीतर सुरंग जैसे लंबे दोनों ओर द्वार वाले बिल खोद लेते हैं। एक रात मेरे खरगोश बिल खोदते-खोदते पड़ोस के दूसरे कंपाउंड मे जा निकले। उनमें से कई जो इस अभियान में अगुआ थे, जंगली बिल्ले द्वारा मार दिए गए। अतः एक के पीछे एक निकलते हुए खरगोशों में सभी को बिल्ले का आहार बन जाना पड़ता, किंतु उनके सौभाग्य से नीलू ने संभवतः पत्तियों की सरसराहट से सजग होकर चारदीवारी के पार देखा होगा और उसने खरगोशों के संकट को पहचान लिया होगा। उसके कूदकर दूसरी ओर पहुँचते ही बिल्ला तो भाग गया, परंतु खरगोशों को बाहर निकलने से रोकने के लिए वह रातभर ओस से भीगता हुआ सुरंग के द्वार पर खड़ा रहा।

यह परोपकार नीलू के लिए बहुत महँगा पड़ा। क्योंकि उसे सर्दी लगने से न्यूमोनिया हो गया और कई दिनों तक इंजेक्शन, दवा आदि का कष्ट झेलना पड़ा। वैसे वह शांत भाव से कड़वी दवा भी पी लेता था और सुई भी लगवा लेता था।

एक बार मोटर दुर्घटना में घायल हो, मुझे मार्ग से ही अस्पताल जाना पड़ा, तब संध्या तक मेरी प्रतीक्षा करके और कपड़े, चादर-कंबल आदि सामान अस्पताल ले जाने वालों की हड़बड़ी देखकर उसे न जाने कैसे सब पता गया। सब उसकी उदासी देखकर हैरान थे। जब तीन तक उसने न कुछ खाया न पिया, तब डॉक्टर से अनुमति लेकर उसे अस्पताल लाया गया। मुझे अच्छी तरह चारों ओर घुमकर देखने के बाद वह मेरे सामने ही जमीन पर बैठ गया।

तब से हर दूसरे दिन अस्पताल न ले जाने या वह अनशन आरंभ कर देता, इसलिए अस्पताल में भी वह नियमित रूप से मिलने आने वालों में गिना जाने लगा तथा डॉक्टर, नर्स सभी से परिचित हो गया। नीलू को चौदह वर्षों का जीवन मिला था और जन्म से मृत्यु के क्षण तक वह मेरे पास ही रहा। मेरे पास अनेक जीव-जंतु है, परंतु जिसके बुरा मन जाने की मुझे चिंता हो, ऐसा अब कोई नहीं रहा

लेखिका—महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। वे प्रयाग के महिला विद्यापीठ में प्राचार्या थीं। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयास किए। सन् 1987 में छायावाद की एक प्रमुख आधार स्तंभ महादेवी जी का निधन हो गया। वे पद्य एवं गद्य दोनों ही लिखती थीं। इन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' तथा 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया। 'नीरजा', 'यामा', 'दीपशिखा', 'नीहार', 'स्मति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र' आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

शब्द-अर्थ

अपूर्ण — अधूरी
पगडंडी — सँकरा, रास्ता
पर्वतीय — पहाड़ी
शीतकाल — सरदी
लंबोतरा — गोलाई युक्त लंबा
पारदर्शी — आर-पार दिखाई देने वाला
दर्प — गर्व
आखेटप्रिय — शिकारपसंद
निरीक्षण — जाँचना
सजग — जागरूक
भूलक्कड़पन — भूलने की आदत
परिवेश — वातावरण
घ्राणशक्ति — सूँघने की शक्ति
सघन — घनी
स्तब्धता — नीरवता, शांति
मूर्तिवत — मूर्ति की तरह जड़
शावक — बच्चा

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) नीलू की कथा किसकी कथा के बिना अपूर्ण है?

(ख) लूसी की मैत्री किससे हो गई?

(ग) जन्म के बाद लूसी के दोनों बच्चों का क्या हुआ?

(घ) किसी परिचित के आने की सूचना नीलू कैसे देता था?

(ङ) नीलू का जीवन कितने वर्षों का था?

लिखित

1. पाठांश पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

लूसी के लिए सभी रोए, परंतु जिसे सबसे अधिक रोना चाहिए था, वह बच्चा तो कुछ जानता ही न था। एक दिन पहले ही उसकी आँखें खुली थीं, अत: माँ से अधिक वह दूध के अभाव में शोर मचाने लगा। दुग्ध-चूर्ण से दूध बनाकर उसे पिलाया जाता, पर रजाई में भी वह माँ के पेट की उष्णता खोजता और न पाने पर रोता-चिल्लाता रहता। अंत में हमने उसे कोमल ऊन और अधबुने स्वेटर की डलिया में रख दिया, जहाँ वह माँ के सामीप्य सुख के भ्रम में सो गया। डलिया में वह ऊन की गेंद जैसा ही लगता था। जब हम प्रयाग लौटे तो उसे भी साथ लाना पड़ा।

(क) लूसी के लिए सबसे अधिक किसे रोना चाहिए था?

☐ लेखिका को ☐ उसके बच्चे को ☐ भूटिया कुत्ते को

☐ बिल्ली को

(ख) रजाई में वह क्या खोजता रहता था?

☐ अपने प्रिय खाद्य पदार्थ को ☐ दुग्ध-चूर्ण से बने दूध को

☐ माँ के पेट की उष्णता को ☐ अपने साथी पशुओं को

(ग) डलिया में वह कैसा लगता था?

☐ ऊन की गेंद जैसा ☐ झबरीले खरगोश जैसा

☐ रोएँदार स्वेटर जैसा ☐ वेगवती हिरणी जैसा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लूसी की मृत्यु कैसे हुई?

(ख) लूसी के स्वभाव की क्या विशेषता थी?

(ग) नीलू का कैसा स्वभाव सबके लिए आश्चर्य का विषय था?

(घ) 'इन दिनों नीलू उनके सतर्क पहरेदार का कर्तव्य सँभाल लेता था।'

(i) यहाँ किन दिनों की बात हो रही है?

(ii) नीलू किनका सतर्क पहरेदार बन जाता था और क्यों?

(ङ) सबके सो जाने पर नीलू क्या करता था?

(च) नीलू ने खरगोशों की जान कैसे बचाई?

(छ) लेखिका को नीलू के बुरा मान जाने की चिंता क्यों थी?

(ज) कौन-सी बातें लूसी को राजसी विशेषताएँ प्रदान करती थीं?

(झ) 'पर लूसी को सामान मँगवाने वालों के भुलक्कड़पन से कभी कोई शिकायत नहीं रही।'- अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

(ञ) बड़े होने पर नीलू कैसा दिखता था?

(ट) 'कुत्ते के दैन्य से रहित और उसके लिए अलभ्य दर्प से युक्त मैंने केवल नीलू को ही देखा है'- इस कथन के माध्यम से लेखिका क्या कहना चाहती हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ठ) 'नीलू का ध्वनि-ज्ञान विस्तृत था'- उदाहरण देकर इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए।

(ढ) पशु-पक्षियों के साथ हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

(त) लेखिका के मोटर दुर्घटना में घायल होने पर नीलू की क्या प्रतिक्रिया हुई?

भाषा-ज्ञान

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द 'सर्वनाम' कहलाते हैं।

जैसे- नीलू की माँ का नाम लूसी था। शीतकाल के उत्तरायण के निवासी उसके गले में रुपए और सामग्री की सूची के साथ एक चादर या बड़ा थैला बाँधकर उसे सौदा लाने भेजते थे। वह भी बड़ी फुर्ती के साथ बर्फीले रास्तों को पार करती हुई गाँव वालों के लिए सौदा ले आती थी।

ऊपर लिखे उदाहरण में उसके, उसे, वह आदि शब्द 'लूसी' के लिए प्रयोग किए गए हैं, अत: ये सर्वनाम शब्द हैं।

नीचे लिखे गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को छाँटकर दिए गए स्थान पर लिखिए-

सर्वनाम शब्द

(क) वे घर जा रहे हैं। _____

(ख) उन्होंने 'नीलू' को बुलाया, परंतु वह नहीं आया। _____

(ग) मुझे अच्छी तरह घुमकर देखा। _____

(घ) वह रात भर ओस में भीगता हुआ द्वार पर खड़ा रहा। _____

(ङ) अस्पताल के कर्मचारी भी उससे परिचित हो गए थे। _____

2. (क) लूसी बहुत बुद्धिमान थी।

(ख) उन्होंने धरती के भीतर लंबी सुरंग बना ली थी।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'बुद्धिमान' लूसी की और 'लंबी' सुरंग की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए ये विशेषण शब्द हैं।

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं।

जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें 'विशेष्य' कहते हैं।

नीचे लिखे गए विशेषण शब्दों के लिए उपयुक्त विशेष्य लिखिए–

विशेषण	विशेष्य
चतुर	नीलू
वेगवती	_____
बुद्धिमान	_____
बर्फीला	_____

विशेषण	विशेष्य
चंचल	_____
जंगली	_____
काली	_____
कड़वी	_____

3. उचित पर्यायवाची शब्दों के सामने (✓) का चिह्न लगाइए–

धरती	–	पृथ्वी	☐	भवन	☐	वसुधा	☐
कुशलता	–	दक्षता	☐	निपुणता	☐	मूर्खता	☐
अभिमान	–	कुशलता	☐	घमंड	☐	अहंकार	☐
आरंभ	–	सूत्रपात	☐	श्रीगणेश	☐	इति	☐

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए–

	उपसर्ग + मूल शब्द
असमर्थ	_____
सकुशल	_____
परिवेश	_____
आकृति	_____

	मूल शब्द + प्रत्यय
नुकीलापन	_____
धार्मिक	_____
घबराहट	_____
उदारता	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- पुस्तकालय अथवा कंप्यूटर की सहायता से महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्र जैसे- 'गौरा', 'नीलकंठ', 'गिल्लू' आदि पढ़िए।
- पालतू पशुओं की समझ-शक्ति और वफादारी से संबंधित आप अपने अनुभव कक्षा में सुनाइए।
- पुस्तकालय से महादेवी वर्मा के बारे में जानकारियाँ एकत्रित करके उन पर एक प्रोजेक्ट बनाइए।
- अगर आपके घर में पालतू पशु है, तो उसकी वफादारी पर कुछ चर्चा करे।
- पशु-पक्षियों से संबंधित दस मुहावरे या कहावतें लिखिए।

भारत की गरिमा

10

"देखो माँ! मैंने एक कविता लिखी है– सुनाऊँ!" माता ने आश्चर्य से उसकी ओर देखकर कहा, "लेकिन तुम तो बीजगणित के सवाल हल कर रही थीं।" "हाँ, कर तो रही थी लेकिन जब वह समझ में नहीं आया तो मैंने एक कविता लिख डाली।" उसके बार-बार आग्रह करने पर माँ कविता सुनने बैठ गईं। तभी उसके पिता जी भी वहाँ पहुँच गए। अपनी ग्यारह वर्ष की बिटिया सरोजिनी के मुँह से इतनी सुंदर और सुरीली कविता सुनकर माता-पिता गद्‌गद हो गए। उन्होंने बेटी को शबाशी देकर कहा, "तू तो गाने वाली चिड़िया जैसी है।" माता-पिता की यह बात सत्य सिद्‌ध हुई। अब तो लिखने का जो क्रम चला, वह चलता ही रहा। 13 वर्ष की अवस्था में उसने 1300 पंक्तियों की एक लंबी कविता और दो हज़ार पंक्तियों का नाटक लिख डाला। सरोजिनी का कंठ अत्यंत मधुर था। वे जब कविता-पाठ करने लगतीं तो उनका मधुर-स्वर सुनकर श्रोता मंत्र-मुग्ध हो जाते। यही कारण है कि सरोजिनी को 'भारत कोकिला' की उपाधि प्रदान की गई।

सरोजिनी का जन्म 13 फरवरी, सन 1879 ई0 को हैदराबाद में हुआ था। पिता अघोरनाथ चट्टोपाध्याय तथा माता वरदासुंदरी की काव्य-लेखन की प्रतिभा अपने माता-पिता से विरासत में पाई थी।

काव्य-रचना के साथ-साथ सरोजिनी का अध्ययन कार्य भी चलता रहा। सन 1890 ई0 में, सरोजिनी ने मद्रास विश्वविद्‌यालय से मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसने सब छात्रों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। एक बालिका के लिए ऐसी सफलता प्राप्त करना उन दिनों असाधारण बात थी। अध्ययन के साथ-साथ सरोजिनी में गंभीरता आती गई। उनकी कविता के विषय भी बदल गए। अब वे अपना समय स्वतंत्र अध्ययन करने और उच्च कोटि की कविताएँ लिखने में लगाना चाहती थीं। उच्च शिक्षा के लिए उन्हे इंग्लैंड भेजा गया। यहाँ उनका परिचय प्रसि्‌ध साहित्यकार एडमंड गॉस से हुआ। सरोजिनी की कविता-लेखन की क्षमता और रुचि को देखकर उन्होंने भारतीय समाज को ध्यान में रखकर लिखने का सुझाव दिया। यहाँ पर सरोजिनी ने तीन संग्रह लिखे।

1. द गोल्डन थ्रेश होल्ड 2. द ब्रोकेन विंग्स 3. द सैप्टर्ड फ़्लूट

"लिए बाँसुरी हाथों में हम घूमें गाते-गाते,
मनुष्य सब हैं बंधु हमारे, जग सारा अपना है।।"

ये पंक्तियाँ 'द गोल्डेन थ्रेश होल्ड' की हैं। इस पुस्तक से इंग्लैंड का साहित्य-जगत आश्चर्यचकित रह गया। साहित्यकारों, समालोचकों और समाचार-पत्रों ने एक स्वर में उनकी प्रशंसा की। भारत ने भी इस सफलता पर सरोजिनी का अभिनंदन किया।

भारत लौटने पर सरोजिनी का विवाह गोविंदराजुल नायडू के साथ हुआ। वे हैदराबाद के रहने वाले थे तथा सेना में डॉक्टर थे। इस अंतर-प्रांतीय और अंतर्जातीय विवाह के लिए ब्रह्म समाजी विचार के माता-पिता ने सहर्ष अनुमति प्रदान की। उनका वैवाहिक जीवन बड़ा सुखी था।

गोपाल कृष्ण गोखले तथा महात्मा गांधी के साथ आने पर सरोजिनी नायडू राष्ट्रप्रेम तथा मातृभूमि को संबोधित कर कविताएँ लिखने लगीं।

''श्रम करते हैं हम, कि समृद्ध हो तुम्हारी जागृति का पल।

हो चुका जागरण, अब देखो, निकला दिन कितना उज्ज्वल।''

सरोजिनी नायडू की इन पंक्तियों को पढ़कर सहज की अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका हृदय देश-प्रेम से सर्वथा ओत-प्रोत रहा था। सन 1912 ई0 में, 'द बर्ड ऑफ़ टाइम' नामक कविता संग्रह का प्रकाशन हुआ। इनकी प्रशंसा करते हुए 'यार्क शायर पोस्ट' नामक पत्र ने लिखा था- ''श्रीमती नायडू ने हमारी भाषा को तो समृद्ध किया ही है, पूर्वी देशों की भावना और आत्मा से भी हमारा निकट का संपर्क कराया है।''

सरोजिनी नायडू में तारों तक पहुँचने के लिए ऊपर उठने की चाह थी। उन्होंने अपने कविता संग्रह 'द ब्रोकन विंग्स' में लिखा है-

''ऊँचा उठती हूँ मैं पहूँचूँ नियत झरने तक।

टूटे ये पंख लिए, मैं चढ़ती हूँ ऊपर तारों तक।।''

गोपाल कृष्ण गोखले सरोजिनी के अच्छे मित्र थे। वे उस समय भारत को अंग्रेज़ी सरकार से मुक्त कराने का कार्य कर रहे थे। इस कार्य से सराजिनी बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने कहा–''देश को गुलामी की जंजीरों में जकड़ा देखकर कोई भी ईमानदार इनसान बैठकर केवल गीत नहीं गुनगुना सकता। कवयित्री होने की सार्थकता इसी में है कि संकट की घड़ी में, निराशा और पराजय के क्षणों में आशा का संदेश दे सकूँ।'' ऐसा दृढ़ संकल्प करके सरोजिनी ने देशभर का भ्रमण किया।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में शामिल होने के बाद उनका कविता-लेखन का कार्य धीमा पड़ गया, लेकिन जो स्थान अंग्रेज़ी काव्य में उन्होंने अपने लिए बना लिया था, वह आज भी विद्यमान है।

सरोजिनी को लेखनी के साथ-साथ वाणी का भी वरदान मिला था। लोग उनके धारा-प्रवाह भाषण को मंत्र-मुग्ध होकर सुना करते थे। वे पर्दा-प्रथा, हिंदू-मुस्लिम एकता और स्वदेशी अपनाओ जैसे विषयों को लेकर देश के विभिन्न भागों में जागृति का संदेश पहुँचाने गईं। इनके जोशीले भाषणों की देश-भर में बड़ी धूम थी। जब गांधी जी के साथ सन 1916 ई0 में ये कांग्रेस अधिवेशन में गईं तब जवाहरलाल नेहरू से उनकी पहली भेंट हुई थी। नेहरू जी ने लिखा है–''मैं उन दिनों सरोजिनी नायडू के कई धारा-प्रवाह भाषणों से प्रभावित हुआ था। वे राष्ट्रीयता और देश-भक्ति से भरी-पूरी थीं।''

सन 1919 ई0 में जब प्रथम सत्याग्रह-संग्राम का प्रतिज्ञा-पत्र तैयार किया गया तो उसमें उन्होंने बढ-चढ़ कर भाग लिया। सन 1922 ई0 में गांधी जी पर मुकदमा चला और इन्हें 6 वर्ष की सज़ा हो गई। इस समय सरोजिनी ने खद्दर के वस्त्र धारण किए और देश के कोने-कोने में सत्याग्रह संग्राम का संदेश पहुँचाने के कार्य में लग गईं। इस समय ये कवयित्री होने के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम की उच्च कोटि की नेता भी थीं।

सन 1925 ई0 में इन्हें भारतीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया गया। इस समय गांधी जी ने उत्साह भरे शब्दों में उनका स्वागत किया और कहा–''पहली बार एक भारतीय महिला को देश की सबसे बड़ी सौगात मिली है।''

सन 1930 ई0 में गांधी जी ने 'नमक कानून तोड़ो आंदोलन' में 'दांडी मार्च' किया और नमक कानून तोड़ा। सरोजिनी महिलाओं के दल के साथ पहले से समुद्र के किनारे उपस्थित थीं। सन 1942 ई0 में गांधी जी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में उन्होंने भाग लिया। आज़ादी की लड़ाई में उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा लेकिन वे कभी पीछे नहीं हटीं।

अंततः भारत के लिए वह सुनहरा दिन भी आया जिसकी लोगों को वर्षों से प्रतीक्षा थी। भारत स्वतंत्र हुआ और श्रीमती सरोजिनी नायडू को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद पर का भार सौंपा गया। उत्तरदायित्व के इतने उच्च पद पर आसीन होने वाली वे भारत की प्रथम महिला थीं। उनके कार्यकाल में उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक जीवन में नया उत्साह दिखाई दिया।

सरोजिनी को इस बात का अच्छी तरह अनुभव था कि नारी अपने परिवार, देश के लिए कितना महान कार्य कर सकती है। इसलिए उन्होंने नारी-मुक्ति और नारी-शिक्षा आंदोलन शुरू किया। नारी विकास को ध्यान में रखकर वे 'अखिल भारतीय महिला परिषद' की सदस्य बनीं। सरोजिनी नायडू का व्यवहार बहुत सामान्य था। वे राजनीतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने के साथ-साथ गीत और चुटकुलों का आनंद लिया करती थीं। प्रकृति से उन्हें बड़ा प्रेम था।

जब 30 जनवरी, सन 1948 को दिल्ली में राष्ट्रपिता गांधी की हत्या कर दी गई तो इस वज्रपात से सरोजिनी नायडू मार्महत हो उठीं। देश भर में उदासी छा गई। सरोजिनी नायडू ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा-"मेरे गुरू, मेरे नेता, मेरे पिता की आत्मा शांत होकर विश्राम न करे बल्कि उनकी राख गतिमान हो उठे। चंदन की राख, उनकी अस्थियाँ इस प्रकार जीवंत हो जाएँ और उत्साह से परिपूर्ण हो जाएँ कि समस्त भारत उनकी मृत्यु के बाद स्वतंत्रता पाकर पुनर्जीवित हो उठे। मेरे पिता विश्राम मत करो, न हमें विश्राम करने दो। हमें अपना वचन पूरा करने की क्षमता दो। हमें अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने की शक्ति दो। हम तुम्हारे उत्तराधिकारी हैं, संतान हैं, संवक हैं, तुम्हारे स्वप्न रक्षक हैं। भारत के भाग्य-निर्माता हैं, तुम्हारा जीवनकाल हम पर प्रभावी रहा है, अब तुम मृत्यु के बाद भी हम पर प्रभाव डालते रहो।" गांधी जी की मृत्यु का आघात उनके लिए बड़ा घातक सिद्ध हुआ। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। 1 मार्च, सन 1949 को जब वे बीमार थीं तो उन्होंने नर्स से गीत सुनाने का आग्रह किया। नर्स का मधुर गीत सुनते-सुनते वे चिरनिद्रा में सो गईं।

2 मार्च, सन 1949 को प्रातः साढ़े तीन बजे भारत कोकिला सदा के लिए मौन हो गईं। लेकिन उनकी मृत्यु तो केवल शरीर से हुई है, अपने यशरूपी शरीर से वे आज भी हमारे बीच में हैं।

अपनी एक कविता में उन्होंने मृत्यु को कुछ देर ठहर जाने के लिए कहा है–

"मेरे जीवन की क्षुधा, नहीं मिटेगी जब तक,

मत आना हे मृत्यु, कभी तुम मुझ तक।"

सरोजिनी नायडू ने जो जीवनभर विभिन्न रूपों में देश की सेवा की है, इसके लिए हम भारतवासी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

शब्द-अर्थ

बीजगणित	–	गणित की एक शाखा	**आग्रह**	–	निवेदन
काव्य-लेखन	–	कविता लिखना	**उत्तीर्ण**	–	सफल
गंभीरता	–	संजीदगी	**साहित्यकार**	–	लेखक, कवि

अभिनंदन – स्वागत
अंतर्जातीय – दो या अधिक जातियों में होनेवाला
समृद्ध – वैभवशाली
विद्यमान – मौजूद
जागृति – सजगता
धारा-प्रवाह – लगातार, बिना रुके
प्रतिज्ञा-पत्र – इकरारनामा
उत्तरदायित्व – ज़िम्मेदारी
गतिमान होना – जिसमें गति पैदा हो
अंतर-प्रांतीय – विविध प्रांतों के पारस्परिक व्यवहार से संबंधित
चिरनिद्रा – मृत्यु
सार्थकता – उपयोगिता
क्षुधा – भूख
सौगात – उपहार
उत्तराधिकारी – वारिस
मर्माहत – जिसके मर्म पर आघात किया गया हो
पुनर्जीवित – फिर से जीवित किया गया

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) सरोजिनी का जन्म कहाँ हुआ था? उनके माता-पिता का क्या नाम था?
(ख) इंग्लैंड में प्रकाशित सरोजिनी के तीन कविता संग्रहों के नाम बताइए।
(ग) तेरह वर्ष की अवस्था में सरोजिनी नायडू ने क्या-क्या सीख लिया था?
(घ) सरोजिनी नायडू की मृत्यु कब हुई थी?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सबसे पहले कविता लिखकर सरोजिनी नायडू ने किसे सुनाई?
☐ अध्यापिका को ☐ सहेलियों की
☐ माता-पिता को ☐ गांधी जी को

(ख) सरोजिनी नायडू का जन्म कब हुआ था?
☐ 13 फरवरी, 1879 ☐ 13 फरवरी, 1878
☐ 12 फरवरी, 1879 ☐ 14 फरवरी, 1879

(ग) 13 वर्ष की अवस्था में सरोजिनी नायडू ने कितनी पंक्तियों की एक कविता लिखी?
☐ 1500 ☐ 700
☐ 1300 ☐ 1100

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सरोजिनी नायडू के व्यक्तित्व की विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

(ख) पाठ के आधार पर सरोजिनी जी के जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालिए।

(ग) यदि सरोजिनी जी को शिक्षा का अवसर न मिला होता तो क्या उनकी प्रतिभा निखर पाती? अपनी राय दीजिए।

(घ) गांधी जी की हत्या के बाद सरोजिनी नायडू ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए क्या कहा?

(ङ) सरोजिनी नायडू की मृत्यु किस प्रकार हुई?

भाषा-ज्ञान

1. नीचे दिए गए वर्ग में से शब्द छाँटकर विलोम शब्दों के जोड़े बनाइए तथा उन्हें दिए गए स्थान पर लिखिए–

_____	×	_____		_____	×	_____	
_____	×	_____		_____	×	_____	
_____	×	_____		_____	×	_____	

2. निचे लिखे वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के काल लिखिए–

(क) सुरेश खाना खाएगा। _____

(ख) हमारा संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। _____

(ग) गाय घास चरती है। _____

(घ) मौसा जी अगले साल आएँगे। _____

(ङ) शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया। _____

3. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए उचित संज्ञा शब्दों से कीजिए।

(क) मई के महीने में बहुत _____ होती है। (गरम / गरमी)

(ख) वर्षा से खेतों की _____ हो जाती है। (सींचती / सिंचाई)

(ग) _____ जीत जीवन के दो पहलू हैं। (हारना / हार)

(घ) सरोजिनी नायडू की आवाज़ में बहुत _____ थी। (मिठास / मीठा)

(ङ) हम भारतवासी _____ के सूत्र में बँधे हैं। (एकत्व / एकता)

4. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

	मुहावरे		अर्थ
(क)	लोहे के चने चबाना	–	_____
(ख)	खरी-खोटी सुनाना	–	_____
(ग)	चादर देखकर पैर फैलाना	–	_____
(घ)	नस-नस का पता होना	–	_____

(ङ) लल्लो-चप्पो करना – _____

_____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) पुस्तकालय से सरोजिनी नायडू द्वारा रचित किसी पुस्तक को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

(ख) सरोजिनी नायडू पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए, जिसमें निम्न बिंदुओं को शामिल कीजिए—

सरोजिनी नायडू का जन्म — उनकी शिक्षा

उनकी साहित्यिक यात्रा — उनके अंतिम दिन

इसके लिए आप इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

(ग) यदि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरोजिनी नायडू का स्वर्गवास इतनी जल्दी न होता तो वे स्वतंत्र भारत की उन्नति में किस तरह अपना योगदान देतीं, कल्पना करके लिखिए।

(घ) स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने वाले विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन से जुड़े प्रेरक-प्रसंगों को पढ़िए। अपनी डायरी में लिखिए कि आज़ादी की महान लड़ाई किस प्रकार लड़ी गई।

(ङ) सरोजिनी नायडू की जीवनी पर एक छोटी-सी कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

(च) विद्यार्थियों को स्वतंत्रता-संग्राम पर आधारित पुस्तकों की सहायता से सरोजिनी नायडू के विषय में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने के लिए प्रेरित कीजिए।

11 प्रभात

आया प्रभात चंदा जग से कर चुका बात गिन-गिन जिनको
थी कटी किसी की दीर्घ रात अनगिन किरणों की भीड़-भाड़
से भूल गए पथ, और खो गए, वे तारे।

अब स्वप्नलोक के वे अविकल शीतल, अशोक पल
जो अब तक थे फैल-फैलकर रहे रोक गतिवान समय
की तेज चाल अपने जीवन की क्षण-भंगुरता से हारे।

जागे जन-जन ज्योतिर्मय हो दिन का क्षण-क्षण
ओ स्वप्न प्रिये! उन्मीलित कर दे आलिंगन इस
गरम सुबह, तपती दुपहर, में निकल पड़े
श्रमजीवी, धरती के प्यारे!

—रघुवीर सहाय

कवि परिचय

9 दिसंबर, 1929 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में जन्मे रघुवीर सहाय एम० ए० अंग्रेजी साहित्य में थे, परंतु उनकी गणना हिंदी के विलक्षण कवियों और साहित्यकारों में होती है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'सीढ़ियों पर धूप में', 'लोग भूल गए हैं', आत्महत्या के विरुद्ध', 'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' आदि। 30 दिसंबर, 1990 को दिल्ली में उनका निधन हो गया।

शब्द-अर्थ

दीर्घ	—	लंबी, बड़ी	**अविकल**	—	जो व्याकुल (बेचैन) न हो
गतिवान	—	चलायमान, जो चलता रहता है	**क्षण-भंगुरता**	—	क्षणभर में नष्ट होने वाला, अनित्य
ज्योतिर्मय	—	प्रकाशमय	**उन्मीलित**	—	पूरी तरह विकसित/खिला हुआ
श्रमजीवी	—	श्रम/मेहनत करके जीविका कमाने वाला			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) इस कविता के कवि का नाम बताइए।

(ख) किनको गिनकर लंबी रात काटी जाती है?

(ग) कवि ने स्वप्नलोक के पलों को कैसा बताया है?

(घ) धरती का प्यारा किसे कहा गया है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) रात को जग से किसने बात की?

☐ आसमान ने ☐ सूरज ने ☐ पेड़ों ने

☐ चंदा ने

(ख) समय की चाल कैसी मानी गई है?

☐ तेज ☐ धीमी ☐ लँगड़ी

☐ समय गतिहीन है

(ग) दिन का क्षण-क्षण कैसा हो?

☐ प्रकाशवान ☐ अंधकारमय ☐ सुस्त

☐ रुका हुआ

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) किरणों की भीड़ में कौन खो गया?

(ख) समय की तेज चाल को कौन रोक रहा था?

(ग) तपती दुपहर में कौन काम करने निकल पड़ा?

(घ) कवि ने लोगों के दिन के लिए क्या कामना की है?

(ङ) समय को गतिवान क्यों कहा गया है?

(च) सुबह को गरम और दुपहर को तपती कहने से क्या तात्पर्य है?

(छ) स्वप्नलोक के पलों को क्षण-भंगुर के समान क्यों कहा गया है?

(ज) आशय स्पष्ट कीजिए—

जागे जन-जन

ज्योतिर्मय हो दिन का क्षण-क्षण

भाषा-ज्ञान

1. पुनरुक्त शब्द – कभी-कभी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए एक ही शब्द को दो बार लिखा जाता है। ऐसे शब्दों को 'पुनरुक्त' शब्द कहते हैं। इन शब्दों के बीच योजक चिह्न (-) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे- सुबह-सुबह, धीरे-धीरे आदि।

- **पठित कविता में आए ऐसे पुनरुक्त शब्दों को चुनिए और उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-**

(क) _____ _____ कर जिनको थी कटी किसी की दीर्घ रात

(ख) पल जो अब तक थे _____ _____ कर रहे रोक

(ग) जागे _____ _____

ज्योतिर्मय हो दिन का _____ _____

2. संज्ञा – किसी प्राणी, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के तीन भेद होते हैं-

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी विशेष वस्तु, स्थान या व्यक्ति का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- राम, दिल्ली, गंगा आदि।

(ख) जातिवाचक संज्ञा – जिन शब्दों से एक ही प्रकार की वस्तुओं या प्राणियों का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- लड़के, लड़कियाँ, मेज, कुरसी आदि।

इसके दो उपभेद होते हैं-

(i) द्रव्यवाचक संज्ञा – जिन शब्दों से किसी द्रव्य अथवा पदार्थ के नाम का बोध हो, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- तेल, चीनी, आटा, सोना, ऊन, घी, दूध आदि।

(ii) समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा – जिन शब्दों से किसी वस्तु या प्राणी के समुदाय या समूह का बोध हो, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- पुलिस, भीड़, परिवार, गुच्छा, सेना आदि।

(ग) भाववाचक संज्ञा – जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण या धर्म, दशा या भाव का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- मित्रता, हरियाली, मिठास आदि। भाववाचक संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया और सर्वनाम शब्दों से बनाए जाते हैं।

(क) निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(i)	सूरज	◯	व्यक्तिवाचक	◯	जातिवाचक	◯ भाववाचक
(ii)	हरियाली	◯	व्यक्तिवाचक	◯	जातिवाचक	◯ भाववाचक
(iii)	यमुना	◯	व्यक्तिवाचक	◯	जातिवाचक	◯ भाववाचक
(iv)	भीड़	◯	व्यक्तिवाचक	◯	जातिवाचक	◯ भाववाचक
(v)	बचपन	◯	व्यक्तिवाचक	◯	जातिवाचक	◯ भाववाचक
(vi)	फूल	◯	व्यक्तिवाचक	◯	जातिवाचक	◯ भाववाचक
(vii)	कली	◯	व्यक्तिवाचक	◯	जातिवाचक	◯ भाववाचक
(viii)	घर	◯	व्यक्तिवाचक	◯	जातिवाचक	◯ भाववाचक

(ख) निम्नलिखित क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए–

	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
(i)	मुसकाना	मुसकुराहट/मुसकान
(ii)	घबराना	_____
(iii)	पीसना	_____
(iv)	पढ़ना	_____
(v)	सीना	_____
(vi)	चढ़ना	_____

3. दिए गए शब्दों से उचित शब्द का चुनाव करते हुए विलोम शब्द लिखिए–

पराया, गरमी, गर्त, आकाश, चुस्त, शाम

(क) सुबह × _____ (ग) सरदी × _____ (ङ) सुस्त × _____

(ख) शिखर × _____ (घ) अपना × _____ (च) धरती × _____

4. दिए गए अनेक शब्दों के लिए उचित एक शब्द छाँटकर लिखिए–

अविकल, ज्योतिर्मय, क्षणभंगुर, श्रमजीवी, गतिवान

(क) क्षणभर में नष्ट होने वाला _____

(ख) श्रम करके जीविका कमाने वाला _____

(ग) जो व्याकुल न हो _____

(घ) जिसमें गति हो रही हो/रहती हो _____

(ङ) जो ज्योति से युक्त हो _____

क्रियात्मक गतिविधि

- प्रात:काल पर लिखी गई 4-5 कविताओं का चित्र बनाकर परियोजना पुस्तिका में लिखिए।
- चाँद और सूरज के संवाद लिखकर उसका अपनी कक्षा में अभिनय कीजिए।

चिट्ठी के अक्षर 12

सुबह के दस बज रहे थे। मुझे डाक से एक चिट्ठी मिली। मैं लिफाफा खोलकर चिट्ठी पढ़ने लगा, "कृपा करके मेरे अखबार के लिए एक कविता भेज दीजिए।" चिट्ठी के नीचे संपादक के हस्ताक्षर थे। संपादक का नाम महिपाल सिंह था। चिटठियाँ तो बराबर आती ही रहती हैं, पर इस चिट्ठी ने मेरे मन को अपनी ओर खींच लिया। इसका कारण यह था कि चिट्ठी की लिखावट बड़ी सुंदर थी। हर अक्षर साँचे में ढला हुआ-सा मालूम पड़ता था।

महिपाल सिंह से मेरी कोई जान-पहचान नहीं थी। यह उनकी पहली चिट्ठी थी। लिखावट देखकर मेरे मुँह से अनायास ही निकल पड़ा, "वाह! बड़ी सुंदर लिखावट है।"

मैंने दूसरे ही दिन कविता भेज दी।

कविता अखबार में छपी। जिस अंक में छपी, वह अंक भी मेरे पास आया।

पूरे बत्तीस पेज का साप्ताहिक अखबार था। शुरू से लेकर अंत तक गाँव की ही बातें छपी थीं। बड़े सुंदर ढंग से सात दिनों के समाचार छाँट-छाँटकर छापे गए थे। किसानों के लिए जानकारी की बहुत-सी बातें भी थीं।

मैं अखबार को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और दूसरे अंक के लिए फिर एक कविता भेज दी। दूसरी कविता भी अखबार में छपी। अब मैं बराबर कविता भेजने लगा। महिपाल सिंह की चिट्ठियाँ भी समय-समय पर आया करती थीं। वे कभी कविता माँगते थे और कभी कहानी माँगते थे। मैं बराबर उनकी इच्छाओं की पूर्ति कर दिया करता था। इसका परिणाम यह हुआ कि हम दोनों के मन मे एक-दूसरे के लिए प्रेम पैदा हो गया। लगभग साल-डेढ़ साल बीत गया। महिपाल सिंह ने अपने एक पत्र में लिखा, "यदि आपका कभी इधर आना हो, तो मेरे ही घर ठहरने की कृपा करें।"

मैंने भी उत्तर में उन्हें लिख दिया, "यदि उधर आना हुआ तो आपके दर्शन जरूर करूँगा।" संयोग की बात, दो-ढाई महीने बाद मुझे उधर एक शादी में जाना पड़ा। मैंने अपने आने की सूचना महिपाल सिंह को दे दी। नियत तिथि पर मैं उस ओर बारात में

सम्मिलित होने के लिए गया। जब बारात से छुट्टी पा गया, तो महिपाल सिंह के घर गया। महिपाल सिंह अपने घर के बाहरी कमरे में कुर्सी पर बैठकर मेज के सहारे कुछ लिख रहे थे।

मैंने दरवाजे पर खड़े होकर पूछा, "क्या महिपाल सिंह हैं?"

महिपाल सिंह ने कुर्सी पर बैठे-ही-बैठे मेरी ओर देखते हुए पूछा, "आप कौन हैं?"

मैंने उत्तर दिया, "मेरा नाम अखिलेश शर्मा है।" महिपाल सिंह एकाएक उछल पड़े। उन्होंने तेजी के साथ आगे बढ़कर मुझे पकड़कर हृदय से लगा लिया और कहा, "अरे शर्मा जी, आप! क्षमा कीजिएगा।"

मैं कुछ कहना ही चाहता था कि मेरी दृष्टि उनके हाथों पर पड़ी। उनका एक ही हाथ था-बायाँ। दायाँ हाथ कंधे तक कटा हुआ था। मैं आश्चर्यचकित होकर उनकी तरफ देखने लगा। वे बड़े खुश थे, बड़े स्वस्थ थे। एक क्षण में ही मेरे मस्तिष्क में अनेक प्रश्न कौंधने लगे।

क्या वह लिखावट इसी आदमी की थी? क्या यह बाएँ हाथ से इतने सुंदर अक्षर लिखता है?

मैं महिपाल सिंह की ओर टकटकी लगाए देखता रहा। तब महिपाल सिंह ने पूछा, "क्या देख रहे हैं?"

क्या यह कि आपको चिट्ठियाँ भेजने वाला महिपाल एक हाथ का आदमी है। अरे भाई, यह जीवन है। जीवन में क्या हो सकता है, कोई कुछ नहीं जानता।

"आप तो मेरे मन की बात भाँप गए। मैं सचमुच यही सोच रहा था कि क्या आदमी बाएँ हाथ से भी इतने सुंदर अक्षर लिख सकता है?"

महिपाल सिंह ने जवाब दिया- "शर्मा जी, दाएँ-बाएँ में कुछ फर्क नहीं होता। जो गुण दाएँ हाथ में होता है, वही बाएँ हाथ में भी होता है। यह तो व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह किस हाथ से काम करता है।"

हाथ-मुँह धोने के बाद जब मैं महिपाल सिंह के साथ चाय पीने लगा, तो मैंने उनसे पूछा, "ठाकुर साहब, आप बाएँ हाथ से कब से लिख रहे हैं?"

महिपाल सिंह विचारों में डूब गए। कुछ देर तक सोचते रहे, फिर बोले, "इस वर्ष मेरी उम्र 55 वर्ष की है। मैं चालीस वर्ष की उम्र तक फौज में था। निशाना मारने में बड़ा तेज था। बाएँ और दाएँ-दोनों हाथों से सटीक निशाना मारता था। संयोग की बात थी कि मुझे एक मोर्चे पर जाना पड़ा। एक दिन जब शत्रु को अपनी गोलियों का निशाना बना रहा था, तो

पास ही एक बम फटा और मेरा दाहिना हाथ कंधे तक उखड़ गया। मैं गिर पड़ा। मुझे अस्पताल ले जाया गया। महीनों अस्पताल में पड़ा रहा। जब अच्छा हुआ, तो सरकार ने मुझे पेंशन देकर सेवा से मुक्त कर दिया।'' सरकार ने मुझ से पूछा कि सेवा से मुक्त होने पर मैं कौन-सा काम करूँगा?

मैंने उत्तर दिया, ''मैं पहले कुछ पढ़ूँगा-लिखूँगा और फिर उसके बाद एक अखबार निकालूँगा।'' सरकार ने मेरे पढ़ने-लिखने और अखबार निकालने का पूरा इंतजाम कर दिया।

मैं घर आकर बाएँ हाथ से लिखने का अभ्यास करने लगा। चार-पाँच साल तक मैं अभ्यास में ही लगा रहा। मैंने बहुत-सी कविताएँ लिखीं, कहानियाँ लिखीं और लेख लिखे। वे सभी चीजें मेरे पास मौजूद हैं। मेरी लिखावट उसी अभ्यास का परिणाम है। जब मैं लिखने में दक्ष हो गया, तो अखबार निकालने लगा। अब आप देख ही रहे हैं कि पूरे बत्तीस पेज का अखबार हर सप्ताह निकालता हूँ।

महिपाल सिंह अपनी बात खत्म करने के बाद उठे। उन्होंने चार-पाँच साल तक अभ्यास के रूप में लिखी हुई अपनी रचनाएँ अलमारी से निकालकर मेरे सामने रख दीं। मैं उनकी रचनाओं को देखने लगा-टेढ़े-मेढ़े अक्षर, दूर-दूर अक्षर, अलग-अलग अक्षर, फिर सुधरे हुए और फिर गोल-गोल सुंदर अक्षर तथा साँचे में ढले हुए अक्षर।

मैं मुग्ध होकर बोल उठा, ''ठाकुर साहब आप धन्य हैं। मैंने बचपन में पढ़ा था- 'रसरी आवत जात तै, सिल पर परत निसान', मगर आज अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देख भी लिया।''

इतना कहने के बाद मैंने महिपाल सिंह से विदा ली।

—श्री व्यथि हृदय

शब्द-अर्थ

लिखावट	—	लिखाई	**साँचे में ढले अक्षर**	—	एक जैसे सुंदर अक्षर
अनायास	—	अचानक	**साप्ताहिक**	—	सप्ताह में एक बार
नियत	—	निश्चित	**सम्मिलित**	—	शामिल
प्रश्न कौंधने	—	प्रश्न उठने	**टकटकी**	—	एक टक, बिना पलक झपकाए
भाँपना	—	समझना	**सटीक**	—	बिल्कुल ठीक
पेंशन	—	सेवा के बदले में मिलने वाली धनराशि	**इंतजाम**	—	प्रबंध
दक्ष	—	निपुण	**प्रत्यक्ष**	—	आँखों के सामने

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए-**

(क) संपादक महोदय का नाम क्या था?

(ख) लेखक उनके अखबार के लिए क्या भेजा करते थे?

(ग) लेखक संपादक महोदय से कब मिले?

(घ) लेखक क्या देखकर आश्चर्यचकित हो गए?

(ङ) संपादक महोदय ने अपना दाहिना हाथ कैसे खोया?

(च) संपादक महोदय की सुंदर लिखाई का श्रेय किसे जाता है?

लिखित

1. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) संपादक का काम है–

- ☐ सूचनाएँ एकत्र करना
- ☐ सूचनाएँ लिखना
- ☐ सूचनाओं को छाँटकर उन्हें प्रकाशन योग्य बनाना
- ☐ सूचनाओं के चित्र बनाना

(ख) अखबार में छपे लेख को लिखने वाले कहलाते हैं–

- ☐ संपादक
- ☐ संवाददाता
- ☐ लेखक
- ☐ पाठक

(ग) सरकार ने महिपाल सिंह को सेवामुक्त क्यों कर दिया?

- ☐ उनका दाहिना हाथ कंधे तक उड़ गया था।
- ☐ वे अब युद्ध करना नहीं चाहते थे।
- ☐ वे बहुत दिनों तक अस्पताल में पड़े रहे।
- ☐ वे अच्छे निशानेबाज नहीं थे।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सुंदर लेख के लिए क्या सावधानी बरतनी चाहिए?

(ख) लेखक संपादक की किस विशेषता से प्रभावित हुए?

(ग) संपादक महोदय ने दोनों हाथों के गुण बताते हुए क्या कहा?

(घ) सेवामुक्त होकर संपादक महोदय ने क्या निर्णय लिया?

(ङ) संपादक महोदय ने अपने अभ्यास के क्या प्रमाण प्रस्तुत किए?

(च) पाठ के संदर्भ में ''रसरी आवत जात तै, सिल पर परत निसान'' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(छ) साप्ताहिक अखबार की क्या-क्या विशेषताएँ थीं?

(ज) लेखक का नाम सुनते ही महिपाल सिंह की क्या प्रतिक्रिया हुई?

(झ) 'जीवन में क्या हो सकता है, कोई कुछ नहीं जानता।'– इस कथन के आधार पर बताइए कि महिपाल सिंह के जीवन में कौन-सी अनहोनी घटना घटी?

(ञ) 'विकलांग हो जाने से निराश नहीं होना चाहिए।'– पाठ के आधार पर अपने विचार लिखिए।

भाषा-ज्ञान

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

(क) महिपाल सिंह एकाएक उछल पड़े।

(ख) मैं महिपाल सिंह की ओर टकटकी लगाए देखता रहा।

(ग) अचानक मेरी दृष्टि उनके हाथों पर पड़ी।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'एकाएक', 'टकटकी लगाए' और 'अचानक' शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द 'क्रिया-विशेषण' कहलाते हैं।

ये शब्द क्रिया की विशेषता, उसके होने का स्थान, उसके होने का समय तथा उसकी मात्रा बताते हैं। क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं-

(क) कालवाच क्रिया-विशेषण (ख) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

(ग) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (घ) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

नीचे लिखे वाक्यों से क्रिया-विशेषण शब्द छाँटिए-

(क) वे चुपचाप बैठे थे। _____

(ख) बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। _____

(ग) मंदिर के आस-पास भीड़ जमा थी। _____

(घ) मैं प्रतिदिन लिखने का अभ्यास करता था। _____

2. (अ) पाठ में प्रयुक्त पाँच विदेशी शब्द छाँटकर लिखिए-

मोर्चा _____ _____ _____ _____ _____

3. (ब) नीचे लिखे वाक्यों में कारक चिह्नों को रेखांकित करते हुए कारकों के नाम लिखिए-

कारक का नाम

(क) आज मैंने अपनी आँखों से देख लिया। _____

(ख) मैं महिपाल सिंह से विदा लेकर घर चला गया। _____

(ग) इस चिट्ठी ने मुझे अपनी ओर खींच लिया। _____

(घ) दूसरे अंक के लिए एक कविता भेज दी। _____

(ङ) चिट्ठी के नीचे संपादक के हस्ताक्षर थे। _____

(च) उन्होंने अलमारी से अपनी रचनाएँ निकालीं। _____

(छ) सरकार ने पूछा कि सेवा मुक्त होने पर वे क्या काम करेंगे? _____

(ज) सरकार ने अखबार निकालने का पूरा इंतजाम कर दिया। _____

4. शब्द-कोश की सहायता से अर्थ जानकर दिए गए शब्द से इस प्रकार वाक्य बनाइए कि उनके अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाएँ-

(क) असमान – _____

(ख) आसमान – _____

(ग) पका – _____

(घ) पक्का – _____

(ङ) दिशा – _____

(च) दशा – _____

(छ) विकल – _____

(ज) विकलांग – _____

(झ) योग – _____

(ञ) योग्य – _____

5. शब्द के जिस रूप से क्रिया के होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। जैसे–

सुबह के दस बजे थे। मैं पढ़ रहा हूँ।

सेवा-निवृत्ति के बाद आप क्या करेंगे?

काल के तीन भेद होते हैं–

(क) वर्तमानकाल (ख) भूतकाल

(ग) भविष्यत्काल

- **निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं को रेखांकित कर उनके काल बताइए–**

काल

(क) मैं कविता पढ़ रहा था। _____

(ख) मेरी उनसे जान-पहचान नहीं थी। _____

(ग) क्या आप महिपाल सिंह हैं? _____

(घ) वे बड़े खुश थे, बड़े स्वस्थ थे। _____

(ङ) ठाकुर साहब, आप धन्य हैं। _____

(च) मैं भी सुंदर लिखने का प्रयास करूँगा। _____

(छ) वे बोले– "मैं पढ़ूँगा, लिखूँगा और फिर अखबार निकालूँगा।" _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **शिवानी की कहानी 'अपराजिता' पढ़िए।**
- **विकलांग लोगों पर बनी प्रेरणास्पद फिल्में 'ब्लैक' और 'बरफी' देखिए।**
- **आपने यदि किसी विकलांग व्यक्ति की सहायता की है, तो उसे कक्षा में सुनाइए।**

कोणार्क की आत्मकथा

13

जिस सौर मंडल का तुम्हारी पृथ्वी एक भाग है, उसका सबसे महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली अंश सूर्य है जो ऊर्जा, शक्ति, ज्योति तथा उष्मा का अथाह पुंज है। सूर्य से हमें ऊर्जा, प्रकाश, उष्मा, शक्ति तथा चेतना मिलती है। समय का चक्र सूर्य द्वारा ही संचालित होता है, रात-दिन का निर्माता सूर्य ही है। सूर्य ही दिशामान कराता है तथा रंगों की दुनिया भी हमें सूर्य ही दिखाता है। पेड़-पौधे सूर्य के प्रकाश द्वारा ही प्रकाश संश्लेषण द्वारा अपना भोजन बनाते हैं जिससे जीव-जंतु, मानव सभी जीवित है। जल-चक्र, नाइट्रोजन-चक्र सभी कुछ सूर्य द्वारा ही संचालित होता है। यही कारण है कि सूर्य हमारे जीवन का आधार कहलाता है। इतिहास साक्षी है कि सभ्यता के आरंभ से ही मनुष्य ने सूर्य की शक्ति को पहचाना और उसकी पूजा आराधना की। चाहे मिस्त्र हो या यूनान, मोहनजोदड़ों हो या हड़प्पा, सृष्टि के प्रत्येक काल में, हर सदी में सूर्य के अपरिमित महत्त्व को श्रेय दिया गया और उसकी स्तुति की गई। जीवन के आधार उसी सूर्य के विलक्षण भवन होने का गौरव मुझे प्राप्त है।

जी हाँ, मैं सूर्य मंदिर कोणार्क हूँ– की तीन स्वर्णिम नगरियों, भुवनेश्वर, कोणार्क और पुरी के त्रिकोण में स्थित, भारत के पूर्वी समुद्र तट पर निर्मित एक अभूतपूर्व स्मारक, भारत के गौरवमय इतिहास का प्रतीक, कला की उन्नत अवस्था का द्योतक और मानव की सबसे उत्कृष्ट और उदात्त भावना का उदाहरण।

मुझे बनवाने का श्रेय पूर्वी गंगा राजवंश के राजा नरसिंह देव प्रथम को जाता है। कहते हैं कि मेरा निर्माण तेरहवीं शताब्दी में राजा नरसिंह देव द्वारा अपनी विजय पताका फहराने और अपनी कीर्ति को सबके सामने प्रदर्शित करने के लिए हुआ। मैं जब बनकर तैयार हुआ तो मेरा सौंदर्य विलक्षण था।

कोणार्क दो शब्दों से मिलकर बना है- कोण और आर्क। कोण का अर्थ है कोना और आर्क प्रयुक्त होता है सूर्य के लिए। अतएव, मैं कोणार्क का मंदिर, सूर्य भगवान को समर्पित हूँ। कहा जाता है कि मेरे निर्माण में बारह सौ शिल्पकार, स्थापत्यकला विद्, कलाकार व कारीगर, बारह वर्षों तक रात-दिन लगे रहे, तब जाकर मेरा भव्य स्वरूप निखर सका। यह भी कहा जाता है कि जब राजा नरसिंह देव के खजाने से बारह वर्षों का धन मेरे निर्माण में लग गया तो उन्होनें अपने प्रधान वास्तुविद् विशु महाराणा को शीघ्र कार्य समाप्त करने के आदेश दिए। किंतु कहीं न कहीं गणना की कुछ त्रुटि के कारण मुख्य स्तंभ टिक नहीं पा रहा था। तब उनके बारह वर्षीय पुत्र धर्मपद ने जो विलक्षण प्रतिभा का धनी था– उस समस्या का निदान सुझाया और अंतिम पत्थर की चिनाई स्वयं कर दी। इस प्रकार मेरे निर्माण का यह एक अत्यंत कोमल और अलौकिक पक्ष है।

मेरे निर्माण के लिए की गई संकल्पना अत्यंत अनोखी थी। मुझे एक विशाल सूर्य रथ के रूप में बनाया गया। इसके हर भाग की नक्काशी अनमोल है। यह रथ सूर्य की द्रुत गति का प्रतीक है जिसे सात विलक्षण घोड़े तेजी से खींच रहे हैं। इस रथ में 10 फीट व्यास के चौबीस पहिए लगे हैं। इन वृहदाकर पहियों की नक्काशी अत्यंत खूबसूरत है। इस प्रकार मेरे निर्माण की संकल्पना ही अत्यंत ऐश्वर्यपूर्ण थी और यही कारण है कि मैं भारत की वास्तुकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हूँ। मेरा विशाल आकार, सूर्य रथ के रूप में भवन का परिशुद्ध अनुपात, विलक्षण वास्तुकला, भव्य शिल्प और अनूठी संरचना सब कुछ दर्शनीय है।

प्रवेश द्वार में दो सिंह रक्षक की तरह द्वार के दोनों ओर खड़े हैं। प्रत्येक सिंह के नीचे एक-एक हाथी है तथा हाथियों के नीचे एक-एक व्यक्ति है। वहीं से ऊपर जाती हुई सीढ़ियों द्वारा मैं सबको ऊपर आने का आमंत्रण देता हूँ। सीढ़ियों से चलकर जब तुम ऊपर पहुँच जाओगे वह स्थान जगमोहन कहलाता है। उसके सामने नट मंदिर है जहाँ भगवान सूर्य के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए नृत्य, गायन, वादन होता था। नट मंदिर के समीप भोग मंदिर है, जहाँ भगवान सूर्य का भोग तैयार होता था। समय के प्रहार के बावजूद ये दोनों मंदिर अभी भी विद्यमान हैं।

जगमोहन वह विशाल इमारत है, जो समय के प्रहारों के बावजूद आज भी अपनी गाथा सुना रही है। बीच में स्थित मुख्य स्तंभ के मात्र अवशेष देखे जा सकते हैं। मेरे मुख्य स्तंभ की ऊँचाई 60 मीटर थी- इतनी ऊँचाई वाला भारत में कोई अन्य मंदिर नहीं बना। मेरे कीर्तिस्तंभ के ढह जाने के कई कारण कहे जाते हैं। कोई कहता है कि मंदिर का निर्माण कार्य जल्द समाप्त करवाने के कारण उसमें कुछ निर्माण संबंधी कमियाँ रह गई थीं। जबकि एक किवदंती के अनुसार मेरे मुख्य स्तंभ के ऊपरी भाग में एक शक्तिशाली चुंबक लगा हुआ था। इसके कारण समुद्र में चलनेवाले जलपोत उसकी दिशा में खिंचकर किनारों से टकराकर नष्ट हो जाते थे। किसी समुद्रीयान चालक द्वारा चुबंक के निकाल दिए जाने के कारण उस स्तंभ में कोई निर्माण संबंधी कमी आने के कारण वह ढह गया। मेरे मुख्य स्तंभ के ध्वस्त अवशेषों को संग्रहालय में रखा गया है। आज भी मेरी एक-एक ईंट और मेरा हर पत्थर, अपनी उत्कृष्ट कला की छाप दूसरों पर छोड़ देता है।

मेरी इमारत का हर भाग सौंदर्य का अद्भुत उदाहरण है। हर सौंदर्य को द्विगुणित करने वाले दृश्य हैं। देवी-देवताओं की भव्य मूर्तियाँ, राजा- महाराजाओं के दरबार के दृश्य, स्वर्ग की अप्सराएँ व गंधर्वलोक के चरित्र, संगीतज्ञ, गायक, नर्तक,

नृत्यांगनाएँ, साजिंदे, प्रेमी-प्रेमिका, प्राकृतिक दृश्यों के चित्र , युद्ध के मैदान के जीवंत चित्र, स्त्री-पुरुषों के विभिन्न भावों को प्रकट करती मूर्तियाँ तथा तरह-तरह के दो हजार से भी अधिक पशु-पक्षियों के चित्र सभी ओर अंकित हैं। मैं अपनी श्रृंगारपूर्ण मूर्तियों द्वारा विशेष रूप से जाना जाता हूँ, जिसमें कोमलता है, सरसता है और प्रतीतात्मक भव्य सौंदर्यानुभूति है। पूरे परिदृश्य में उड़ीसा की कला की गुणवत्ता अपने चरम पर दृष्टिगोचर होती है। यहाँ सूर्य की तीन मूर्तियाँ इस प्रकार रखी हुई हैं कि एक पर प्रातःकालीन प्रकाश, दूसरी पर दोपहर के सूर्य की किरणें तथा तीसरी पर सूर्यास्त की रोशनी पड़ती है।

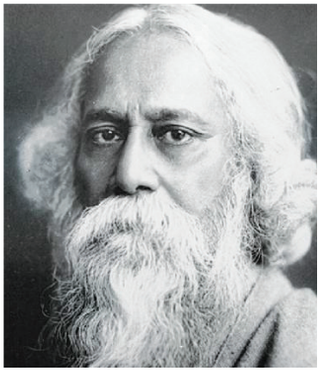

मेरी कला के प्रशंसकों ने विश्व-भर में मेरी उत्कृष्टता की चर्चा की है। प्रतिवर्ष होने वाला कोणार्क समारोह जब खुले रंगमंच में मेरी इमारत के परिप्रेक्ष्य में होता है, तो मैं आनंद के अतिरेक से फिर से आँसू बहाने लगता हूँ। राष्ट्रीय स्मारक निधि के रूप में मुझे घोषित किए जाने से मैं अत्यंत गौरवांवित हूँ और महाकवि टैगोर के शब्दों की मौन प्रतिध्वनि करता हूँ जब उन्होंने मात्र मेरे भग्नावशेषों के लिए यह उक्ति की थी- "इन पत्थरों की भाषा मनुष्य की भाषा को कहीं पीछे छोड़ देती है।"

—डॉ. मधु पंत

शब्द-अर्थ

चेतना — होश-हवास, स्मृति, होश मे आना
दिशाभान — दिशा का ज्ञान
स्तुति — प्रशंसा, किसी के गुणों का वर्णन
अवशेष — बचा हुआ, बाकी, बची हुई वस्तु/कार्य/धन
श्रेय — किसी कार्य के लिए मिलने वाला यश
संश्लेषण — एक में मिलना, मिलान करना, कार्य के कारण का नियम
संकल्पना — परिकल्पना, किसी कार्य को करने का विचार/कल्पना
संचालित — चलाया हुआ, जिसका पुल आदि बनाने के सिद्धांतों का विवेचन होता है
स्थापत्यकला — वह विद्या जिसमें संचालन किया गया हो
वास्तुविद् — इमारत या सेतु बनाने की कला का विशेषज्ञ
नक्काशी — लकड़ी, पत्थर या धातु पर खोदकर बेल-बूटे बनाने की कला।
वृहदाकर — बड़े आकार का
निदान — हल
अपरिमित — जिसकी कोई सीमा न हो
उदात्त — श्रेष्ठ, बड़ा, उदार, कृपालु
किंवदंती — अफवाह
जीवंत — जीवित
उष्मा — गर्मी

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कोणार्क का क्या अर्थ है?

(ख) राजा नरसिंह देव ने सूर्य मंदिर की स्थापना कब की थी?

(ग) आदिकाल से सूर्य की अराधना क्यों की जाती रही है?

(घ) कोणार्क मंदिर किस आकार का है और इसे बनाने में कितने वर्ष लगे थे?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) समय का चक्र किसके द्वारा संचालित है?

☐ चंद्रमा ☐ पृथ्वी ☐ सूर्य

(ख) प्रकाश संश्लेषण द्वारा अपना भोजन कौन बनाता है?

☐ कीट-पतंगें ☐ पेड़-पौधे ☐ पशु-पक्षी

(ग) कोणार्क मंदिर के निर्माण में कितना समय लगा?

☐ दस वर्ष ☐ बारह वर्ष ☐ चौदह वर्ष

(घ) कोणार्क किस प्रकार की कला का उदाहरण है?

☐ संगीत कला ☐ नृत्य कला ☐ स्थापत्य/वास्तुकला

2. गलत उत्तर पर (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) सूर्य क्या नहीं देता?

☐ ऊर्जा ☐ वायु ☐ प्रकाश

(ख) कोणार्क के प्रवेश द्वार पर रक्षक के रूप में किसकी मूर्तियाँ हैं?

☐ हाथी ☐ गरूड़ ☐ सिंह

(ग) कोणार्क का निर्माण राजा नरसिंह देव ने क्यों किया था?

☐ अपनी कीर्ति प्रदर्शित करने के लिए ☐ अपनी शक्ति प्रदर्शन के लिए

☐ अपनी विजय पताका फहराने के लिए

(घ) कोणार्क का मंदिर किसका प्रतीक है?

☐ गौरवमय इतिहास का ☐ पंचतत्वों के प्रति आस्था का ☐ कला की उन्नत अवस्था का

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कोणार्क क्यों प्रसिद्ध है?

(ख) कोणार्क के सूर्य मंदिर के प्रवेश द्वार पर किसकी मूर्तियाँ हैं?

(ग) सूर्य किसका प्रतीक है?

(घ) सूर्य का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

(ङ) प्रकाश संश्लेषण तथा जल-चक्र सूर्य द्वारा कैसे संचालित हैं?

(च) कोणार्क के सूर्य मंदिर की सुंदरता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(छ) नट मंदिर तथा भोग मंदिर क्यों बनाए गए थे?

(ज) सूर्य मंदिर में सूर्य भगवान की कितनी मूर्तियाँ हैं? उनका क्या विशेष महत्त्व है?

(झ) कोणार्क की मूर्तियों की प्रशंसा में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने क्या कहा?

भाषा-ज्ञान

1. गलत पर्याय पर (✗) का चिह्न लगाइए–

तट	–	☐	किनारा	☐	पट	☐	साहिल
विजय	–	☐	जय	☐	सफलता	☐	अजस
पत्थर	–	☐	मूर्ति	☐	पाषाण	☐	प्रस्तर
पेड़	–	☐	तरू	☐	पाहुन	☐	पादप
रात	–	☐	निशा	☐	रजनी	☐	सजनी
पताका	–	☐	केतू	☐	रज	☐	ध्वज

2. सही विलोम शब्द चुनकर लिखिए–

निकास, निंदा, विध्वंस, सूर्योदय, बदसूरत, महत्वहीन

स्तुति _____ प्रवेश _____

महत्त्वपूर्ण _____ निर्माण _____

खूबसूरत _____ सूर्यास्त _____

3. नीचे दिए शब्द किन दो शब्दों से जोड़कर बनाए गए हैं–

भग्नावशेष _____ + _____ द्रुतगामी _____ + _____

सूर्यास्त _____ + _____ राजवंश _____ + _____

कोणार्क _____ + _____ गंधर्वलोक _____ + _____

4. दिए गए शब्दों से तीन-तीन शब्द बनाइए–

महा	–	महाकवि	_____	_____	_____
राज्य	–	राज्यसभा	_____	_____	_____
राष्ट्र	–	राष्ट्रपति	_____	_____	_____
जन	–	सज्जन	_____	_____	_____
अर्थ	–	आर्थिक	_____	_____	_____
ज्ञान	–	ज्ञानी	_____	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- **भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जो वाक्य में प्रयुक्त होने पर अर्थवान हो जाते हैं तथा विचारों को स्पष्ट करने में एक विशेष भूमिका निभाते हैं। वे सार्थक शब्दों के द्वित्व रूप होते हैं। ये अपने मूल अर्थ को छोड़कर एक विशेष अर्थ देते हैं। उदाहरण–**

  (क) विद्यालय की घंटी की टन-टन सुनकर वह कक्षा में चला गया।

  (ख) नल से टप-टप पानी टपक रहा हैं।

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों द्वारा कीजिए–**

  खटपट, बक-बक, टर्र-टर्र, डबडबा, भिनभिना, टिक-टिक

  (क) तुम्हारी _____ सुनकर मेरे कान पक गए हैं।

  (ख) उसकी दुखभरी कहानी सुनकर मेरी आँखें _____ गई।

  (ग) आजकल सीता और रीता में _____ हो गई हैं।

  (घ) बरसात के दिनों में मेंढक _____ करता हैं।

  (ङ) गंदगी पर मक्खियाँ _____ रही थीं।

  (च) घड़ी की _____ रात के सन्नाटे में साफ सुनाई दे रही थी।

- **जिस प्रकार हम अपना परिचय, अपना नाम, माता-पिता का नाम, पता तथा कार्य बताकर देते हैं, उसी प्रकार वाक्य में प्रयुक्त शब्द (पद) का व्याकरणिक परिचय पद-परिचय कहलाता है।**

- **वाक्य में अनेक पद होते हैं। उनका परिचय निम्नलिखित तालिका के आधार पर किया जाता है–**

पद	परिचय का आधार
संज्ञा	संज्ञा भेद, लिंग, वचन, कारक
सर्वनाम	सर्वनाम भेद, लिंग, वचन, कारक
विशेषण	विशेषण भेद ,लिंग, वचन
क्रिया	क्रिया भेद, लिंग, वचन, काल
क्रिया-विशेषण	क्रिया विशेषण भेद
संबंधबोधक	केवल पद का नाम
समुच्चयबोधक	केवल पद का नाम
विस्मयादिबोधक	केवल पद का नाम
निपात	केवल पद का नाम

- **नीचे दिए वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का पद-परिचय देखिए–**

  शैलजा पत्र लिखती है।

  शैलजा — व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक

  पत्र — जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक

लिखती है — सकर्मक क्रिया, संयुक्त क्रिया, एकवचन, स्त्रीलिंग, वर्तमान काल

- **रंगीन शब्दों का पद-परिचय दीजिए–**

(क) मानस विद्यालय जाएगा। _____

(ख) तुमने पुस्तक पढ़ ली। _____

(ग) मैं मुंबई में नहीं रहती। _____

(घ) कल वर्षा हुई थी। _____

- **संकेतों की सहायता से वर्ग-पहेली पूरी कीजिए–**

(क) जहाँ गौतम बुद्ध ने पहला उपदेश दिया था — सा

(ख) दिल्ली में स्थित स्मारक — इं

(ग) आगरा के निकट स्थित मुगलकालीन इमारत — फा

(घ) हैदराबाद में स्थित वास्तुकला का अद्भुत नमूना — चा

(ङ) केरल का एक प्रसिद्ध मंदिर — प

(च) दिल्ली में स्थित मंदिर — अ

14 कहीं ऐसा न हो

अब्दुल तेज़ी से स्कूल की ओर बढ़ा जा रहा था। उसकी नज़र बार-बार घड़ी पर चली जाती थी। वह काफ़ी लेट हो गया था। उसे डर था कि आज भी वह देर से स्कूल पहुँचा तो कक्षाध्यापक उसे फिर डाँट पिलाएँगे। इसी उधेड़बुन में उसने आसमान की तरफ़ नज़र दौड़ाई तो हैरान रह गया। काले-काले बादल घुमड़ रहे थे। तेज़ हवाएँ भी चलने लगी थीं। अब्दुल ने अपनी चाल और तेज़ कर दी, ताकि जल्दी-से जल्दी स्कूल पहुँच सके। हवा पूरी शक्ति से उसे धकेल रही थी। फिर भी वह जितना तेज़ चल सकता था, चल रहा था।

हवा का वेग बढ़ता ही जा रहा था। अब्दुल का एक-एक पग बढ़ाना कठिन हो रहा था। थोड़ी ही देर में वह हाँफने लगा और बैठ गया। धूल के कारण उसने अपना सिर घुटनों में छिपा लिया। तभी उसे बादलों की तेज़ गरज और हवा की तीव्र सनसनाहट सुनाई दी। उसे लगा कि वह चक्रवात में घिर गया है। इसके बाद उसे कुछ भी होश न रहा।

काफ़ी समय बाद, शरीर पर ऊष्मा का तीखा स्पर्श पाकर उसकी चेतना लौटी। गरमी के कारण शरीर में चींटियाँ-सी रेंगती महसूस हो रही थीं। सूरज की किरणें त्वचा झुलसाए दे रही थीं। दम घुटता हुआ-सा महसूस हो रहा था। वह घबराकर उठ बैठा। चारों ओर सन्नाटा था। दूर-दूर तक चौड़ी सड़के फैली थीं, और किनारों पर विचित्र ढंग की इमारतें बनी हुई थीं। अपने को अनजान नगरी में पाकर वह आश्चर्यचकित हो रहा था। सूरज की तेज़ चमक और गरमी के कारण उसकी आँखें बंद हुई जा रही थीं। साँसें धीरे-धीरे ठहरती-सी महसूस हो रही थीं। दूर-दूर तक छाया का नामोनिशान नहीं था।

तभी अब्दुल ने एक विचित्र आदमी को देखा। उसने अत्यंत चमकदार वस्त्र पहन रखे थे। अब्दुल की आँखे चुँधियाने लगीं।

अब्दुल ने मदद के लिए पुकारा, "अंकल सुनिए...।" अब्दुल की आवाज़ शायद उस व्यक्ति ने नहीं सुनी। वह उसकी तरफ़ ध्यान दिए बिना सामने की इमारत में चला गया। अब्दुल उसके पीछे-पीछे दौड़ा। उस व्यक्ति को इमारत में जाते देख उसने ज्यों ही अंदर घुसना चाहा, उसे अपने शरीर पर बिजली का तेज़ झटका-सा लगा। वह चीख मारकर दूर जा गिरा। उसकी चीख सुनकर वह व्यक्ति दौड़कर बाहर आया। उसे ज़मीन पर पड़ा देखकर वह चिल्लाया, "कौन हो तुम? तुमने ऑक्सीजन मास्क नहीं लगा रखा है और न ही ऊष्मा-रोधी कपड़े पहन रखे हैं। तुम्हारा दम घुट जाएगा। सूरज की किरणें तुम्हें जला डालेंगी।"

अब्दुल को उसकी आवाज़ में एक अजीब-सी खनक महसूस हुई, जैसे आवाज़ किसी खोखले पाइप से आ रही हो। वह व्यक्ति फिर बोला, "अब तुम मेरे साथ आ सकते हो।"

अब्दुल डरता-डरता उसके पीछे हो लिया। कमरे में पहुँचकर उस व्यक्ति ने पूछा, "तुम इस शहर में अजनबी लगते हो...।"

"मैं... " अब्दुल अचकचा गया, "मैं.... मैं स्कूल जा रहा था। इधर कैसे आ गया, कुछ पता नहीं।"

"खैर... क्या नाम है तुम्हारा?"

"जी अब्दुल।"

"मेरा नाम बर्नीज है।" वह व्यक्ति अपना परिचय देता हुआ बोला, "मैं ऑक्सीजन के सिलिंडर बेचता हूँ।"

अब्दुल अभी सहज नहीं हो पाया था। वह भौचक्का-सा चारों ओर देख रहा था। उस व्यक्ति ने पुनः उसकी तंद्रा भंग की। वह कह रहा था, "एक बात समझ में नहीं आई कि ऐसी भी क्या मजबूरी थी, जो बिना ऑक्सीजन-मास्क लगाए और बिना ऊष्मा-रोधक कपड़े पहने, तुम बाहर निकल पड़े? जानते नहीं, वायुमंडल में हानिकारक गैसों की मात्रा इतनी बढ़ चुकी है कि बिना मास्क लगाए जीवित नहीं रहा जा सकता है। सूरज की किरणें इतनी तीखी हो चुकी हैं की ऊष्मा-रोधी कपड़े न पहनने पर त्वचा झुलस सकती है।"

"यह ऑक्सीजन-मास्क और ऊष्मा-रोधी कपड़े क्या बला हैं?"

"तुम्हें इतना भी नहीं पता...।" वह व्यक्ति आश्चर्य से उछल-सा पड़ा, "वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाने के कारण ऑक्सीजन-मास्क लगाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि शुद्ध ऑक्सीजन मिलती रहे और ऊष्मा-रोधी कपड़े सूरज की गरमी और पराबैंगनी विकिरण से बचने के लिए विकसित किए गए हैं। ये चमकीले व चिकने होते हैं ताकि सूरज की ऊष्मा को परावर्तित कर सकें। इनकी चकाचौंध से बचने हेतु हेलमेट में पोलेराइड का चश्मा लगाया जाता है।"

"पर सूरज इतना गरम क्यों है?"

अब्दुल का प्रश्न सुनकर वह व्यक्ति क्षण भर के लिए चुप हो गया। फिर एक ठंडी आह भरते हुए बोला,

"यह सब हमारे पूर्वजों की अदूरदर्शिता का परिणाम है।"

"क्या मतलब...?"

"हमारे पूर्वजों ने औद्योगीकरण और विकास की दौड़ में पर्यावरण को दाँव पर लगा दिया। क्लोरीन व कार्बन जैसी वायु प्रदूषित करने वाली गैसों की वायुमंडल में अधिकता हो जाने के कारण ओजोन गैस का तेजी से विघटन होने लगा। फलस्वरूप वायुमंडल के ऊपरी भाग में स्थित ओज़ोन की परत उधड़नी आरंभ हो गई। इसके कारण सूर्य की पराबैंगनी किरणें, जो ओजोन गैस द्वारा अवशोषित कर ली जाती थीं, सीधी धरती पर पड़ने लगीं। इसी कारण धरती का ताप बढ़ गया है और सूर्य की किरणें असह्य हो गई हैं।"

"इससे बचने का कोई उपाय नहीं है?" अब्दुल ने पूछा।

"नहीं, अब कुछ नहीं हो सकता।" उस व्यक्ति ने निराशा से सिर हिलाया, "अगर हमारे पूर्वजों ने समय रहते इस ओर ध्यान दिया होता, तो यह नौबत न आती। पेड़ लगाए जाते, हानिकारक गैसों के प्रयोग में कमी लाई जाती, हर संभव प्रकार से प्रदूषण में कमी की जाती, तो शायद इस समस्या से लंबे समय तक बचा जा सकता था, पर अब कुछ नहीं हो सकता। अब हम उस अपंग व्यक्ति की तरह हैं, जो मौत को धीरे-धीरे करीब आता देखकर भी नहीं भाग सकता।"

इतना कहकर वह व्यक्ति चुप हो गया। उसकी आँखों में भय की छाया नाच रही थी। अब्दुल भी सहम गया था। काफ़ी देर तक दोनों चुपचाप बैठे रहे। आखिरकार वह व्यक्ति चुप्पी तोड़ते हुए बोला, "क्षमा करना, मुझे एक काम से बाहर जाना है। मैं अब और समय नहीं दे सकता। इसके लिए मैं दोबारा क्षमा चाहता हूँ।"

"नहीं-नहीं, मैं भी अब चलता हूँ।" उस व्यक्ति की असुविधा का खयाल करके अब्दुल उठ खड़ा हुआ और विदा लेकर बाहर आ गया। सिर पर चिलचिलाती धूप, तपती सड़कें, आँखें चुँधियाती इमारतें। अब्दुल परेशान हो उठा। हाँ, ये गनीमत थी कि उस व्यक्ति ने ऑक्सीजन-मास्क वापस नहीं माँगा था। तभी अब्दुल की नज़र ऑक्सीजन-सिलिंडर के मीटर पर गई। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया।

मीटर की सुई लाल निशान की ओर बढ़ रही थी। इसका मतलब यह था कि कुछ ही मिनटों में ऑक्सीजन समाप्त होने वाली थी।

थोड़ी ही देर बाद ऑक्सीजन खत्म हो गई। अब्दुल की साँस रुकने लगी। उसने अपना मास्का नोचकर फेंक दिया। उसने चीखने की कोशिश की, तो आवाज़ गले में अटककर रह गई। वह ज़मीन पर गिरकर तड़पने लगा। तभी किसी ने उसे झिंझोड़ा।

अब्दुल हड़बड़ाकर उठ बैठा। सूरज की तेज़ रोशनी उसके चहरे पर पड़ रही थी। उसका हृदय तेज़ी से धड़क रहा था। सामने माँ खड़ी थी। उन्होंने ही उसे जगाया था।

'ओह, तो यह सपना था।' उसने अपने-आप को समझाया। लेकिन तभी उसके भीतर से आवाज़ आई- 'सपना नहीं, आने वाले कल की तसवीर थी।' अब्दुल घबरा गया। उसकी समझ में न आया कि वह क्या करे। वह तेज़ी से उठा और कमरे से बाहर निकल गया।

–मोहम्मद अरशद खान

शब्द-अर्थ

लेट	— विलंब	**उधेड़बुन**	— निर्णयहीनता की स्थिति
वेग	— गति; प्रवाह	**पग**	— कदम
चक्रवात	— बवंडर	**ऊष्मा**	— गरमी, ताप
स्पर्श	— छुअन	**चेतना**	— होश
त्वचा	— चमड़ी	**रोधी**	— रोकने वाला
भौचक्का	— हैरान	**तंद्रा**	— ध्यान
विकिरण	— चारों तरफ़ फैलना	**परावर्तित करना**	— प्रतिबिंबित करना
अदूरदर्शिता	— दूर तक न सोचना	**विघटन**	— विनाश
परत	— तह	**उधड़ना**	— खुलना
अवशोषित	— सोखा गया	**असह्य**	— जो सहने योग्य न हो
नौबत	— समस्याजनक स्थिति	**गनीमत**	— संतोषजनक बात

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) अब्दुल की नज़र बार-बार घड़ी पर क्यों जाती थी?

(ख) अब्दुल ने अपना सिर घुटनों में क्यों छिपा लिया?

(ग) विचित्र आदमी का क्या नाम था?

(घ) अब्दुल हड़बड़ाकर क्यों उठ बैठा?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) क्या बढ़ता ही जा रहा था?

☐ हवा का प्रवाह ☐ सूरज का ताप ☐ हवा का दबाव ☐ हवा का वेग

(ख) अब्दुल ने किसे देखा?

☐ विचित्र पशु को ☐ विचित्र पक्षी को ☐ विचित्र आदमी को ☐ दिव्य पुरुष को

(ग) व्यक्ति की आँखों में किसकी छाया नाच रही थी?

☐ भय की ☐ पीड़ा की ☐ अवसाद की ☐ दु:ख की

(घ) थोड़ी ही देर बाद क्या खत्म हो गई?

☐ हाइड्रोजन ☐ ऑक्सीजन ☐ नाइट्रोजन ☐ मीथेन

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) ''सूरज की किरणें तुम्हें जला देंगी।'' यह बात किसने-किससे और क्यों कही?

(ख) बर्नीज ने अब्दुल को अपना परिचय देते हुए क्या कहा?

(ग) ''यह ऑक्सीजन मास्क और ऊष्मा-रोधी कपड़े क्या बला हैं''—अब्दुल की इस बात का बर्नीज ने क्या उत्तर दिया?

(घ) ''यह सब हमारे पूर्वजों की अदूरदर्शिता का परिणाम है।''—यहाँ किस अदूरदर्शिता की बात की गई है? क्या अब उससे बचने का कोई उपाय नहीं था?

(ङ) ''सपना नहीं, आने वाले कल की तसवीर थी''— क्या आप इस कथन से सहमत हैं? विस्तारपूर्वक उत्तर दीजिए तथा अपने उत्तर के लिए उचित तर्क भी दीजिए।

भाषा-ज्ञान

1. दिए गए शब्दों का वर्णों-विच्छेद कीजिए।

(क) इमारत – _____

(ख) बिजली – _____

(ग) परिचय – _____

(घ) समस्या – _____

(ङ) दूरदर्शिता – _____

2. दो ध्वनियों या वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं। जैसे- कक्षा + अध्यापक = कक्षाध्यापक (संधि से बना शब्द)

संधि-विच्छेद का अर्थ होता है- दो वर्णों के मेल से बने नए शब्द को पूर्व स्थिति में लाना। जैसे- परावर्तित = पर + आवर्तित (संधि-विच्छेद)

दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए।

(क) तल्लीन – _____ + _____ (ख) वातावरण – _____ + _____

(ग) शिष्टाचार – _____ + _____ (घ) संसार – _____ + _____

(ङ) स्वच्छ – _____ + _____ (च) नमस्ते – _____ + _____

(छ) अत्याचार – _____ + _____ (ज) सदैव – _____ + _____

3. निम्नलिखित शब्दों के रूप पहचानकर तत्सम, तद्भव, देशज अथवा विदेशी शब्द लिखिए।

(क) स्कूल – _____ (ख) ऊष्मा – _____

(ग) हृदय – _____ (घ) चींटी – _____

(ङ) सूर्य – _____ (च) गनीमत – _____

(छ) पर्यावरण – _____ (ज) थैला – _____

4. निम्नलिखित शब्दों के उचित पर्यायवाची शब्दों पर गोला (◯) लगाइए।

(क)	बादल	—	खग	मेघ	घन
(ख)	हवा	—	पवन	समीर	हर्ष
(ग)	शरीर	—	देह	हस्ती	तन
(घ)	दिन	—	दिवस	वासर	भानु
(ङ)	बिजली	—	विद्युत	अनल	दामिनी
(च)	आँख	—	चक्षु	नेत्र	विपिन
(छ)	अँधेरा	—	शशि	तम	तिमिर

5. निम्नलिखित उपसर्गों से तीन-तीन नए शब्द बनाइए, जो पुस्तक में न आए हों।

	उपसर्ग	पहला शब्द	दूसरा शब्द	तीसरा शब्द
(क)	प्रति —	_____	_____	_____
(ख)	कु —	_____	_____	_____
(ग)	वि —	_____	_____	_____
(घ)	अ —	_____	_____	_____
(ङ)	अव —	_____	_____	_____

6. शब्द बनाइए।

(क)	मंडल	—	_____	_____	_____
(ख)	करण	—	_____	_____	_____
(ग)	चकित	—	_____	_____	_____
(घ)	कारक	—	_____	_____	_____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) पृथ्वी के निरंतर बढ़ते तापमान पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए।

(ख) अम्लीय वर्षा (Acid Rain) के बारे में जानकारी प्राप्त कर परियोजना कॉपी में लिखिए।

(ग) पर्यावरण प्रदूषण पर एक चार्ट बनाइए।

(घ) आप पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए क्या-क्या कर सकते हैं? कक्षा में चचा। कीजिए। चर्चा के मुख्य बिंदुओं को नोटबुक में लिखिए तथा इस पर एक अनुच्छेद घर से लिखकर लाइए।

(ङ) पेड़ों को काटा जाना पर्यावरण को निरंतर किस प्रकार प्रभावित कर सकता है? लिखिए।

(च) किसी औद्योगिक क्षेत्र के शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन कीजिए और एक रिपोर्ट तैयार कीजिए कि वहाँ आपने ऐसा क्या देखा कि जो आपके विचार से पर्यावरण के लिए सही नहीं है?

बंदिनी जननी

15

बंदिनी जननी! तुझे
हम मुक्त कर देंगे!
शृंखलाएँ ताप से उर की गलेंगी,
भित्तियाँ यह लौह की रज में मिलेंगी,
रक्त से अपने खिलाकर लाल बादल,
तिमिर को अब हम उषा आरक्त कर देंगे!
तुझे हम मुक्त कर देंगे...।
मस्तक देकर आज खरीदेंगे हम ज्वाला!
जो ज्वाला नभ में बिजली है,
जिससे रवि-शशि ज्योति जली है,
तारों में बन जाती जो
शीतलतादायक उजियाला।
मस्तक देकर आज...।
सिरमौर-सा तुझको रचा था
विश्व में करतार ने,
आकृष्ट था सबको किया
तेरे मधुर व्यवहार ने।
वह युग कहाँ अब खो गया,
वे देव, वे देवी नहीं,
ऐसी परीक्षा भाग्य ने
किस देश की ली थी कहीं?
अवतार प्रभु लेते रहे,
अवतार ले फिर आइए,
इस दीन भारतवर्ष को
फिर पुण्य-भूमि बनाइए।

—महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में हुआ था। वे प्रयाग के महिला विद्यापीठ में प्राचार्या थीं। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयास किए। सन् 1987 में छायावाद की एक प्रमुख आधार स्तंभ महादेवी जी का निधन हो गया। वे पद्य एवं गद्य दोनों ही लिखती थीं। इन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' तथा 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया। 'नीरजा', 'यामा', 'दीपशिखा', 'नीहार', 'स्मृति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र' आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

शब्द-अर्थ

मुक्त	—	आजाद	शृंखलाएँ	—	जंजीर
ताप	—	गर्मी	उर	—	हृदय
भित्तियाँ	—	दीवारें	रज	—	मिट्टी
तिमिर	—	अंधेरा	आरक्त	—	लालिमामय
ज्वाला	—	आग	रवि	—	सूर्य
शशि	—	चंद्रमा	करतार	—	सृजन करने वाला
आकृष्ट	—	आकर्षित			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) कवयित्री किसे मुक्त करने की बात कह रही है?

(ख) 'सिरमौर' किसके लिए आया है?

(ग) प्रभु अक्सर क्या करते हैं?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) 'बंदिनी जननी' किसे कहा गया है?

- ☐ दुर्गा माँ को
- ☐ मातृभूमि को
- ☐ कवयित्री ने अपनी माता को
- ☐ सभी को

(ख) ज्वाला की तुलना कवयित्री ने किससे की है?

- ☐ पानी से
- ☐ बिजली से
- ☐ जुगनू से
- ☐ प्रलय से

(ग) इस कविता की रचना किसने की है?

- ☐ महादेवी वर्मा
- ☐ सुमित्रानंदन पंत
- ☐ रामवृक्ष बेनीपुरी
- ☐ हरिशंकर परसाई

2. कवितांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

सिरमौर-सा तुझको रचा था
विश्व में करतार ने,
आकृष्ट था सबको किया
तेरे मधुर व्यवहार ने।
वह युग कहाँ अब खो गया
वे देव, वे देवी नहीं,
ऐसी परीक्षा भाग्य ने
किस देश की ली थी कली?

(क) किस युग की बात की जा रही है?
_____

(ख) भारतवर्ष को कैसा कहा जा रहा है?
_____

(ग) "वे देव, वे देवी नहीं" का आशय स्पष्ट कीजिए।
_____

3. अधिकतम शब्दों में–

(क) कवयित्री जननी को कैसे मुक्त कराएगी?

(ख) कवयित्री भारतवर्ष को कैसा बनाने के लिए कह रही है?

(ग) कवयित्री ने भारतवर्ष को दीन क्यों कहा?

भाषा-ज्ञान

1. पर्यायवाची लिखिए–

रवि	–	_____	_____	बादल	–	_____	_____
शशि	–	_____	_____	नभ	–	_____	_____
जननी	–	_____	_____	विश्व	–	_____	_____
बिजली	–	_____	_____	प्रभु	–	_____	_____

2. विलोम लिखिए–

देव	–	_____	मुक्त	–	_____	पुण्य	–	_____
तिमिर	–	_____	मधुर	–	_____	शीतल	–	_____

क्रियात्मक गतिविधि

- पता करके लिखिए कि महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' क्यों कहा जाता है?
- देशप्रेम से संबंधित कुछ प्रसिद्ध कविताओं का संकलन तैयार कीजिए।

धरती का स्वर्ग 16

विशाल भारत के दो छोर हैं - कन्याकुमारी और हिमालय।

कन्याकुमारी की सागर तरंगें अपने मंद हास से हमें चकित करती हैं। सागर के झाग को देखते-देखते मन आया कि एक बार कश्मीर की बरफीली चोटियों की झाँकी मिले, तो कितना अच्छा हो। यात्रा साहित्य में भी कश्मीर का वर्णन पढ़ते-पढ़ते यह इच्छा बार-बार उभर उठती थी।

ईश्वर की इच्छा मुझे कोरी कल्पना से ही संतुष्ट रखने की नहीं थी। उसने कश्मीर को सचमुच देख लेने का सुयोग दिया और एक दिन गोश्रीनगर (कोच्चि) से मैं श्रीनगर के लिए रवाना हो गया।

कश्मीर का नाम प्रत्येक भारतीय को लुभाता है। किसी ने यहाँ तक कहा है कि पृथ्वी पर अगर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है। कहा जाता है कि आज जहाँ घाटी है, वहाँ पहले सतीसर झील थी, जो पर्वतों की बरफ के पिघलने से बनी थी। महाभारत काल से ही कश्मीर के शासकों की गाथाएँ मिलती हैं। आगे प्रामाणिक इतिहास के युग में अशोक ने कश्मीर में अनेक बौद्ध विहार एवं स्तूप बनवाए थे। इतिहास की लंबी परंपरा में सम्राट ललितादित्य का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसका साम्राज्य बहुत ही समृद्धिशाली था। वे स्वयं साहित्यकार और कला प्रेमी थे।

कोच्चि से श्रीनगर की लंबी यात्रा में रेल द्वारा अनेक प्रदेशों से गुजरता हुआ मैं जम्मू (जम्मू तवी) पहुँचा। जम्मू के पर्वतीय नगर से श्रीनगर की बस में बैठते समय मन जोशीला था। प्रभाती पवन में चुभन भरी शीतलता थी। सोचा कि पाँच-छह घंटे की यात्रा होगी। मगर बारह घंटे की यात्रा की बात सुनकर पहले कुछ घबराया। जब सुना कि एक ही चालक पूरे बारह घंटे बस चलाएगा, तब तो और भी सकपकाया। एक तरफ ऊँचे पहाड़ों से भरी पत्थरों के लुढ़ककर गिरने की संभावना, दूसरी तरफ जरा-सा फिसलने पर पाताल में बहती चिनाब की तीव्र धारा में गिर जाने का भय।

वैसे पहाड़ी पथ पर बस में चलने की आदत केरलवासियों के लिए नई नहीं है। कालीकट एवं कैण्णूर से मैसूर का रास्ता इसी तरह का है। कोट्टायम से तक्कड़ी का रास्ता भी कम पहाड़ी नहीं हैं। वहाँ कभी-कभी इक्के-दुक्के जंगली हाथियों के आक्रमण का भी डर रहता है। तो भी हिमालय की गोदी में जितनी विकट दशा है, उतनी अन्यत्र नहीं।

रास्ते में देखा, कठोर प्रकृति से संघर्ष, समझौता और प्रेम करके कितने ही मामूली लोग अति दुर्गम ऊँचे पर्वतीय प्रदेश में भी कृषक जीवन बिताते हैं, जंगल में मंगल करते हैं। रास्ते में बीच में छोटे-छोटे कस्बे आते हैं, दुकानों की कतारें, छोटी-छोटी पाठशालाएँ, होटल, सिनेमाघर भी। देहाती इन्हें शहर ही मानते हैं।

चढ़ाई और उतराई और उतराई और चढ़ाई का बारी-बारी से अनुभव करते और जहाँ-तहाँ थोड़ा-सा विश्राम, नाश्ता करते हुए हम शाम को साढ़े चार बजे बनिहाल रेस्ट हाउस के सामने पहुँचे। स्थानीय भूगोल की जानकारी के अभाव में कैसे पता लगता कि हम कितनी ऊँचाई पर हैं? यहाँ जलपान और विश्राम में पहले से अधिक समय लगा, तो कुछ देर चहलकदमी करता रहा। बगल की दुकान पर मंगलौर की बनी बीड़ियों का बंडल देखकर कौतुहल हुआ। छोटी-छोटी जरूरी चीजें सारे देश को कैसे एकतामय कर देती हैं। खोजने पर केरल का बना साबुन भी शायद मिल जाता।

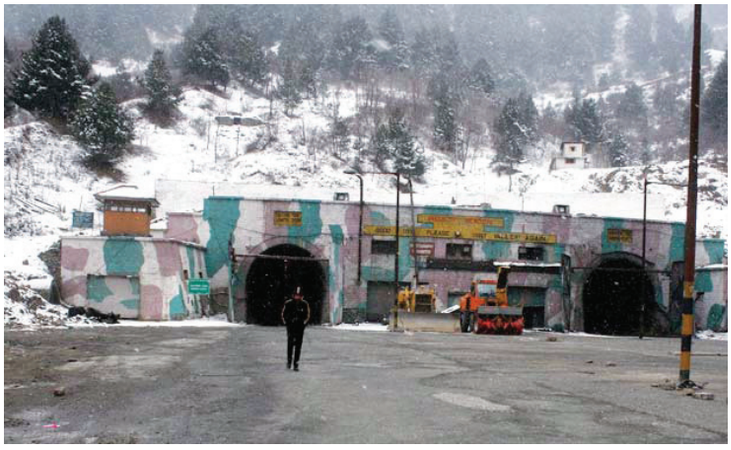

बस अब तेज चाल से जवाहर सुरंग की ओर बढ़ी। इस पथ को पार करते हुए पुलकित हुए बिना नहीं रह सकते। इंजीनियरों की अद्‌भुत प्रतिभा, अदम्य साहस और कार्य शक्ति ने इस दुर्गम पर्वत में विशाल सुरंग पथ बनाकर कश्मीर और शेष भारत का पथ पूरे वर्ष चलने लायक बना दिया। प्रकाश धारा बहाती, सीटी बजाती बस सुरंग पथ से आगे बढ़ रही थी। रोमांचकारी दृश्य था। मानव शक्ति से यंत्र शक्ति की श्रेष्ठता को मानते हुए हम आगे रहे थे। विचारों में डुबकी लगाए रहने से पता ही नहीं चला कि जवाहर सुरंग कब पार कर ली। अब बस उतार पर चलने लगी और नए समतल स्थान काजीकुंड में पहुँचे। काजीकुंड से श्रीनगर की यात्रा समतल थी, इसलिए बड़ी तेजी रही। पर्वतीय भूमि की जगह भारत के अन्य नगरों के समान किसी नगर का चक्कर लगाने का ही अनुभव हो रहा था। दो घंटे में हम श्रीनगर पहुँचे।

कश्मीर की राजधानी ज्योतिर्मय नगर श्रीनगर के रजकण को प्रणाम कर मैंने अपने आपको धन्य माना। वर्षों की अभिलाषा जब किसी दिन सफल होती है, तब वह आनंद केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है। बरफ और केसर के नगर में कदम रखने पर मेरी पहली मानसिक प्रतिक्रिया इस सुयोग पर भगवान को धन्यवाद देने की थी।

साफ-सुंदर पर्यटक केंद्र के सामने स्वच्छ सड़के और छोटे-बड़े हरे मैदान बड़े ही मनमोहक लग रहे थे। नगर के बीच झेलम, जगह-जगह उसे पार कराने वाले पुल, जिन्हें कदम कहते हैं, दिखाई दिए। पहले स्त्री-पुरुषों का लंबा कश्मीरी चोंगा, ऊनी कपड़े, पगड़ी, टोपी आदि देखते समय अनावश्यक लगते थे। मगर इस भूभाग की जलवायु का प्रत्यक्ष अनुभव करने पर इसकी जरूरत प्रमाणित हो गई, काँगड़ी की आवश्यकता भी विदित हुई।

सहज कौतूहल के कारण कश्मीरी की भाषाओं के बारे में प्रश्न करने पर पता चला कि बोलियाँ कई हैं, पर श्रीनगर में मुख्य रूप से कश्मीरी और उर्दू बोली जाती हैं।

श्री शंकराचार्य पहाड़ी श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान है। यह मठ बहुत पुराना है और जनश्रुति के अनुसार यहाँ का मंदिर पांडव वंश के राजाओं का बनाया है। यहाँ शिवजी और शंकराचार्य की मूर्तियाँ हैं, और मंदिर तक चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। पहले सड़क से पैदल ही मंदिर पहुँच सकते थे। अब मोटर से भी जाया जा सकता है। इस ऊँचे पहाड़ पर खड़े

होकर श्रीनगर का काफी बड़ा हिस्सा दिखाई देता है। श्रीनगर की डल झील, तैरते बाग और उनके चारों ओर की पहाड़ियों के निराले दृश्य बड़े ही मनोहारी है। केरल में जन्में जगद्गुरू शंकराचार्य जी को उत्तर भारतीय सीमा पर इस गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित देखकर मेरा मन गर्व का अनुभव कर रहा था।

पहाड़ी से उतरकर सड़क पर आया, तो सामने डल झील में शिकारे हवा के झोंकों से झूम रहे थे। डल झील कश्मीर की जान है। शायर इसकी तारीफ करते नहीं अघाते, छायाकार इसकी रंगीन छवियों को भिन्न-भिन्न कोणों से अब भी उतारते रहते हैं।

प्रथम दृष्टि पर मेरा मन कहने लगा- कोच्चि की विशाल झील के सामने यह कुछ भी नहीं हैं। पर पहाड़, बरफ, झील की नौका, यात्रा, हाउस बोट आदि अनेक प्रकार के आनंद एक साथ एक ही जगह मिलते हैं, तो कश्मीर में। डल झील उसका मुख्य केंद्र है।

जब हम डल झील पहुँचे, तब साँझ हो गई थी; अतएव सैर करने वालों की भीड़ छँट चुकी थी। इक्के-दुक्के शिकारे तालगति पर चप्पू मारते, भिन्न-भिन्न दिशाओं में भटक रहे थे। एक शिकारे का मल्लाह हमें घुमाने को तैयार हो गया। सिर पर कश्मीरी टोपी, दुबला-पतला तन, छोटी-पतली दाढ़ी, साधारण कपड़े। वह डींग मारने लगा। चंद मिनट ही बीते होंगे कि साथियों को आवाज दे-देकर कुछ बताने लगा। उसका चेहरा थकावट में भी खिल उठा था। अपने मित्र से मुझे मालूम हुआ कि वह ईद का चाँद देखने की सूचना दे रहा था। हमें झटपट एक किनारे लगाकर वह बोला, "अब मैं नहीं चलूँगा, नमाज पढ़ूँगा, दूसरे को ले जाइए।"

नए शिकारे का मल्लाह युसुफ किशोर था। उसके हाथ बड़ी फुरती से चप्पू चला रहे थे। मेरे साथी भी साथ दे रहे थे। मौज में मल्लाह के गले से सुरीली आवाज आने लगी। ठेठ कश्मीरी लोकगीत और ठंठ देहाती कंठ। दो-चार पंक्तियाँ ही थीं, उन्हीं को बार-बार दुहरा रहा था। कश्मीर की मिट्टी में ही प्यार-मुहब्बत की महक है। वहाँ की प्रकृति ने जिस प्रकार मिठास और मोहक रंग सेब और केसर में भर दिए हैं, उसी प्रकार की मिठास और रंग यहाँ के किशोर और किशोरियों को दिल खोलकर प्रदान किए हैं।

शब्द-अर्थ

हास	—	हँसी	**जनश्रुति**	—	परंपरा से चली आने वाली बात
प्रतिभा	—	विलक्षण बुद्धि	**सुयोग**	—	अच्छा अवसर
प्रतिष्ठित	—	विराजमान	**ज्योतिर्मय**	—	प्रकाशयुक्त
लुभाना	—	आकर्षित करना	**कोरी कल्पना**	—	यथार्थ से दूर की कल्पना

मनोहारी	—	मन को हर लेने वाला	**अन्यत्र**	—	और कहीं
प्रभाती	—	प्रभात काल की	**मोहक**	—	मोह लेने वाला
पुलकित	—	आनंदित	**विकट**	—	भयंकर
अदम्य	—	जिसे दबाया न जा सके	**दुर्गम**	—	जहाँ जाना कठिन हो
शिकारा	—	एक लंबी नाव जिसके बीच में बैठने का स्थान छायादार होता है।			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) लेखक कहाँ से श्रीनगर के लिए रवाना हुआ?

(ख) लेखक जम्मू किस साधन से पहुँचा?

(ग) बनिहाल में क्या देखकर लेखक को कौतूहल हुआ?

(घ) काजीकुंड से श्रीनगर तक की यात्रा कितने समय में पूरी हुई?

(ङ) श्रीनगर में मुख्य रूप से कौन सी भाषाएँ बोली जाती हैं?

(च) नए शिकारे के मल्लाह का क्या नाम था?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) श्रीनगर के बीच _____

☐ चिनाब नदी बहती है. ☐ झेलम नदी बहती है. ☐ व्यास नदी बहती है।

(ख) श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान _____

☐ श्री शंकराचार्य पहाड़ी है। ☐ श्री अमरनाथ पहाड़ी है। ☐ जवाहर पहाड़ी है।

(ग) जनश्रुति के अनुसार श्रीनगर के मठ का मंदिर _____

☐ रघुवंश के राजाओं का बनाया हुआ है।

☐ कौरव वंश के राजाओं का बनाया हुआ है।

☐ पांडव वंश के राजाओं का बनाया हुआ है।

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) कश्मीर को पृथ्वी का _____ कहा गया है।

(ख) _____ ने कश्मीर में अनेक बौद्ध विहार एवं स्तूप बनवाए थे।

(ग) कश्मीर की राजधानी _____ है।

(घ) श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान _____ है।

(ङ) श्रीनगर में मुख्य रूप से _____ और _____ भाषाएँ बोली जाती हैं।

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) कन्याकुमारी की सागर तरंगें अपने मंद हास से हमें चकित करती हैं।

_____

(ख) प्रभाती पवन में चुभन भरी शीतलता थी।

_____

(ग) वहाँ की प्रकृति ने जिस प्रकार मिठास और मोहक रंग सेब और केसर में भर दिए हैं, उसी प्रकार की मिठास और रंग यहाँ के किशोर और किशोरियों को दिल खोलकर प्रदान किए हैं।

_____

_____

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) लेखक के मन में कश्मीर देखने की इच्छा क्यों हुई?

(ख) कश्मीर के इतिहास में सम्राट ललितादित्य का नाम क्यों उल्लेखनीय है?

(ग) बारह घंटे की यात्रा की बात सुनकर लेखक क्यों घबरा गया?

(घ) रास्ते में लेखक ने क्या-क्या देखा?

(ङ) जवाहर सुरंग से गुजरते हुए लेखक को कैसा लगा?

(च) श्रीनगर पहुँचने पर लेखक की पहली प्रतिक्रिया क्या थी?

(छ) डल झील को देखकर लेखक के मन में पहले क्या विचार आया? बाद में उसने अपना विचार क्यों बदला?

(ज) किस बात को देखकर लेखक का मन गर्व का अनुभव कर रहा था?

भाषा-ज्ञान

1. पद और पदबंध–

जब कोई शब्द वाक्य में प्रयोग होता है, तो 'पद' कहलाता है। जब एक से अधिक पद एक व्याकरणिक इकाई का कार्य करते हैं, तो वे 'पदबंध' कहलाते हैं; जैसे–

'कन्याकुमारी की सागर तरंगें अपने मंद हास से हमें चकित करती हैं।'

इस वाक्य में 'कन्याकुमारी की सागर तरंगें' में प्रयुक्त सभी पद मिलकर एक व्याकरणिक इकाई के रूप में कार्य कर रहे हैं, अत: यह एक पदबंध है।

2. निम्नलिखित वाक्यों में एक-एक पदबंध छाँटिए–

(क) ईश्वर की इच्छा मुझे कोरी कल्पना से संतुष्ट करने की नहीं थी।

(ख) महाभारत काल से ही कश्मीर के शासकों की गाथाएँ मिलती हैं।

(ग) बगल की दुकान पर मंगलौर में बनी बीड़ियों का बंडल देखकर कौतूहल हुआ।

3. संधि विच्छेद कीजिए–

दुर्गम	_____	अनावश्यक	_____	शंकराचार्य	_____
ज्योतिर्मय	_____	मनोहर	_____	ललितादित्य	_____
हिमालय	_____	पवन	_____	प्रत्यक्ष	_____

4. निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

समृद्धिशाली _____

सुयोग _____

अन्यत्र _____

स्थानीय _____

कौतूहल _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **किसी ऐसे ही एक पर्वतीय स्थान के चित्र एकत्रित करके, उस स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त कर एक फाइल तैयार कीजिए।**
- **कश्मीर को भारत का स्वर्ग क्यों कहा गया है, विस्तृत रूप से अध्ययन करके बताइए।**
- **हमारे देश में स्थित अनेकों सुंदरम स्थानों पर एक कोलाज तैयार करिए तथा उन स्थानों के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य एकत्रित करके एक फाइल बनाइए।**

दूधवालों का इंटरव्यू 17

(मंच पर एक मध्यमवर्गीय परिवार के तीन सदस्य, बारह-तेरह साल का एक लड़का, उसकी माँ सुनीता और पिता विनोद आपस में बातचीत कर रहे हैं। सुबह का समय है। सुनीता एक नकचढ़ी महिला है।)

विनोद - राजन की माँ, सुनती हो।

सुनीता - हाँ-हाँ, क्या बात है? कुछ बोलो भी। मिनट-भर को चैन नहीं लेने देते।

विनोद - अरे, तुम लड़ने के लिए तैयार बैठी रहती हो हर समय।

सुनीता - अच्छा परेशान मत करो। बोलो, क्या पहाड़ टूट पड़ा?

विनोद - पहाड़-वहाड़ नहीं टूट पड़ा है, राजू की माँ।

सुनीता - फिर क्या हुआ?

विनोद - आज तो लगता है कि सवेरा ही नहीं हुआ।

सुनीता - अरे, दो हाथ सूरज चढ़ गया है और कह रहे हो सवेरा नहीं हुआ।

विनोद - जब तक चाय की गरमा-गरम प्याली ना मिले, लगता नहीं सुबह हो गई।

सुनीता - चाय किसकी बनाऊँ, जब घर में दूध नहीं है।

राजन - दूध कैसे होगा,
मम्मी? जब आप किसी दूधिये को टिकने ही नहीं देतीं। पापा! यह बारहवाँ दूध वाला है, मम्मी ने जिसकी छुट्टी की है। बुरी तरह रूठकर गया है।

विनोद - क्यों, क्या बात हो गई थी?

राजन - मम्मी का आरोप था कि दूधवाला बासी दूध दे जाता है; उसमें ताज़े दूध जैसी महक नहीं है।

विनोद - पर यह तो बताओ, बासी दूध था तो वह फटता क्यों नहीं था?

राजन - यही सवाल दूधवाले ने किया था मम्मी से।

विनोद - फिर?

राजन - मम्मी बोली, तू इसमें यूरिया मिलाता है।

सुनीता - तो क्या गलत कहा मैंने! परसों अखबार में छपा था कि एक क्विंटल दूध में एक किलो यूरिया की मिलावट की जा रही है, जिससे दूध गाढ़ा भी लगता है और बासी होकर फटता भी नहीं है।

राजन - बस इसी बात से पापा, दूधवाला चिढ़ गया। फिर तो वह महाभारत हुआ, वह महाभारत हुआ कि कुछ पूछो मत।

सुनीता - हाँ-हाँ, तुम दोनों तो मुझे ही दोष दोगे। सारी दुनिया अच्छी। मैं ही बुरी।

विनोद - ओ हो राजू की माँ , किस्सा यह है कि पहले दूधवाले की तुमने पानी मिलाने के आरोप में छुट्टी की। दूसरे की दूध पर मलाई न जमने के कारण, तीसरे की मलाई से घी कम निकलने के कारण, चौथे की कम नापने के कारण, पाँचवें की दूध में सिंगाड़े का आटा मिलाने के शक में और छठे की....।

राजन - (बात काटते हुए) बस-बस पापा कहाँ तक गिनाओगे? हद यह है कि बारहवें की दूध में यूरिया डालने के आरोप में।

सुनीता - (चीखकर) तो क्या तुम्हें दूध के नाम पर ज़हर पीने दूँ। ना भाई, यह मुझसे ना होगा।

विनोद - (समस्या का अंत करते हुए) तुम ऐसा करो राजन बेटे। वह जो सुभाष पार्क है ना, वहाँ शाम को गाँवों से आने वाले दूधिए इकट्ठे होते हैं। तुम वहाँ जाना और जितने दूधिए मिलें सबको बुला लाना।

राजन - सबसे दूध थोड़े लेना है पापा।

विनोद - सबसे नहीं बेटे! कई सारे होंगे तो उनमें से किसी को अच्छा देखकर छाँट लेंगी तुम्हारी मम्मी।

राजन - पर पापा! वे दूधिए तो आने से रहे, जिन्हें माँ अब तक निकाल चुकी हैं।

पिता - वे नहीं आएँगे, दूसरे तो आएँगे भई।

(शाम का समय है, चार दूधियों के साथ राजन घर में प्रवेश करता है। माँ आँगन में बैठी हैं।)

राजन - (बाहर से आवाज़ लगाते हुए) मम्मी-मम्मी! दूधवाले आ गए, इंटरव्यू ले लो इनका।

सुनीता - (सिर उठाते हुए) हाँ, अंदर बुला लाओ इन्हें। देखती हूँ, कितने पानी में दूध है।

दूधवाला - (महिला की बात सुनकर) पानी में नहीं है जी, दूध में है दूध में। खालिस दूध में, मिलावटी दूध में, हर तरह के दूध में।

सुनीता - (बुलाते हुए) अच्छा आओ, इधर आ जाओ, आँगन में।

(चारों अपने-अपने दूध के खाली बर्तन लेकर लाइन से बैठ जाते हैं। तभी बाहर से राजन के पिता घर में प्रवेश करते हैं।)

सुनीता - (पति से) देखो जी! मैं दूधवालों से इंटरव्यू लूँगी। तुम बीच में टाँग मत अड़ाना।

(इंटरव्यू शुरू होता है।)

सुनीता - (गंभीर मुद्रा में) हाँ तो दूधवाले नंबर एक! क्या नाम है तुम्हारा?

दूधवाला - जी, मेरा नाम है खचेड़ू!

सुनीता - कब से दूध बेच रहे हो तुम खचेड़ू?

खचेड़ू - दस साल हो गए बहन जी। आँधी, बारिश, सरदी, गरमी, बीमारी, कभी किसी कारण नागा नहीं करता हूँ। दूध फर्स्टकिलास, डेली सप्लाई की गारंटी।

सुनीता - फर्स्टक्लास से तुम्हारा क्या मतलब है खचेड़ू?

खचेड़ू - मतलब यह है बहन जी, दूध खालिस देता हूँ, पर नापता कम हूँ।

सुनीता - कम नापता है? क्यों?

खचेड़ू - जो देता हूँ बहन जी, पूरी ईमानदारी से खालिस दूध देकर नफ़े का औसत निकालता हूँ। झूठ नहीं बोलता, धोखा नहीं देता, सेर में पौन सेर मिलेगा, पर मिलेगा असली।

सुनीता - नहीं-नहीं, यह खुली बेईमानी है, खुली बेईमानी।

खचेड़ू - कह दिया तो बेईमानी हो गई। वैसे चुपचाप चूना लगाता रहता तो कैसा रहता बहन जी!

सुनीता - अच्छा तुम पीछे बैठो। (दूसरे दूधवाले की तरफ़ इशारा करते हुए) हाँ तुम बोलो, क्या नाम है तुम्हारा?

दूधवाला - मेरा नाम सुंद्रा है बहन जी।

सुनीता - हाँ तो भाई सुंद्रा जी! तुम बोलो, कैसा दूध बेचते हो तुम?

सुंदा - पानी मिलाता हूँ, पर माप में अधित देता हूँ, बहन जी।

सुनीता - पानी मिलाते हो, क्यों?

सुंद्रा - मैं माप में जो अधिक देता हूँ, बहन जी।

सुनीता - यह तो बेईमानी हुई, खुली बेईमानी।

सुंद्रा - बेईमानी कैसे हो गई बहन जी, पानी मिला दूध दिया पर दिया बढ़ती। तो क्या यह ईमानदारी नहीं, बोलो- जी!

सुनीता - (आश्चर्य से दूधिये की ओर देखते हुए) क्या समय आ गया है जी, चोर शरीफ बन गए और धोखा देने वाले ईमानदार। अच्छा तुम पीछे बैठो। (तीसरे की ओर इशारा करते हुए) तुम आओ सामने। क्या नाम है तुम्हारा?

दूधवाला - मेरा नाम ममदू है जी।

सुनीता - तो हाँ भाई ममदू! बोलो, कैसा दूध बेचते हो?

ममदू - बढ़िया, एकदम बढ़िया।

सुनीता - बढ़ियापन की बात बताओ, क्या बढ़ियापन है तुम्हारे दूध में?

ममदू - मैं पानी नहीं मिलाता बहन जी। कोई माँ का लाल मेरे दूध में पानी साबित कर दे तो सौ जूते।

सुनीता - फिर क्या मिलाते हो दूध में!

ममदू - सप्रेटा बहन जी, सप्रेटा।

सुनीता - (आश्चर्य से) सप्रेटा मिला दूध बेचते हो तुम! आखिर क्यों?

ममदू - वह सेहत के लिए बढ़िया होता हे, बहन जी। पर मैं न कम मापता हूँ बहन जी, न बढ़ती, पूरा देता हूँ पूरा। रहा सवाल भाव का तो भाव बाज़ार का, न तुम्हारा न मेरा।

सुनीता - अच्छा-अच्छा तुम भी पीछे बैठो। (चौथे की ओर इशारा करते हुए) हाँ भाई! तुम आओ क्या नाम है तुम्हारा?

दूधवाला - मेरा नाम है बुधवा।

सुनीता - हाँ तो बुधवा जी, बढ़िया दूध दोगे हमें।

बुधवा - मेरा दूध एकएम खालिस होता है बहन जी, पर होता है पंचमेल।

सुनीता - पंचमेल से क्या मतलब है बुधवा?

बुधवा - बहन जी, उसमें अकेली भैंसी का ही दूध नहीं होता, थोड़ा बकरी का, थोड़ा गैया का, थोड़ा ऊँटनी का।

सुनीता - (आश्चर्य से) ऊँटनी का!

बुधवा - हाँ बहन जी! जैसा जहाँ से मिल गया, ले लिया।

सुनीता - पर यह तो बहुत घपले वाली बात है बुधवा।

बुधवा - घपले वाली बात क्या है इसमें बहन जी! एक टिकट में पाँच मज़े।

सुनीता - किस भाव देते हो पंचमेल दूध?

बुधवा - बाज़ार भाव से ड्योढ़ा।

सुनीता - ड्योढ़ा क्यों?

बुधवा - क्योंकि दूध खालिस होता है?

सुनीता - खालिस कहाँ होता है? ऊँटनी और बकरी के दूध की मिलावट नहीं होती है क्या?

बुधवा - पर वह होता तो दूध ही है। दूध-दूध सब एक।

सुनीता - जैसे चोर-चोर सब एक।

(चारों दूधवाले ठहाका मारकर हँसते हैं।)

शब्द-अर्थ

मध्यमवर्गीय परिवार – एक औसत आय का परिवार
आरोप – इलजाम
खालिस – शुद्ध
डेली – प्रतिदिन
नफ़ा – लाभ
पंचमेल – पाँच का मेल
इयोढ़ा – डेढ़ गुना
नकचढ़ी – बात-बात पर गुस्सा करनेवाली
दूधिया – दूधवाला
इंटरव्यू – साक्षात्कार
नागा – काम से अनुपस्थिति
सप्लाई – पूर्ति
बढ़ियापन – खासियत, विशेषता
घपला – धोखाधड़ी

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) विनोद ने सुनीता को आवाज़ क्यों लगाई?

(ख) सुनीता ने मिलावटी दूध को ज़हर क्यों कहा?

(ग) सुनीता को कैसे पता चला कि दूधवाला बासी दूध दे जाता है?

(घ) राजन ने किस बात को महाभारत कहा?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सुनीता कैसी महिला हैं?

- ☐ नकचढ़ी
- ☐ शांत
- ☐ लड़ाकू
- ☐ सीधी

(ख) सुनीता ने विनोद को चाय क्यों नहीं दी थी?

- ☐ चीनी नहीं थी
- ☐ चाय पत्ती नहीं थी
- ☐ दूध नहीं था
- ☐ पानी नहीं था

(ग) सुनीता के हिसाब से बारहवाँ दूधवाला दूध में क्यों मिलाता था?

- ☐ अमोनिया
- ☐ चूना
- ☐ यूरिया
- ☐ सप्रेटा

(घ) कौन-सा दूधवाला पंचमेल दूध बेचता था?

- ☐ ममदू
- ☐ बुधवा
- ☐ सुंद्रा
- ☐ खचेड़ू

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सुनीता ने अखबार में क्या पढ़ा था?

(ख) सुनीता ने कितने दूधवालों की छुट्टी की थी और क्यों?

(ग) विनोद ने सभी दूधियों को बुलाने के लिए क्यों कहा?

(घ) सुनीता और दूधियों का साक्षात्कार अपने शब्दों में लिखिए।

(ङ) क्या सुनीता को कोई भी दूधिया दूध देने के लिए सही लगा? यदि हाँ, तो क्यों और यदि नहीं, तो क्यों नही?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद करके संधि का नाम लिखिए–

(क) इच्छानुसार – _____ + _____ = _____

(ख) प्रत्येक – _____ + _____ = _____

(ग) दुर्जन – _____ + _____ = _____

(घ) नमस्कार – _____ + _____ = _____

(ङ) दुर्गुण – _____ + _____ = _____

2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटकर उनका भेद लिखिए।

(क) सुनीता एक नकचढ़ी महिला है। _____ _____

(ख) दूधियों ने दूध में कुछ मिला दिया। _____ _____

(ग) दूध में थोड़ा सप्रेटा मिलता हूँ। _____ _____

(घ) आजकल दूध में बहुत मिलावट होती है। _____ _____

(ङ) अब से वह दूधिया दूध देगा। _____ _____

3. दिए गए प्रत्ययों से तीन-तीन शब्द लिखिए।

(क) वाला – _____ _____ _____

(ख) आवट – _____ _____ _____

(ग) पन – _____ _____ _____

(घ) दार – _____ _____ _____

(ङ) कार – _____ _____ _____

4. पाठ से आठ आगत शब्द चुनकर लिखिए।

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

5. निम्नलिखित क्रियाविशेषण शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(क) बहुत – _____

(ख) ज़ोर से – _____

(ग) वहाँ – _____

(घ) सदा – _____

(ङ) अभी – _____

6. मुख्य क्रिया से पूर्व यदि कोई दूसरी क्रिया प्रयुक्त हो, तो वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

इन वाक्यों में प्रयुक्त पीकर, खाकर, देखकर तथा मिलाकर पूर्वकालिक क्रियाएँ हैं। जैसे—

वह चाय पीकर पढ़ने बैठ गया। वह खाना खाकर सो गया।

मैं उसे देखकर डर गई। उसने दूध में पानी मिलाकर बेचा।

निम्नलिखित वाक्यों में से पूर्वकालिक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए।

(क) दूधिया माँ की बात सुनकर चला गया। _____

(ख) पिताजी ने हँसकर कहा। _____

(ग) वह मन मारकर बैठ गया है। _____

(घ) वह दूध में पानी मिलाकर लाता है। _____

(ङ) वे दूध के खाली बर्तन लेकर लाइन में बैठ गए। _____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) दूध के विभिन्न ब्रांडों के बारे में पता लगाकर एक जानकारीपरक लेख लिखिए।

(ख) 'श्वेत क्रांति' पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए।

(ग) दूध से बनाए जाने वाले विभिन्न पदार्थों को बनाने की विधि लिखिए।

(घ) कक्षा के कुछ छात्र इन पात्रों का अभिनय करते हुए अपने-अपने संवाद बोलिए। बाकी छात्र निर्णय करेंगे कि सबसे अच्छा अभिनय किसने किया?

(ङ) सुनीता ने जिन दूधवालों का साक्षात्कार लिया, आपको उनमें से कौन-कौन सही लगा और क्यों?

(च) पुस्तकालय से कुछ हास्य-नाटक लेकर पढ़िए।

(छ) इंटरनेट की सहायता से मिलावटी खाद्य पदार्थों की बिक्री पर एक रिपोर्ट लिखिए।

मेरे तो गिरधर गोपाल 18

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर-मुकुट, मेरे पति सोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई, आँणद-फल होई।
भगति देखि राजी हुई, जगति देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरधर! तारो अब मोही।।
पग घुघँरु बाँध नाची रे।
मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गई दासी रे।
लोग कहैं मीरा भई बावरी, न्यात कहैं कुल नासी रे।
विषका प्याला राणाजी भेज्या, पीवत मीरा हाँसी रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अबिनासी रे।।

–मीराबाई

शब्द-अर्थ

गिरधर	—	गोवर्धन पर्वत धारण करने वाले	**पति**	—	स्वामी
कुल	—	खानदान	**कानि**	—	मर्यादा
कहा	—	क्या	**करिहै**	—	करेगा
ढिंग	—	पास	**संतन**	—	संत
आँणद	—	आनंद, सुखद	**राजी हुई**	—	खुश हुई
बावरी	—	पागल	**न्यात**	—	नातेदार, रिश्तेदार
जगति	—	संसार	**अबिनासी**	—	कभी नष्ट न होने वाला

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) मीरा किसे अपना पति मानती हैं?

(ख) मीरा कैसी भक्ति में विश्वास रखती हैं?

(ग) मीरा को आनंद फल की प्राप्ति कैसे होगी?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) मीरा किसे अपना मानती हैं?

☐ गिरिधर गोपाल को ☐ राम-सीता को ☐ ब्रह्मा-विष्णु को ☐ शिव-पार्वती को

(ख) मीरा ने किसकी मर्यादा का पालन करना छोड़ दिया?

☐ भक्ति की ☐ परिवार की ☐ संतों की ☐ धर्म की

(ग) मीरा ने अपने प्रेम की बेल को किससे सींचा है?

☐ आँसू से ☐ पानी से ☐ दूध से ☐ अमृत से

(घ) मीरा को क्या कहते हैं?

☐ भक्तिन ☐ कवयित्री ☐ पुजारिन ☐ बावरी

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) लोग मीरा के बारे में क्या-क्या बातें करते हैं और क्यों?

(ख) राणा जी ने मीरा के लिए क्या भेजा और मीरा ने उसे क्यों पी लिया?

(ग) ''अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।''— आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई?

संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोई।

भाषा-ज्ञान

1. दिए गए शब्दों से उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

(क) संस्कृत – _____ + _____ (ख) संशय – _____ + _____

(ख) संशोधन – _____ + _____ (घ) संबंध – _____ + _____

(ग) संवाद – _____ + _____ (च) संविधान – _____ + _____

2. दिए गए भाववाचक संज्ञा शब्द किस मूल शब्द से बने हैं, उस पर गोला लगाइए।

(क)	मिठास	–	मीठा	मिठाई	(ख)	सादगी	–	सदा	सादा
(ख)	गुरुत्व	–	गुरु	गुरू	(घ)	आपा	–	आप	अपने
(ग)	सज्जनता	–	सजना	सज्जन	(च)	सिंचाई	–	सींचना	सींचा हुआ

3. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

(क) संत – _____

(ख) आँसू – _____

(ग) पति – _____

(घ) दासी – _____

(ङ) विष – _____

4. छाँड़ि दई कुल कानि, कहा करिहै कोई?

इस पंक्ति को ध्यानपूर्वक पढ़िए। इसमें 'क' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है। काव्य में जहाँ एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार या सौंदर्य उत्पन्न होता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

पायो जी मैंने राम-रतन-धन पायो।

इस पंक्ति में राम को रतन (रत्न) और धन कहा गया है। जहाँ गुणों की समानता दिखाने के लिए किसी जगत-प्रसिद्ध या अमूल्य वस्तु पर सामान्य वस्तु को आरोपित किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

- **निम्नलिखित पंक्तियों में रंगीन पदों को पढ़कर अलंकार का भेद लिखिए।**

(क) संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोई। _____

(ख) ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं। _____

(ग) चरण-कमल बंदौ हरिराई। _____

(घ) अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेल बोई। _____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) मीरा का जीवन-परिचय लिखिए।

(ख) मीराबाई व सूरदास के कृष्ण भक्ति पर आधारित अन्य पदों का संकलन कीजिए।

(ग) श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं के बारे में परियोजना कॉपी में लिखिए।

(घ) मीरा की भक्ति के विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए।

(ङ) मीरा के इन पदों का कक्षा में गायन कीजिए।

(च) कबीर, रहीम, तुलसीदास, बिहारी आदि के दोहों का संकलन करके अंत्याक्षरी का आयोजन कीजिए।

सोना 19

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डॉ0 धरेंद्र नाथ बसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है, "गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था। बीते कुछ महीनों में हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं परंतु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल से संबद्ध रहने के कारण तथा अब बड़ा हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए। क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी क्योंकि आप जानती हैं कि मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती जो उससे बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भली-भाँति देखभाल हो सकेगी।"

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी। परंतु आज उस नियम को भंग किए बिना इस कोमलप्राण जीव की रक्षा संभव नहीं है।

सोना इसी प्रकार अचानक आई थी। परंतु वह अब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग का, रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और पानीदार आँखें। देखती तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। लंबे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही प्रसुप्त गति की बिजली की लहर देखने वालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल शिशु-रूप से बहुत प्रभावित हुए।

परंतु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजनप्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी।

प्रशांत वनस्थली में जब अलस भाव से रोमंथन करता हुआ मृग-समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ सद्यः-प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्यःजात मृगशिशु तो भाग नहीं सकता था। अतः मृगी माँ ने उसे अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दिए।

पता नहीं दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनी के साथ उसके रक्त से सने और ठंडे स्तनों से चिपके हुए शावक को जीवित उठा लाए। उनमें से किसी के परिवार की सदस्य गृहिणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला-पिलाकर दो-चार दिन तक जीवित रखा।

सुस्मिता के समान ही किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और वह उस अनाथ शावक को मुमूर्ष अवस्था में मेरे पास ले आई। शावक अवांछित तो था ही, उसके बचने की आशा भी धूमिल थी, परंतु उसे मैंने स्वीकार कर लिया। स्निग्ध सुनहले रंग के कारण सब उसे 'सोना' कहने लगे। दूध पिलाने की शीशी, ग्लूकोज, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके, उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरंभ हुआ।

उसका मुख इतना छोटा था कि उसमें शीशी का निपल समाता ही नहीं था, उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया। आँगन में कूदते-फाँदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देखकर वह दौड़ आती और अपनी तरल चकित आँखों से उसे देखने लगती मानों वह कोई सजीव मित्र हो।

उसने रात में मेरे पलंग के पाए से सटकर बैठना सीख लिया था परंतु वहाँ गंदा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी। अँधेरा होते ही वह मेरे पलंग के पास आ बैठती और फिर सवेरा होने पर वह बाहर निकलती।

उसका दिनभर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। विद्यालय और छात्रावास की विद्यार्थिनियों के बीच पहले वह कौतुक का कारण रही। परंतु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथी बन गई, जिसके बिना उनका किसी काम में मन ही नहीं लगता था।

दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित कर चौकड़ी भरती। फिर वह छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे का भीतर-बाहर निरीक्षण करती। सवेरे छात्रावास में विचित्र-सी क्रियाशीलता रहती है, कोई छात्रा हाथ-मुँह धोती है, कोई बालों में कंघी करती है, कोई साड़ी बदलती है, कोई अपनी मेज की सफाई करती है, कोई स्नान करके भीगे कपड़े सूखने के लिए फैलाती है और कोई पूजा करती है। सोना के पहुँच जाने पर इस विविध-कर्म-संकुलता में एक नया काम और जुड़ जाता था। कोई छात्रा उसके माथे पर कुमकुम का बड़ा-सा टीका लगा देती, कोई पूजा के बताशे खिला देती।

मेस में उसके पहुँचते ही छात्राएँ ही नहीं, नौकर-चाकर तक दौड़ आते और सभी उसे कुछ-न-कुछ खिलाने को उतावले रहते परंतु उसे बिस्कुट को छोड़कर अन्य खाद्‍य-पदार्थ कम पसंद थे।

छात्रावास का जागरण और जलपान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उस पर लोटती रहती। मेरे भोजन का समय वह किस प्रकार जान लेती थी, यह समझने का उपाय नहीं है परंतु वह ठीक समय पर भीतर आ जाती और तब तक मुझसे सटकर खड़ी रहती जब तक मेरा खाना समाप्त न हो जाता। कुछ चावल, रोटी आदि उसको भी प्राप्य था परंतु उसे कच्ची सब्जी ही अधिक भाती थी।

घंटी बजते ही वह फिर प्रार्थना के मैदान में पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के समान ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरंभ करती।

उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे क्योंकि उनके पास खेलने का अधिक अवकाश रहता था। वे पंक्तिबद्‍ध खड़े होकर 'सोना-सोना' पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। यह सरकस जैसा खेल कभी-कभी घंटों चलता क्योंकि खेल के घंटों में बच्चों की एक कक्षा के उपरांत दूसरी कक्षा आती रहती।

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के कई प्रकार थे। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। प्रायः देखनेवालों को भय होता था कि मेरे सिर पर चोट न लग जाए परंतु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रहती और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई संभावना ही नहीं रहती थी।

भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। डाँटने पर वह अपनी बड़ी गीली और चकित आँखों से ऐसी अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती।

अनेक विद्‍यार्थियों की भारी-भरकम गुरु जी से सोना को क्या लेना-देना था। वह तो उस दृष्टि को पहचानती थी, जिसमें उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी जिन्होंने यत्नपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगाई थी।

यदि सोना को अपने स्नेह की अभिव्यक्ति के लिए मेरे सिर के ऊपर से कूदना आवश्यक लगेगा, तो वह कूदेगी ही। मेरी किसी अन्य परिस्थिति से प्रभावित होना उसके लिए संभव नहीं था।

कुत्ता स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने पर वह गद्‍गद् होकर निकट आ जाता है और क्रोध करते ही कहीं और दयनीय बनकर दुबक जाता है। परंतु हिरन यह अंतर नहीं जानता, अतः उसका पालने वाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा। मानो पूछता हो, क्या यह उचित है! वह केवल स्नेह पहचानता है जिसकी स्वीकृति बताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।

मेरी बिल्ली गोधूलि, कुत्ते हेमंत-बसंत, कुतिया फ़्लोरा सबसे पहले इस नए अतिथि को देखकर रुष्ट हुए परंतु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे सख्य स्थापित कर लिया। फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते और बिल्ली उस पर उछलते-कूदते रहते। कोई उसके कान खींचता, कोई पैर और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते तब वह अचानक चौकड़ी भरकर भागती और वे गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ लगाते।

वर्षभर का समय बीत जाने पर सोना शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोएँ ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टाँगें अधिक सुडौल हो गईं और खुरों के कालेपन में चमक आ गई। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई। पीठ में भराववाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी परंतु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती

थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानों नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।

इस बीच फ्लोरा ने भक्तिन की अँधेरी कोठरी के एकांत कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूलकर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गई। एक-दो दिन सोना अपनी सखी को खोजती रही, फिर उसको इतने लघु जीवों से घिरा देख उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गई।

एक दिन देखा, फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गई है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चिंत लेटी है। पिल्ले आँखें बंद रहने के कारण चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोज रहे थे तब सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच में लेट जाना भी सम्मिलित हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा, हेमंत, बसंत या गोधूलि को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी, परंतु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।

संभवतः वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गई थी। पिल्लों के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमनेवाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानो इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनंदोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर के आर-पार चौकड़ी भरती रही।

उसी वर्ष गरमियों में मेरा बद्रीनाथ की यात्रा का कार्यक्रम बना। प्रायः मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास में कम रहती हूँ। उनकी देख-रेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती। भक्तिन, अनुरूप आदि तो साथ जाने वाले थे ही। पालतू जीवों में से मैंने फ्लोरा को साथ ले जाने का निश्चय किया क्योंकि वह मेरे बिना नहीं रह सकती थी।

सोना की सहज चेतना में न मेरी यात्रा जैसी स्थिति का बोध था, न प्रत्यावर्तन का, उसी से उसकी निराश जिज्ञासा और विस्मय का अनुमान मेरे लिए सहज था।

पैदल आने-जाने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया। जुलाई में लौटकर जब मैं बँगले के द्वार पर आ खड़ी हुई तब बिछुड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा।

गोधूलि मेरे कंधे पर आ बैठी। हेमंत, बसंत मेरे चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष-ध्वनियों से मेरा स्वागत करने लगे पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी। क्यों वह अपना उल्लास व्यक्त करने के लिए मेरे सिर के ऊपर से छलाँग नहीं लगाती? सोना कहाँ है? पूछने पर माली आँखें पोंछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। वे लोग आने के साथ ही मुझे कोई दुःखद समाचार नहीं देना चाहते थे परंतु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई थी कि इधर-उधर खोजती-सी वह प्रायः कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु उसका खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया था।

एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुँह के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी।

सब सुनहले रेशम की गठरी से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आए और इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी और जनसंकुलता में पली सोना की करुण कथा का अंत हुआ।

सब सुनकर मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी पर संयोग से फिर हिरन पालना पड़ रहा है।

–श्रीमती महादेवी वर्मा

शब्द-अर्थ

संबद्ध	—	जुड़ा हुआ,	**शैशवावस्था**	—	बचपन,
लघु	—	छोटा,	**प्रसुप्त**	—	सोई हुई,
व्यथा-कथा	—	दु:ख भरी कथा,	**निष्ठुरता**	—	निर्दयता,
रोमंथन	—	जुगाली,	**शावक**	—	हिरन का बच्चा,
मुमूर्ष	—	मूर्च्छित,	**अनुष्ठान**	—	व्रत,
कौतुक	—	उत्सुकता,	**निरीक्षण**	—	देखरेख,
कर्म-संकुलता	—	कामों की भीड़,	**अनिर्वचनीय**	—	अकथनीय,
अभिव्यक्ति	—	मन की बात प्रकट करना,	**सख्य**	—	दोस्ती,
तन्मय	—	मग्न,	**पीताभ**	—	पीले,
स्निग्धता	—	चिकनापन,	**स्फुरण**	—	संचरण,
आश्वस्त	—	निश्चिंत,	**निर्जन**	—	सुनसान।

लेखिका परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) के एक प्रतिष्ठित शिक्षित कायस्थ परिवार में सन् 1907 ई0 में होलिका-दहन के पुण्य पर्व के दिन हुआ था। इनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्रधानाचार्य थे। इनकी माता हेमरानी भक्त-हृदय, परम विदुषी तथा सामान्य कवयित्री थीं। इनके नाना भी ब्रजभाषा में कविता करते थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई थी। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में सुंदर रचनाएँ की हैं। 'स्मृति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र', 'पथ के साथी', 'मेरा परिवार' इनकी प्रसिद्ध गद्य-रचनाएँ हैं। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'यामा', 'सांध्यगीत' आदि उनकी प्रसिद्ध काव्य-रचनाएँ हैं। भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया। इनका देहावसान सन् 1987 ई0 में हुआ।

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) लेखिका ने क्या प्रण किया था?

(ख) सोना का प्रिय खाद्य क्या था?

(ग) फ्लोरा कौन थी? उसने कितने बच्चे दिए थे?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सुस्मिता कौन थी?

- ☐ लेखिका की पौत्री
- ☐ लेखिका के मामा की बेटी
- ☐ लेखिका के परिचित की पौत्री
- ☐ लेखिका की पड़ोसिन

(ख) छात्रा सोना के माथे पर क्या लगाती थी?

- ☐ कुमकुम का टीका
- ☐ हल्दी का टीका
- ☐ सिंदूर का टीका
- ☐ मिट्टी का टीका

(ग) स्वामी और सेवक का अंतर कौन जानता है?

- ☐ हिरन
- ☐ कुत्ता
- ☐ बिल्ली
- ☐ ये सभी

2. पाठांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच में लेट जाना भी सम्मिलित हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा हेमंत, बसंत या गोधूलि को, तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी, परंतु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।

(क) सोना के नित्य के कार्यक्रम में क्या सम्मिलित हो गया?

_____

(ख) फ्लोरा हेमंत, बसंत या गोधूलि को अपने बच्चों के पास क्यों नहीं जाने देती थी?

_____

(ग) फ्लोरा अपने बच्चों को सोना के संरक्षण में छोड़ इधर-उधर घूमने चली जाती थी। क्यों?

_____

3. अधिकतम शब्दों में–

(क) सोना के रंग-रूप का वर्णन करो।

(ख) सोना लेखिका के समक्ष अपना स्नेह-प्रदर्शन कैसे करती थी?

(ग) सोना के छात्रावास में पहुँचते ही क्या होता?

(घ) यात्रा से वापस आने पर पालतू जंतुओं ने लेखिका का स्वागत कैसे किया?

(ङ) सोना की कथा का करुण अंत कैसे हुआ?

भाषा-ज्ञान

1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है। जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं, जैसे–लघु शरीर, सुडौल टाँगें। इन उदाहरणों में लघु और सुडौल विशेषण हैं तथा शरीर और टाँगें विशेष्य।

पाठ में आए विशेषण-विशेष्यों का उपयुक्त प्रयोग करो—

_____ जंगल _____ कान _____ बच्चे

बड़ी-बड़ी _____ दूसरी _____ _____ जीव

2. वाक्यांश के लिए एक-एक शब्द लिखिए–

(क) जिसके आने की तिथि न हो _____

(ख) जिसका रंग सोने जैसा हो _____

(ग) अबोध शिशु की अवस्था _____

(घ) जहाँ छात्र-छात्राएँ निवास करें _____

(ङ) जिसकी इच्छा न हो _____

3. समझिए और लिखिए–

शैशवावस्था _____ + _____ विद्यालय _____ + _____

रोमंथन _____ + _____ ग्रीष्मावकाश _____ + _____

छात्रावास _____ + _____ सदानंद _____ + _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **यदि आपने कोई पशु या पक्षी पाल रखा हो तो उससे संबंधित अनुभवों को या उसके व्यवहार को एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए।**
- **महादेवी वर्मा ने और किन-किन पशु-पक्षियों के विषय में लिखा है? पुस्तकालय से पुस्तक लेकर उन पशु-पक्षियों के नाम तथा उनसे संबंधित रेखाचित्र का नाम लिखकर एक सूची बनाइए।**

20 दो कलाकार

"ऐ रूनी! उठ," और चादर खींचकर, चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोरकर उठा दिया।

"अरे, क्या है?" आँख मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गई और अपने नए बनाए हुए चित्र के सामने ले जाकर बोली, "देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।"

"ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी।"

"अरे, ज़रा इस चित्र को तो देख। ना पा गई पहला इनाम तो नाम बदल देना।" चित्रा को चारों ओर से घुमाते हुए अरुणा बोली, "किधर से देखूँ, यह तो बता दे, हज़ार बार तुझसे कहा कि जिस जीव का चित्र हो, उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफ़हमी न हुआ करे, वरना तू बनाए हाथी और हम समझें उल्लू।"

"तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है? अरे, ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।"

"अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं, मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?" उसने वह चित्र रख दिया।

"जरा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है?"

"तेरी बेवकूफ़ी का। आई है बड़ी, प्रतीकवाली।"

"अरे ज़नाब, यह चित्र आज की दुनिया के कन्फ्यूज़न का प्रतीक है। समझी!" "मुझे तो तेरे दिमाग के कन्फ्यूज़न का प्रतीक नज़र आ रहा है। बिना मतलब ज़िंदगी खराब कर दी है।" और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गई। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोले, "दीदी! सब बच्चे आकर बैठ गए, चलिए।"

"आ गए सब बच्चे? अच्छा चलो, मैं अभी आई।" बच्चे दौड़ पड़े।

"क्या ये बंदर पाल रखे हैं तूने भी?" फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, "एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। ज़रा लोगों को भी दिखाना पड़ेगा कि हमारी एक ऐसी मित्र साहिबा थीं जो सारे गरीबों के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी समाज-सेविका समझती थीं।"

"जा-जा, सारी दुनिया में जाकर ढिंढोरा पीट दे। गरीब बच्चों को पढ़ाने में बुराई ही क्या है!" और पैर में चप्पल डालकर अरुणा बाहर मैदान में चली गई, जहाँ बिना किसी आयोजन के ही एक छोटी-सी पाठशाला बनी हुई थी।

रात के दस बजे थे। सारे हॉस्टल की बत्तियाँ नियमानुसार बुझ चुकी थीं। ऊपर के एक तल्ले पर अँधेरे में ही खुसुर-फुसर चल रही थी। तभी हॉस्टल के फ़ाटक में जलती हुई टॉर्च लिए काई घुसा। अपने कमरे की खिड़की में से झाँकते हुए सविता ने कहा, "ठाठ तो हॉस्टल में बस अरुणा ही के हैं, रात नौ बजे लौटो, दस बजे लौटो, कोई बंधन नहीं। हम लोग तो दस के बाद बत्ती भी नहीं जला सकते।"

"लौट आईं अरुणा दी? आज सवेरे से ही वे बड़ी परेशान थीं। फुलिया दाई का बच्चा बड़ा बीमार था, दोपहर से वे उसी के यहाँ बैठी थीं। पता नहीं, क्या हुआ बेचारे का?" शीला ने ठंडी साँस भरते हुए कहा।

"तू बड़ी भक्त है अरुणा दी की।"

"उनके जैसे गुण अपना ले तो तेरी भी भक्त हो जाऊँगी।"

"अच्छा-अच्छा चल, अपना लेक्चर अपने पास रख।"

अरुणा अपने कमरे में घुसी तो बहुत ही धीरे से, जिससे चित्रा की नींद न खराब हो पर चित्रा जग रही थी। दोपहर से अरुणा बिना खाए-पिए बाहर थी, उसे नींदे कैसे आती भला? मेस से उसका खाना लाकर मेज़ पर ढककर रख दिया था। अरुणा के आते ही वह उठ बैठी और पूछा, "बड़ी देर लग गई, क्या हुआ रूनी?"

"वह बच्चा नहीं बचा, चित्रा। किसी भी तरह उसे नहीं बचा सके।" और उसका स्वर किसी गहरे दुःख में डूब गया।

चित्रा खाना गरम करने लगी। तभी अरुणा ने कहा, "रहने दे चित्रा! मैं खाऊँगी नहीं, मुझे ज़रा भी भूख नहीं है।" और उसकी आँखें फिर छलछला आईं।

बहुत ही स्नेह से अरुणा की पीठ थपथपाते हुए चित्रा ने कहा, "जो होना था सो हो गया, अब भूखे रहने से क्या होगा, थोड़ा खा ले।"

"नहीं चित्रा, अब रहने दे, बस तू लैंप बुझा दे।"

उसके बाद दो-तीन दिन तक अरुणा बहुत ही उदास रही, लेकिन समय के साथ-साथ यह गम भी जाता रहा, और सब काम ज्यों-का-त्यों चलने लगा।

अगले दिन अरुणा के कॉलेज से लौटते ही चित्रा बोली, "तेरे मनोज की चिट्ठी आई है।"

"कहाँ, तूने तो पढ़ ही ली होगी फाड़कर?"

"चल हट, तुम्हारी चिट्ठियों में रहता ही क्या है जो कोई पढ़े। बड़े-बड़े आदर्श की बातें, मानो खत न हुआ लेक्चर हुआ।"

वह लिफ़ाफ़ा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चित्रा बोली, "आज पिता जी का भी पत्र आया है, लिखा है जैसे ही यहाँ का कोर्स समाप्त हो जाए, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी, पिता जी कभी मना नहीं करेंगे।"

"हाँ भाई! धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी! तेरी इच्छा कभी टाली जा सकती है। पर सच कहती हूँ, मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।"

"तो तू मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?"

"तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं। दुनिया में बड़ी-से-बड़ी घटना घट जाए, पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए कोई आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्त्व नहीं रखती। बस, हर घड़ी, हर जगह और हर चीज़ में से तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है।"

"कागज पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती, तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।"

"वह काम तो तेरे और मनोज के लिए छोड़ दिया है। तुम दोनों ब्याह कर लो और फिर जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।" और चित्रा हँस पड़ी। फिर बोली– "अच्छा, यह बता कि तेरे यह सब करने से क्या हो जाएगा? जब तक समाज का सारा ढाँचा नहीं बदलता तब तक कुछ होने का नहीं, और ढाँचा बदल गया तो तुझे-मुझे कुछ करने की ज़रूरत नहीं, सब अपने-आप ही हो जाएगा।"

हर दस-बीस दिन बाद दोनों में अपने-अपने उद्देश्य को लेकर, अपनी-अपनी दिनचर्या को लेकर एक गरमागरम बहस हो ही जाती, पर न वह उसकी बात का लोहा मानती थी, न वह उसकी बात की कायल होती थी।

तीन दिन से मूसलाधार वर्षा हो रही थी । रोज़ अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़-पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी, और वर्षा थी कि थमने का नाम ही नहीं लेती थी। अरुणा सारे दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आखिर चित्रा ने कह ही दिया, "तेरे इम्तिहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती रहती है। फेल हो गई तो तेरे ससुर साहब क्या सोचेंगे कि इतना पैसा बेकार ही पानी में बहाया।"

"आज शाम को एक स्वयंसेवकों का दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली, मैं भी उनके साथ जा रही हूँ।" चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गई। पंद्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफ़ी खस्ता हो रही थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने लगी, तभी उसकी नज़र चित्रा के नए चित्रों की ओर गई। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे। चित्रों को देखकर उसका मन जाने कैसा-कैसा हो आया। वहाँ लोगों के जीने के लाले पड़ रहे हैं और उसमें भी इसे चित्रकारी ही सूझती है। और न जाने कितनी बात सोचते-सोचते वह सो गई।

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। "गनीमत है, तू लौट आई। मैं सोच रही थी कि कहीं तू-बाढ़-पीड़ितों की सेवा करती ही रह जाए और मैं जाने से पहले तुझसे मिल भी न पाऊँ।"

"क्यों, तेरा जाने का तय हो गया?"

"हाँ, अगले बुधवार को मैं घर जाऊँगी और बस एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी", उसके स्वर से उल्लास छलक रहा था।

"सच कह रही है, तू चली जाएगी चित्रा! छह साल से तेरे साथ रहते-रहते मैं तो यह बात भूल ही गई कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी?"

"अरे, दो महीने बाद शादी कर लेगी, फिर याद भी न रहेगा कि कौन थी चित्रा! बड़ी लालसा थी तेरी शादी में आने की, पर अब तो आ नहीं सकूँगी।"

पर अरुणा के कानों में उसकी कोई भी बात नहीं पड़ रही थी। चित्रा के साथ बिताए हुए पिछले छह सालों के चित्र उसकी आँखों के सामने घूम रहे थे और वह उन्हीं में खोई बैठी रही।

उस रात को भी अरुणा अपने और चित्रा के बारे में ही सोचती रही। दोनों के आचार-विचार, रहन-सहन, रूचि आदि में ज़मीन-आसमान का अंतर था, फिर भी कितना स्नेह था दोनों में। सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की नज़र से देखता था।

आज चित्रा को जाना था। हॉस्टल में उसे बड़ी शानदार विदाई मिली थी। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आई। फिर गुरू जी के घर की तरफ़ चल पड़ी। तीन बज गए, पर वह लौटी नहीं। अरुणा उसका सारा काम समाप्त करके उसकी राह देख रही थी। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली है। अरुणा ने सोचा, वह खुद जाकर देख आए कि आखिर बात क्या हो गई। तभी हड़बड़ाती-सी चित्रा ने प्रवेश किया, "बड़ी देर हो गई ना। अरे, क्या करूँ, बस, कुछ ऐसा हो गया कि रुकना ही पड़ा।"

"आखिर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनें तो।" दो-तीन कंठ एक साथ बोले।

"गर्ग-स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिन बैठी रहा करती थी ना, लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था उस सारे दृश्य में, कि मैं अपने को रोक नहीं सकी-एक रफ-सा स्केच बना ही डाला। बस, इसी में इतनी देर हो गई।" चर्चा इसी पर चल पड़ी कैसे मर गई, कल तो उसे देखा था। किसी ने दार्शनिक की मुद्रा में कहा,

"अरे, ज़िंदगी का क्या भरोसा, मौत कहकर थोड़े आती है।" आदि-आदि। पर इस सारी चर्चा से अरुणा कब खिसक गई, कोई जान ही नहीं पाया।

साढ़े चार बजे और चित्रा हॉस्टल के फ़ाटक पर आ गई, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन आईं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थीं। पर अरुणा न आई, सो न आई।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गई, उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच गई। भिखमंगी और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबारों के कॉलम भर गए। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब-कुछ भूल गई। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र-व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला, फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से तो उसे यह भी नहीं मालूम कि वह कहाँ है। उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ होतीं। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षकवाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी लगी थी। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया था। उस प्रदर्शनी को देखने के लिए जनता उमड़ पड़ी

थी, भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही थी और चित्रा को लग रहा था, जैसे उसके सपने साकार हो गए! उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गई! "रूनी!" कहकर वह भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गई– "तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया, रूनी!" "चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आई थी। तू तो एकदम भूल ही गई।"

"अरे, ये बच्चे किसके हैं?" दो प्यारे-से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल की होगी तो लड़की की कोई आठ।

"मेरे बच्चे हैं, और किसके! ये तुम्हारी चित्रा मौसी हैं, नमस्ते करो अपनी मौसी को।" अरुणा ने आदेश दिया।

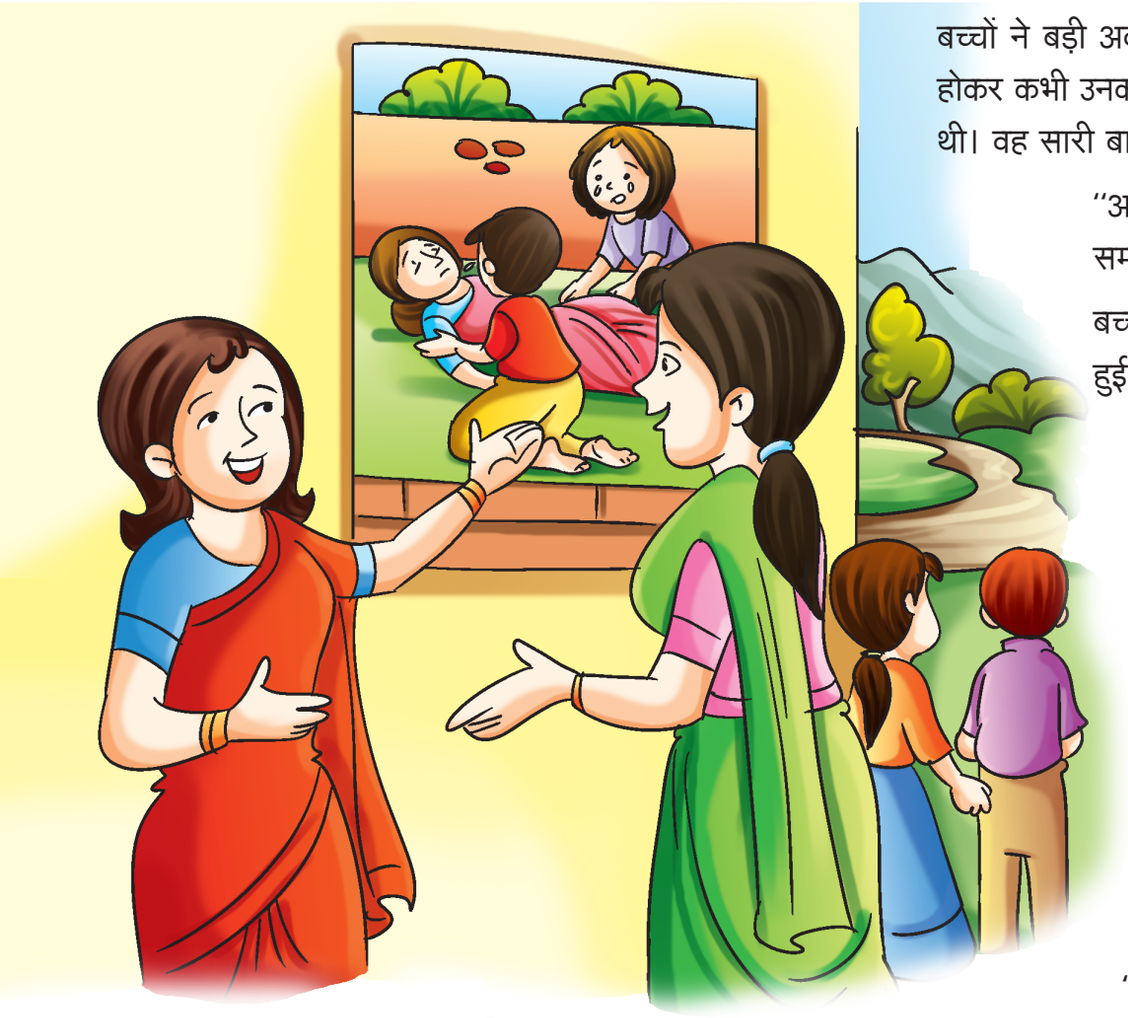

बच्चों ने बड़ी अदा से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक होकर कभी उनका और कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। वह सारी बात का तुक नहीं मिला पा रही थी।

"आप हमें सारी तसवीरें दिखाइए मौसी, समझा-समझाकर।"

बच्चे ने फ़रमाइश की। चित्रा समझाती हुई तसवीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तसवीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, "यही वह तसवीर है रूनी, जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धि दी।"

"ये बच्चे रो क्यों रहे हैं, मौसी?" तसवीर को ध्यान से देखकर बालिका ने कहा।

"इनकी माँ मर गई है, इतना भी नहीं समझती।" बालक ने मौका पाते ही अपने बड़प्पन की छाप लगाई।

"हाय राम! इनकी माँ मर गई तो फिर इन बच्चों का क्या हुआ?" बालिका ने पूछा।

"मौसी, हमें ऐसी तसवीर नहीं, अच्छी-अच्छी तसवीरें दिखाओ, राजा-रानी की , परियों की....।" उस तसवीर को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो चुका था।

मौका मिलते ही चित्रा ने पूछा, "सच-सच बता, रूनी! ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं?"

एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा, "बता दूँ?" और फिर उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, "ये ही वे दोनों बच्चे हैं।"

"क्या...!" विस्मय से चित्रा की आँखें फैली-की-फैली रह गईं।

"क्या सोच रही है, चित्रा?"

"कुछ नहीं– मैं सोच रही थी कि..." पर शब्द शायद उसके विचारों में ही खो गए।

शब्द-अर्थ

कन्फ्यूज़न — असमंजस		प्रतीक — चिह्न	
प्रतीक्षा — इंतज़ार		ढिंढोरा पीटना — प्रचार करना	
आयोजन — प्रबंध		बंधन — सीमा	
मेस — हॉस्टल की रसोई		निरर्थक — बिना किसी अर्थ के	
निर्जीव — मृत, अचेतन		सामर्थ्य — क्षमता	
ब्याह — विवाह		ढाँचा — बनावट	
दिनचर्या — नित्य किए जाने वाले कार्य		कायल — तर्क से सहमत	
इम्तिहान — परीक्षा		स्वयंसेवक — अपनी इच्छा से कार्य करने वाला	
अनुमति — इजाज़त		स्केच — खाका, रूपरेखा	
ईर्ष्या — जलन		प्रदर्शनी — नुमाइश	
शोहरत — ख्याति		उपस्थिति — मौजूदगी	
उद्घाटन — औपचारिक प्रारंभ		बड़प्पन — बड़े होने का भाव	
फ़रमाइश — माँग			
विस्मय — हैरानी			

अभ्यास

मौखिक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–**

(क) चित्रा ने अरुणा को क्यों जगाया?

(ख) चित्र देखकर अरुणा को क्या समझ नहीं आ रहा था?

(ग) बच्चे अरुणा की प्रतीक्षा क्यों कर रहे थे?

(घ) अरुणा पर हॉस्टल में लौटने का कोई बंधन क्यों नहीं था?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) चित्रा ने अरुणा को उठाकर क्या दिखाया?

☐ एलबम ☐ चित्र ☐ पेड़ ☐ चिड़ियाँ

(ख) मैदान में क्या था?

☐ मैच चल रहा था ☐ चित्रकला प्रतियोगिता हो रही थी

☐ मदारी आया था ☐ पाठशाला थी

(ग) चित्रा के लिए किसकी चिट्ठी आई थी?

☐ पिता की ☐ भाई की ☐ मनोज की ☐ मनोहर की

(घ) चित्रा और अरुणा कितने वर्ष से एक साथ थीं?

☐ दो ☐ तीन ☐ पाँच ☐ छह

2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(क) ''चित्रों को देखकर उसका मन जाने कैसा-कैसा हो आया।''— क्यों? विस्तार से समझाइए।

(ख) चित्रा को गुरु जी के घर से आने में देर क्यों हो गई?

(ग) अरुणा चित्रा को छोड़ने स्टेशन क्यों नहीं आई?

(घ) दिल्ली की चित्र प्रदर्शनी में क्या हुआ?

भाषा-ज्ञान

1. 'कि' अथवा 'क्योंकि' संयोजक द्वारा वाक्य बनाइए।

तुझसे हज़ार बार कहा	कि	हमारी मित्र साहिबा समाज सेविका थीं।
चित्रा बहुत प्रसन्न थी	क्योंकि	यह किसका प्रतीक है।
ज़रा सोचकर बता		वह भिखारिन का चित्र बनाने लगी थी।
चित्रा को देर हो गई		चित्र पर नाम लिख दिया कर।
लोगों को दिखाएँगे		वह विदेश जा रही थी।

2. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–

(i) **सकर्मक क्रिया** – क्रिया के कार्य का फल जब कर्म पर पड़ता है ता उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

(ii) **अकर्मक क्रिया** – क्रिया के कार्य का फल जब सीधे कर्ता पर पड़ता है तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ छाँटिए।**

(क) मेरा चित्र पूरा हो गया। _____

(ख) तुमने चित्र में खिचड़ी पकाकर रख दी। _____

(ग) बच्चे रो रहे हैं। _____

(घ) उसका स्वर दु:ख में डूब गया। _____

(ङ) वह उन्हीं में खोई बैठी रही। _____

(च) अरुणा चंदा इकट्ठा कर रही थी। _____

(छ) चित्रा अरुणा के गले से लिपट गई। _____

(ज) कुछ ऐसा हो गया कि रुकना ही पड़ा। _____

3. वाक्यों में प्रयुक्त रंगीन शब्दों के लिंग बताइए।

(क) यह चित्र किसका प्रतीक है? — _____

(ख) इसमें तो सबकी खिचड़ी पक गई है। — _____

(ग) एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। — _____

(घ) उसका खाना मेज़ पर रख दिया था। — _____

(ङ) तीन दिन से मूसलाधार वर्षा हो रही थी। — _____

4. पाठ में प्रयुक्त शब्दों की वर्तनी के पुराने और नए रूप देखिए।

पुराना रूप	प्रसिद्धि	चिट्ठी	इकट्ठा	उद्देश्य
नया रूप	प्रसिद्धि	चिट्ठी	इकट्ठा	उद्देश्य

नीचे दिए वर्तनी के पुराने रूप के शब्दों को गए रूप में बदलकर लिखिए।

(क) उत्तर — _____ (ख) विद्या — _____

(ग) कट्टर — _____ (घ) समृद्ध — _____

(ङ) बुद्धि — _____ (च) वृद्धि — _____

क्रियात्मक गतिविधि

(क) किसी समाजसेवक/समाजसेविका पर एक प्रस्तुतीकरण बनाइए।

(ख) अपने क्षेत्र के गरीब बच्चों को एकत्र कर साक्षरता-अभियान चलाइए।

(ग) अपने अनावश्यक कपड़े, खिलौने, पुस्तकें आदि एकत्र करके झुग्गी झोपड़ियों में देकर आइए।

(घ) अगर आप किसी चित्र की दुकान से कोई चित्र खरीदने जाते हैं तो आपमें और दुकानदार में क्या बातचीत होगी? अपने साथी की मदद से इस बातचीत को कक्षा में संवाद रूप में प्रस्तुत कीजिए। आप ग्राहक हैं एवं आपका सहपाठी दुकानदार। वार्तालाप के मुख्य बिंदु हैं—।

- चित्र की विशेषता
- उसका मूल्य
- उसका रंग-रूप
- उसका रख-रखाव

(ङ) चित्रा और अरुणा में से आपको किसका व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली लगा और क्यों? लिखिए।

(च) अपने शहर में लगी किसी चित्रकला प्रदर्शनी को देखने जाइए और उस पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

(छ) प्रसिद्ध चित्रकारों के चित्र, नाम एवं जानकारियाँ एकत्र कर एक स्क्रैप बुक बनाइए।

(ज) अपने विद्यालय में एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

(झ) मन्नू भंडारी का जीवन-परिचय लिखकर उनके द्वारा रचित कहानियों की सूची बनाइए।

आदर्श प्रश्न-पत्र-1 (Model Test Paper)-1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) समय को गतिवान क्यों कहा गया है?

(ख) गाजर को मेजों पर स्थान क्यों मिलने लगा है?

(ग) रानी ने दोनों ठगो को कैसे सबक सिखाया?

(घ) कुतुब मीनार किस रंग के पत्थरों से बनी है?

(ङ) चेतक क्या कौशल दिखलाता था?

(च) नीलू ने खरगोशों की जान कैसे बचाई?

(छ) अभ्यारण्य किसे कहते हैं?

(ज) पेड़ ने कौन-सा झूठा श्रेय नहीं लिया?

2. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) बौद्ध भिक्षुओं के उपासना गृह को क्या कहा जाता है?

☐ मठ ☐ विहार ☐ चैत्य

(ख) राजा का स्वभाव कैसा था?

☐ धूर्त ☐ लालची ☐ अहंकारी

(ग) कुतुब मीनार में ऊपर तक पहुँचने के लिए कितनी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं?

☐ 359 ☐ 369 ☐ 379

(घ) चेतक में निरालापन आया था—

☐ रण के बीच ☐ जन्म से ही

(ङ) राजस्थान की जलवायु है—

☐ उष्ण कटिबंधीय जलवायु ☐ विषम जलवायु ☐ शीतोष्ण जलवायु

(च) राजस्थान का राज्यपक्षी है—

☐ मोर ☐ बतख ☐ गोडावण

(छ) पेड़ क्या नहीं लेना चाहता?

☐ झूठा आश्रय ☐ धन संपदा ☐ खाद-पानी

3. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) अनहोनी को भाँप उठा।

(ख) जागे जन-जन
ज्योर्तिमय हो दिन का क्षण-क्षण

(ग) यह यहीं रहा, अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, है वहाँ नहीं।

4. विलोम शब्द लिखिए–

(क) सुस्त — _____ (ख) शिक्षिका — _____ (ग) दुर्गति — _____

(घ) झूठा — _____ (ङ) उदय — _____ (च) ऊँचा — _____

(छ) विनम्रता — _____ (ज) शिखर — _____ (झ) सहयोग — _____

5. पयार्यवाची लिखिए–

(क) निगाह — _____ _____

(ख) आरंभ — _____ _____

(ग) उद्यान — _____ _____

(घ) धरती — _____ _____

(ङ) पक्षी — _____ _____

(च) पशु — _____ _____

6. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) जो व्याकुल न हो — _____

(ख) इतिहास का ज्ञाता — _____

(ग) भूगोल से संबंधित — _____

(घ) सात दिनों का समूह — _____

(ङ) छह महीनों में होने वाला — _____

क्रियात्मक गतिविधि

- राजस्थान के सभी राष्ट्रीय अभ्यारण्यों की सूची बनाइए।

आदर्श प्रश्न-पत्र-2 (Model Test Paper)-2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) रमन को कौन-से सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किया गया और क्यों?

(ख) कोणार्क का क्या अर्थ है?

(ग) पंडित रामप्रसाद बिस्मिल कौन थे? उनका जन्म कहाँ हुआ था?

(घ) कवयित्री ने भारत को दीन क्यों कहा?

(ङ) रास्ते में लेखक ने क्या-क्या देखा?

(च) रानी ने रामचंद्र देशमुख को क्या आदेश दिया?

(छ) रंतिदेव को तीनों याचकों ने क्या आशीर्वाद दिया?

(ज) सोना की कथा का करुण अंत कैसे हुआ?

2. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) सी॰ वी॰ रमन की माता का क्या नाम था?

☐ सुशीला अय्यर ☐ पार्वती देवी ☐ महिमा चौधरी

☐ सुशीला देवी

(ख) समय का चक्र किसके द्वारा संचालित है?

☐ चंद्रमा ☐ पृथ्वी ☐ सूर्य

(ग) श्रीनगर का सबसे ऊँचा स्थान–

☐ श्री शंकराचार्य पहाड़ी है। ☐ श्री अमरनाथ पहाड़ी है। ☐ ग्वालियरी सेना

(घ) स्वामी और सेवक का अंतर कौन जानता है?

☐ हिरन ☐ कुत्ता ☐ बिल्ली

☐ ये सभी

(ङ) राजा सदैव किसके हित का ध्यान रखते थे?

☐ प्रजा के ☐ रानी के ☐ महलवालों के

3. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) वे देव, वे देवी नहीं।

(ख) बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।।

(ग) प्रभाती पवन में चुभन भरी शीतलता थी।

4. रिक्त स्थान भरिए–

(क) बिस्मिल भैया की महतारी _____ पहनती थीं।

(ख) काली मंदिर के सामने एक गेट बना है जिस पर _____ लिखा है।

(ग) कश्मीर को पृथ्वी का _____ कहा गया है।

(घ) कश्मीर की राजधानी _____ है।

(ङ) रन्तिदेव एक _____ थे।

5. मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) धुन सवार होना — _____

(ख) त्राहि-त्राहि करना — _____

(ग) याचना करना — _____

6. पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) रवि — _____ _____

(ख) जननी — _____ _____

(ग) प्रभु — _____ _____

(घ) विश्व — _____ _____

(ङ) बिजली — _____ _____

(च) नभ — _____ _____

7. वाक्यांश के लिए एक शब्द–

(क) जिसके आने की तिथि न हो — _____

(ख) अबोध शिशु की अवस्था — _____

(ग) जहाँ छात्र-छात्राएँ निवास करें — _____

(घ) जिसकी इच्छा न हो — _____

(ङ) जिसका रंग सोने जैसा हो — _____

क्रियात्मक गतिविधि

- **कश्मीर को भारत का स्वर्ग क्यों कहा गया है, विस्तृत रूप से बताइए।**